विशद
जिनवाणी संग्रह

(ZB© nyOm, AmaVr, Mmbrgm, ñVmoÌ H$m {deof g§J«h)

› õt {OZ_wImoX²^yV gañdVr Xoì`¡ Z_…

aM{`Vm/g§H$bZ

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद जिनवाणी संग्रह**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी, क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

14016566

ा जैनपुरी
416882301

(म.डी.)
ार जैन

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट** , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

कृति - विशद जिनवाणी संग्रह

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी, क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 101/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य : -

श्री राजकुमारजी जैन ध.प. श्रीमती उषारानी जैन
सुपुत्र-संजय जैन, अजय जैन, रेणु जैन, बबीता जैन, सरस, दिव्य, श्रेयांश
58010, सन्नी विहार, दिल्ली

श्रीमती रेखा जैन ध.प. श्री अरुण कुमारजी जैन
पुत्र-सत्यम जैन, पुत्री-अवनी जैन
'महेश भवन', जवाहर पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92

श्रीमती अनिता जैन ध.प. श्री सुशीलकुमार जी जैन (तिजारा वाले)
ए-316, शास्त्री नगर, दिल्ली-52

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

विशद भावना

ये जिनेन्द्र ना पश्यन्ति पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवतं तेषां, धिक्श्च गृहाश्रमम्।।प.प.

जो वीतरागी जिनेन्द्र प्रभु के दर्शन नहीं करते, ना ही जिनपूजा करते हैं, ना स्तवन करते हैं उनका गृहस्थाश्रम व्यर्थ है। उनका जीवन धिक्कार है।

तीर्थंकर की दिव्य देशना में दो प्रकार का धर्म निरूपित किया गया है- (1) श्रमण धर्म, (2) श्रावक धर्म। श्रमण धर्म का कार्य है ज्ञान-ध्यान-तप में लीनता और श्रावक धर्म का कार्य है-दान और पूजा। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने तो रयणसार में स्पष्ट कह दिया है यदि अपना कर्त्तव्य नहीं करते तो ना तो श्रमण, श्रमण हो सकते हैं और ना श्रावक, श्रावक हो सकते हैं।

दाणं पूया मुक्खं सावय धम्मो ना तेण विणा।
झाण झयणं मुक्खं मुणि धम्मो तेण विणा सो वि।।

श्रावक के षडावश्यक में देव पूजा को प्रथम स्थान पर रखा गया है और यहाँ तक कह दिया है कि एकमात्र देवपूजा में छहों आवश्यक पूर्ण हो जाते हैं।

देवपूजा गुरु उपास्ति स्वाध्याय संयमस्तपः।
दानश्चेति गृहस्थाणां षट् कर्माणि दिने-दिने।।

देवपूजा तो प्रथम कर्त्तव्य है उसमें देव-शास्त्र-गुरु पूजा करने में गुरूपासना हो जाती है। पूजा के काव्यों का चिंतन करने से स्वाध्याय हो जाता है तथा जितनी देर पूजा करते हैं तब कुछ भी खाना-पीना नहीं होने से संयम का पालन होता है तथा कुछ भी इच्छा का अभाव होने से तप का पालन हो जाता है। जिनेन्द्र भक्ति वह अमृत है जो जीव को अजर-अमर बना देता है। जिनपूजा भक्ति मार्ग का प्रथम सोपान है। शास्त्रों में कहा गया है कि सौधर्म इन्द्र एक भवातारी होता है, वह कौनसा तप करता है? तब उत्तर प्राप्त होता है कि सौधर्म इन्द्र तीर्थंकर की भक्ति में इस प्रकार तत्पर रहता है कि अपनी सुधि भूल जाता है। यही भक्ति का फल उसे एक भवातारी बना देता है, अतः सभी श्रद्धालु भक्तों को चाहिए कि वह नित्य निरन्तर भगवान जिनेन्द्र की पूजा अर्चा करके अपना जीवन सफल बनाएँ और विशद शिवपथ के राही बनें। इस पुस्तक में नई पूजाओं का एवं पद्यानुवाद किए गये स्तोत्रों का अनूठा संग्रह है जिससे महानुभाव अवश्य लाभ लें।

-आचार्य विशदसागर

~

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्रथम खण्ड	
01	श्री चौबीस तीर्थंकर परिचय	9
02	दर्शन पाठ (हिन्दी/संस्कृत)	11
03	देव स्तुति (प्रभु पतित...)	13
04	मंगलाष्टक (हिन्दी/संस्कृत)	14
05	झण्डारोहण/दिग्बंधन	18
06	अंगन्यास	19
07	सिद्ध मंत्र/ सिद्ध भक्ति (प्राकृत)	23
08	अभिषेक पाठ (संस्कृत/हिन्दी)	24
09	वृहद् शांतिधारा	29
10	अभिषेक समय की आरती	32
11	विनय पाठ, मंगल पाठ	33-34
12	पूजा पीठिका (संस्कृत/हिन्दी)	35
13	स्वस्ति मंगल विधान	40
14	देव-शास्त्र-गुरु पूजन	43
15	अर्घ्यावली	47
16.	समुच्चय महा-अर्घ्य	54
16	शांतिपाठ, विसर्जन	55-56
	द्वितीय खण्ड (पूजन)	
01	देव-शास्त्र-गुरु पूजन	57
02	श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन	62
03	श्री नवदेवता पूजन	66
04	मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	71
05	श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन	76
06	विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन	80
07	पंच बालयति जिन पूजा	84
08	श्री बाहुबली पूजा	89
09	श्री रविव्रत पूजा	94
10	महामंत्र णमोकार पूजा	98
11	सहस्रनाम पूजन	102
12	तत्त्वार्थसूत्र पूजन	106
13	भक्तामर पूजन	110
14	सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चौबीसी पूजन	113
15	सरस्वती पूजा (जिनवाणी पूजा)	118
16	समुच्चय मानस्तम्भ पूजा	123
17	श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ पूजा	127
18	निर्वाण क्षेत्र पूजन	133
19	श्री अरहंत पूजा	137
20	श्री सिद्ध पूजा	141
21	आचार्य परमेष्ठी की पूजन	145
22	उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन	149
23	सर्व साधु पूजन	153
24	श्री सिद्ध यंत्र पूजा (विनायक यंत्र)	157
25	श्री सम्मेदशिखर पूजन	165

क्र.सं. विवरण पृष्ठ संख्या

तृतीय खण्ड (पूजन)

01 श्री आदिनाथ जिन पूजा 177
02 श्री अजितनाथ पूजा 182
03 श्री संभवनाथ पूजा 187
04 श्री अभिनन्दननाथ पूजा 192
05 श्री सुमतिनाथ पूजा 197
06 श्री पद्मप्रभु पूजा 202
07 श्री सुपार्श्वनाथ पूजा 207
08 श्री चन्द्रप्रभु पूजा 212
09 श्री पुष्पदन्त पूजा 217
10 श्री शीतलनाथ पूजा 222
11 श्री श्रेयांसनाथ पूजा 227
12 श्री वासुपूज्य पूजा 232
13 श्री विमलनाथ जिन पूजा 237
14 श्री अनन्तनाथ जिन पूजा 242
15 श्री धर्मनाथ जिन पूजा 247
16 श्री शांतिनाथ पूजा 252
17 श्री कुंथुनाथ जिन पूजा 257
18 श्री अरहनाथ जिन पूजा 262
19 श्री मल्लिनाथ जिन पूजा 267
20 श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा 272
21 श्री नमिनाथ जिन पूजा 276
22 श्री नेमिनाथ जिन पूजा 281
23 श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा 286
24 श्री महावीर स्वामी जिन पूजा 291

चतुर्थ खण्ड (पर्व पूजन)

01 सोलहकारण भावना पूजा 296
02. त्रिलोक अकृत्रिम जिनालय पूजा 303
03 पंचमेरु पूजा 308
04 श्री नंदीश्वर द्वीप पूजा 312
05 दशलक्षण पूजा 316
06 रत्नत्रय पूजा 321
07 सम्यक् दर्शन पूजा 324
08 सम्यक् ज्ञान पूजा 327
09 सम्यक् चारित्र पूजा 330
10 क्षमावाणी पूजा 335
11 रक्षाबंधन पर्व पूजा 340
12 दीपावली पूजा 345
13 गौतम गणधर मुनि पूजन 352
14 सुगंध दशमी व्रत पूजा 356
15 श्रुत पञ्चमी पर्व पूजा 360
16 अक्षय तृतीया पर्व पूजा 364
17 मोक्ष सप्तमी पर्व पूजा 368
18 सप्तऋषि पूजा 372
19 रोहिणी व्रत 376
20 जिनगुण सम्पत्ति व्रत पूजा 381
21 ऋषिमण्डल समुच्चय पूजा 385
22 अनन्त व्रत पूजा 389
23 प.पू. आचार्यश्री विशदसागरजी की पूजन 393

पंचम खण्ड (चालीसा)

01 श्री सिद्धचक्र चालीसा 397
02 श्री णमोकार चालीसा 399
03 श्री आदिनाथ चालीसा 401
04 श्री अजितनाथ चालीसा 403
05 श्री सम्भवनाथ चालीसा 405
06 श्री अभिनन्दननाथ चालीसा 407

क्र.सं. विवरण पृष्ठ संख्या

07 श्री सुमतिनाथ चालीसा 409
08 श्री पद्मप्रभु चालीसा 411
09 श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा 413
10 श्री चन्द्रप्रभु चालीसा 415
11 श्री पुष्पदन्त चालीसा 417
12 श्री शीतलनाथ चालीसा 419
13 श्री श्रेयांसनाथ चालीसा 421
14 श्री वासुपूज्य चालीसा 423
15 श्री विमलनाथ चालीसा 425
16 श्री अनन्तनाथ चालीसा 427
17 श्री धर्मनाथ चालीसा 429
18 श्री शांतिनाथ चालीसा 431
19 श्री कुन्थुनाथ चालीसा 433
20 श्री अरहनाथ चालीसा 435
21 श्री मल्लिनाथ चालीसा 437
22 श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा 439
23 श्री नमिनाथ चालीसा 441
24 श्री नेमीनाथ चालीसा 443
25 श्री पार्श्वनाथ चालीसा 445
26 श्री महावीर चालीसा 448
27 श्री चौबीस तीर्थंकर चालीसा 450
28 श्री बाहुबली चालीसा 452
29 श्री गिरनारजी चालीसा 454
30 श्री सम्मेदशिखर चालीसा 456
31 श्री भक्तामर चालीसा 458
32 श्री महामृत्युञ्जय चालीसा 461
33 श्री नवग्रह शांति चालीसा 463
34 श्री जिनवाणी चालीसा 465
35 श्री सहस्रनाम चालीसा 467
36 आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा 469

षष्ठम खण्ड (स्तोत्र)

01 श्री उपसग्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्र 471
02 सुप्रभात स्तोत्र (भाषा) 472
03 श्री महावीराष्टक स्तोत्रम् 474
04 श्री महावीराष्टक स्तोत्र (भाषा) 475
05 भक्तामर स्तोत्रम् 477
06 भक्तामर स्तोत्र (भाषा) 485
07 तत्त्वार्थसूत्र 493
08 श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्रम् 506
09 कल्याण मंदिर स्तोत्र भाषा 520
10 एकीभाव स्तोत्र भाषा 527
11 विषापहार स्तोत्र भाषा 531
12 ऋषिमण्डल स्तोत्र भाषा 538
13 नवदेवता स्तोत्र भाषा 546
14 अथ नवग्रह शांति स्तोत्र 548
15 श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र भाषा 549
16 श्री सरस्वती स्तोत्र भाषा 550
17 श्री सरस्वती नाम स्तोत्र भाषा 551
18 चैत्यालयाष्टक भाषा 552
19 आद्याष्टक स्तोत्र भाषा 554
20 करुणाष्टक भाषा 556
21 जिनाष्टक भाषा 557
22 आध्यात्म शयन गीतिका भाषा 559

सप्तम खण्ड (अन्य)

01 दर्शन स्तुति 561
02 दर्शन पाठ भाषा 563
03 स्तुति 564
04 गुरु स्तुति 565
05 गोमटेश स्तुति 566

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
06	निर्वाण काण्ड भाषा	567
07	मेरी भावना	571
09	सोलहकारण भावना	573
09	बारह भावना	579–584
10	वैराग्य भावना	585
11	आलोचना पाठ	588
12	सामायिक पाठ	591
13	समाधिमरण (भाषा)	596
14	दुखहरण विनती	598
15	लघु प्रतिक्रमण	600
16	क्षमा वंदना	602
17	आचार्य वंदना	603
18	जाप्य मन्त्र	606
19	शास्त्र स्तुति	610

अष्टम खण्ड (आरती)

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
01	णमोकार मंत्र की आरती	611
02	पंच परमेष्ठी की आरती	612
03	सहस्त्रनाम की आरती	613
04	नवदेवताओं की आरती	613
05	चौबीस जिन की आरती	614
06	श्री आदिनाथ की आरती	615
07	श्री अजितनाथ की आरती	615
08	श्री संभवनाथ की आरती	616
09	श्री अभिनन्दन की आरती	616
10	श्री सुमतिनाथ की आरती	617
11	श्री पद्मप्रभ की आरती	618
12	श्री सुपार्श्वनाथ की आरती	618
13	श्री चन्द्रप्रभु की आरती	619
14	श्री पुष्पदंत भगवान की आरती	620
15	श्री शीतलनाथ की आरती	621
16	श्री श्रेयांसनाथ की आरती	622
17	श्री वासुपूज्य की आरती	622
18	श्री विमलनाथ की आरती	623
19	श्री अनन्तनाथ की आरती	624
20	श्री धर्मनाथ की आरती	624
21	श्री शांतिनाथ की आरती	625
22	श्री कुन्थुनाथ की आरती	626
23	श्री अरहनाथ की आरती	626
24	श्री मल्लिनाथ की आरती	627
25	श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती	628
26	श्री नमिनाथ की आरती	628
27	श्री नेमिनाथ की आरती	629
28	श्री पार्श्वनाथ की आरती	629
29	श्री महावीर की आरती	630
30	समवशरण की आरती	631
31	चौबीस तीर्थंकर की आरती (ग्रह निवारक)	631
32	जिनवर की आरती	632
33	बाहुबली स्वामी की आरती	633
34	निर्वाण क्षेत्र (सम्मेदशिखर) की आरती	634
35	पञ्चमेरु की आरती	634
36	विद्यमान बीस तीर्थंकर की आरती	635
37	नन्दीश्वर की आरती	636
38	पंच बालयति जिन की आरती	636
39	ऋषिमण्डल यंत्र आरती	637
40	जिनवाणी की आरती	638
41	विनायक यंत्र की आरती	638
42	गुरुवर की आरती	639
43	आचार्य श्री विशदसागरजी की आरती	640

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय

पूर्व नाम	– रमेशचन्द जैन
पिता का नाम	– स्व. श्री नाथूराम जैन
माता का नाम	– श्रीमती इन्दरदेवी जैन
जन्म तिथि	– चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, शनिवार, 11 अप्रैल, 1964
जन्म स्थान	– ग्राम–कुपी, जिला–छतरपुर (मध्यप्रदेश)
लौकिक शिक्षा	– एम.ए. पूर्वार्ध
संयम मार्ग पर प्रवेश	– प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज से सन् 1993 में श्री सम्मेदशिखरजी में 2 प्रतिमा के व्रत धारण किये
ऐलक दीक्षा	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज से मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर, 1993 में
दीक्षा स्थान	– अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (पन्ना), मध्यप्रदेश
मुनि दीक्षा	– फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी, दिनांक 8 फरवरी, 1996
दीक्षा स्थान	– सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी (छतरपुर)
मुनि दीक्षा गुरु	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज
आचार्य पद	– बसंत पंचमी, दिनांक 13 फरवरी, 2005 मालपुरा, जिला–टोंक (राज.)
आचार्य पद प्रदाता	– प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज
रूचि	– ध्यान, चिंतन, मनन, लेखन कार्य, 80 विधान के रचयिता
विशेष	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 श्री भरतसागरजी महाराज ने 27 पिच्छीधारियों त्यागी–व्रतियों के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 13 फरवरी, 2005 को मालपुरा, जिला–टोंक (राज.) की धरती पर भारी जन–समुदाय की उपस्थिति में मुनि श्री विशदसागरजी महाराज को अपने हाथों से आचार्य पद के योग्य संस्कारों से संस्कारित कर ''आचार्य पद'' पर सुशोभित किया व उसी समय नव–दीक्षित आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने एक मुनि व दो क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की।

विशद जिनवाणी संग्रह

श्री चौबीस तीर्थंकरों का विविध परिचय

क्र.	तीर्थंकरों के नाम	चिह्न	जन्म स्थान	काया	पितृ नाम	मातृ नाम	आयुष्य	गर्भ	जन्म	तप	केवलज्ञान	मोक्ष	मोक्ष स्थल
1.	वृषभनाथ	बैल	अयोध्या	500 धनुष्य	नाभिराजा	मरुदेवी	84 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 2	चैत्र वदी 9	चैत्र वदी 9	फाल्गुन वदी 11	माघ वदी 14	कैलाश पर्वत
2.	अजितनाथ	गज	अयोध्या	450 धनुष्य	जितशत्रु	विजयसेना	72 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 30	माघ सुदी 10	माघ सुदी 10	पौष सुदी 11	चैत्र सुदी 5	सम्मेदशिखर
3.	सम्भवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	400 धनुष्य	जितारी	सुसेना	60 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन सुदी 8	कार्तिक सुदी 15	आश्विन सुदी 15	कार्तिक वदी 4	चैत्र सुदी 6	सम्मेदशिखर
4.	अभिनन्दनाथ	बन्दर	अयोध्या	350 धनुष्य	संवर	सिद्धार्थ	50 लाख पूर्वायुष्य	वैसाख सुदी 6	माघ सुदी 12	माघ सुदी 12	पौष सुदी 14	वैशाख सुदी 6	सम्मेदशिखर
5.	सुमतिनाथ	चकवा	अयोध्या	300 धनुष्य	मेघप्रभु	मंगला	40 लाख पूर्वायुष्य	श्रावण सुदी 2	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	चैत्र सुदी 11	सम्मेदशिखर
6.	पद्मप्रभनाथ	कमल	कौशाम्बी	250 धनुष्य	धारण	सुशीमा	30 लाख पूर्वायुष्य	माघ वदी 6	कार्तिक सुदी 13	कार्तिक सुदी 13	चैत्र सुदी 15	फाल्गुन वदी 4	सम्मेदशिखर
7.	सुपार्श्वनाथ	साँथिया	बनारस	200 धनुष्य	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	20 लाख पूर्वायुष्य	भाद्रपद सुदी 6	ज्येष्ठ सुदी 12	ज्येष्ठ सुदी 12	फाल्गुन वदी 6	फाल्गुन वदी 7	सम्मेदशिखर
8.	चन्द्रप्रभनाथ	चन्द्रमा	चन्द्रपुरी	150 धनुष्य	महासेन	सुलक्षण	10 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 5	पौष वदी 11	पौष वदी 11	फाल्गुन वदी 7	फाल्गुन सुदी 7	सम्मेदशिखर
9.	पुष्पदन्तनाथ	मगर	काकन्दी	100 धनुष्य	सुग्रीव	रमा	2 लाख पूर्वायुष्य	फाल्गुन वदी 9	मगसिर सुदी 1	मगसिर सुदी 1	कार्तिक सुदी 2	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	महिलपुर	90 धनुष्य	दृढ़रथ	सुनन्दा	1 लाख पूर्वायुष्य	चैत्र वदी 8	माघ वदी 12	माघ वदी 12	पोष वदी 14	आश्विन सुदी 8	सम्मेदशिखर
11.	श्रेयांसनाथ	गेण्डा	सिंहपुर	80 धनुष्य	विमल	विमला	84 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 8	फाल्गुन वदी 11	फाल्गुन वदी 11	माघ वदी 30	श्रावण सुदी 15	सम्मेदशिखर
12.	वासुपूज्यनाथ	भैंसा	चम्पापुरी	70 धनुष्य	वसुपूज्य	विजया	72 लाख पूर्वायुष्य	आषाढ़ वदी 6	फाल्गुन वदी 14	फाल्गुन वदी 14	भादो सुदी 2	भादो सुदी 14	चम्पापुरी
13.	विमलनाथ	सूकर	कम्पिला	60 धनुष्य	सुव्रतवर्मा	श्यामा	60 लाख पूर्वायुष्य	ज्येष्ठ वदी 10	माघ सुदी 4	माघ सुदी 4	माघ सुदी 6	आषाढ़ वदी 6	सम्मेदशिखर
14.	अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	50 धनुष्य	हरिषेण	सुरजा	50 लाख पूर्वायुष्य	कार्तिक वदी 1	ज्येष्ठ वदी 12	ज्येष्ठ वदी 12	चैत्र वदी 30	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
15.	धर्मनाथ	वज्र	रत्नपुर	45 धनुष्य	भानु	सुव्रता	10 लाख पूर्वायुष्य	वैसाख सुदी 8	माघ सुदी 13	माघ सुदी 13	पौष सुदी 15	ज्येष्ठ सुदी 4	सम्मेदशिखर
16.	शान्तिनाथ	हिरण	हस्तिनापुर	40 धनुष्य	विश्वसेन	ऐरा	1 लाख पूर्वायुष्य	भाद्र सुदी 7	ज्येष्ठ वदी 14	ज्येष्ठ वदी 14	पौष सुदी 10	ज्येष्ठ वदी 14	सम्मेदशिखर
17.	कुन्थुनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	35 धनुष्य	शूरराजा	श्रीमती	95 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 10	वैशाख सुदी 1	वैशाख सुदी 1	चैत्र सुदी 3	वैशाख सुदी 1	सम्मेदशिखर
18.	अरनाथ	मच्छ	हस्तिनापुर	30 धनुष्य	सुदर्शन	मित्रा	80 हजार वर्षायुष्य	फाल्गुन सुदी 3	मगसिर सुदी 14	मगसिर सुदी 10	कार्तिक सुदी 12	चैत्र वदी 30	सम्मेदशिखर
19.	मल्लिनाथ	कलश	मिथिला	25 धनुष्य	कुंभ	प्रजावती	55 हजार वर्षायुष्य	चैत्र सुदी 1	मगसिर सुदी 11	मगसिर सुदी 11	पौष सुदी 2	फाल्गुन सुदी 5	सम्मेदशिखर
20.	मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ	राजगृह	20 धनुष्य	सुमित्र	श्यामा	30 हजार वर्षायुष्य	श्रावण वदी 2	वैशाख वदी 10	वैशाख वदी 10	वैशाख वदी 9	फाल्गुन वदी 12	सम्मेदशिखर
21.	नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	15 धनुष्य	विजयरथ	विपुला	10 हजार वर्षायुष्य	आश्विन वदी 2	आषाढ़ वदी 10	आषाढ़ वदी 10	मगसिर सुदी 11	वैशाख वदी 14	सम्मेदशिखर
22.	नेमिनाथ	शंख	शौरीपुर	10 धनुष्य	समुद्रविजय	शिवादेवी	1 हजार वर्षायुष्य	कार्तिक सुदी 6	श्रावण सुदी 6	श्रावण सुदी 6	आश्विन सुदी 1	आषाढ़ सुदी 8	गिरनार पर्वत
23.	पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	9 हाथ	अश्वसेन	वामादेवी	100 वर्षायुष्य	वैशाख वदी 2	पौष वदी 11	पौष वदी 11	चैत्र वदी 4	श्रावण सुदी 7	सम्मेदशिखर
24.	महावीर	सिंह	कुण्डलपुर	7 हाथ	सिद्धार्थ	त्रिशला	72 वर्षायुष्य	आषाढ़ सुदी 6	चैत्र सुदी 13	मगसिर वदी 10	वैशाख सुदी 10	कार्तिक सुदी 10	पावापुरी

नोट–24 तीर्थंकरों की पंचकल्याणक तिथियों पर पूजन–मण्डल विधान कर अथाह पुण्यार्जन करें–**विशाल सागर**

रचियता कविवर श्री वृंदावनजी को आधार माना गया है।

दर्शन पाठ

(तर्ज : दिन रात मेरे स्वामी...)

यह भावना हमारी, प्रभु दर्श तेरे पाऊँ।
पल–पल प्रसन्न मन से, नवकार मंत्र ध्याऊँ।।
चउ घातिया करम का, जिनने किया सफाया।
अपने हृदय कमल पर, अर्हंत को बसाऊँ।। यह भावना...

नो कर्म भाव द्रव्य से, जो मुक्त हो गये हैं।
उन शुद्ध सिद्ध जिन को, मैं शीश पर बिठाऊँ।। यह भावना...

आचार पाँच पालें, पालन कराएँ सबको।
आचार्य परम गुरु को, मैं कंठ में सजाऊँ।। यह भावना...

जो अंग पूर्वधारी, पढ़ते मुनि पढ़ाते।
मुख के कमल बिठाकर, उनके गुणों को गाऊँ।। यह भावना...

सद्ज्ञान ध्यान तप में, खोये सदैव रहते।
उन सर्वसाधुओं को, नाभि कमल में ध्याऊँ ।। यह भावना...

श्रद्धान, ज्ञान, चारित, सद्धर्म ये रतन हैं।
अहिंसा मयी धरम के, धारण में लौ लगाऊँ।। यह भावना...

वाणी जिनेन्द्र की शुभ, हितकारणी कही है।
जिनदेव की सुवाणी करके, श्रवण कराऊँ।। यह भावना...

जिन का स्वरूप जिनके, प्रतिबिम्ब में झलकता।
जिन तीर्थ वंदना कर, नित चैत्य दर्श पाऊँ।। यह भावना...

त्रैलोक्य में विराजित, जिन चैत्य अरु जिनालय।
तन, मन 'विशद' वचन से, मैं वंदना को जाऊँ।। यह भावना...

दर्शन पाठ

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।।
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न तिष्ठति चिरं पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।।
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
नैकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्तनाशनम्।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनम्।।
दर्शनं जिन चन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणम्।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धनं सुखवारिधेः।।
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय, सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्या भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।
नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात् परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।
जिनेभक्तिर्जिनेभक्ति, र्जिनेभक्ति र्दिनेदिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे भवे।।
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भूवं चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपिदरिद्रोऽपि, जिन धर्मानुवासितः।।
जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम्।
जन्ममृत्युजरारोगो, हन्यते जिनदर्शनात्।।

अद्या- भवत् सफलता नयन- द्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज- वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक- तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार- वारिधि- रयं चुलुक- प्रमाणम्।।

देव स्तुति

प्रभु पतित पावन-मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरण जी।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान-धन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो।।

धन घड़ी यों धन दिवस, यों धन्य जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।।

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरै।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।

दो हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण तरण जी।।

जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाँचहूँ तुम भक्ति भव भव, दीजिये शिव नाथ जी।।

मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र - महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्रीसिद्धान्त - सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु (ते) वो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र - सुरा - सुरेन्द्र - मुकुट, प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरुवः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।2।।

नाभेयादि जिना:प्रशस्त-वदना, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्ः
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।3।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग - महानिमित्त - कुशलाश्, चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।4।।

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू शाल्मलि - चैत्य - शाखिषुतथा वक्षार - रूप्याद्रिषु।

इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम् ।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम् ।।6।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम् ।।7।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्य पुर प्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम् ।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य – संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि ।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

पञ्चाचार परायणः सुमुनयः रत्नत्रयाराधकः ।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन परः दश धर्म संराधकः ।।
समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमण, स्वाध्याय ध्यानः परः ।
आचार्या त्रय लोक पूजित पदः, वन्दे विशदसागरम् ।।

मंगलाष्टक

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी ।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी ।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी ।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ।।1।।
नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान् ।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान ।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी ।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ।।2।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी ।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी ।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी ।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ।।3।।
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव ।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव ।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी ।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ।।4।।
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव ।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता–पिता, यक्ष–यक्षी भी एव ।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी ।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी ।।5।।
सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार ।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार ।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।
आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।
तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन।।
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

झण्डारोहण

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु-कुरु हूँ फट् स्वाहा। (भूमि शुद्ध करें।)

ॐ अस्मिन् यज्ञ स्थाने स्थित देवगणाः आज्ञा प्रदानं कुर्युः विघ्न निवारणार्थं अत्र आगच्छ-आगच्छ। (फल भेंट करें।)

ॐ ह्रीं क्ष्रीं भूः स्वाहा। (जल से शुद्धि) (विनायक यंत्र पूजन करें)

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यम्। (अर्घ चढ़ावें)

ॐ परम ब्रह्मणे नमोनम: स्वस्ति स्वस्ति नंद नंद वर्धस्व वर्धस्व विजस्व विजस्व पुनीहि पुनीहि पुण्याह पुण्याह मांगल्यं मांगल्यं वर्धयेत् वर्धयेत् जय जय।

ॐ ह्रीं सर्वोषधिद्वारा ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीं नमोऽर्हते पवित्रजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्यामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा।
रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रये प्रकृत केवलबोधरूपम्।
संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सन् मंगल वाद्य घोषे।।

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शांतिर्भवतु स्वाहा तथा ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासन पताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

(पुष्प क्षेपण कर वाद्य घोष करते हुए परिक्रमा करें)

ध्वज गीत

(तर्ज- जन गन मन अधिनायक...)

तीन लोक अधिनायक जय हे, अर्हत् सिद्ध विधाता।
मोक्षमार्ग के अनुपम नायक, जग में शांति प्रदाता।।
गणधरादि तुम नमते, साधु चरण प्रणमते, हे मुक्ति पद दाता।
मण्डल की पूजा विधान में, पहले ध्वज फहराता।
जय हे - जय हे - जय हे - जय जय जय जय हे।। हे जग में शांति प्रदाता।।1।।

पञ्च रंग अथवा केसरिया, ध्वज अनुपम बनवाएँ।
स्वस्तिक चिह्न बनाकर उसमें, सुरभित पुष्प बंधाएँ।।
शुभ जैन ध्वजा फहराएँ, हम सादर शीश झुकाएँ, जो फहर फहर फहराता।
स्वस्तिक चिह्न सहित ध्वज को जग, सारा शीश झुकाता।। जय हे....।।2।।

पञ्च परम, परमेष्ठि जग में, मोक्ष मार्ग दर्शाते।
भवि जीवों से तीन लोक में, वह सब पूजे जाते।।
उनके गुण हम गाएँ, पद में शीश झुकाएँ, हे भविजन के त्राता।
विशद भाव से आज झुका है, ध्वज के आगे माथा।। जय हे....।।3।।

जल शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। (पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों के अंगूठों को जोड़कर मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की मध्यमा (बीच) की अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं, अनामिकाभ्यां नमः। यहाँ पर अपने दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः। यहाँ पर दोनों हाथों को कनिष्ठा अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः। यहाँ दोनों गदियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः। यहाँ पर दोनों हाथों की हथेलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम् शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से अपने सिर को स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम् वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम् हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम् नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम् पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर दाहिने हाथ से दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम् गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर अपने शरीर का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम् वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा। यहाँ पर अपने वस्त्रों का स्पर्श करना है।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम् पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा। अब अपनी पूजा की थाली का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम् स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा। अपने आसन को देखकर मार्जन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा। अपनी अंजली में जल लेकर चारों ओर फेंके।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

अब अपनी अंजली में जल लेकर अपने सिर पर छोड़ें।

तिलक करण मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत पराक्रमाय ते भवतु। यहाँ पर सभी नौ स्थानों पर चंदन लगाएँ- मस्तक, दोनों कान, दोनों भुजायें, दोनों कलाई, हृदय एवं नाभि पर।

दिग्बंधन मंत्र- ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पूर्व दिशा में पुष्प छोड़ें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। दक्षिण दिशा में सभी इन्द्र पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पश्चिम दिशा में सभी पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। उत्तर दिशा में सभी लोग पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब उर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसों क्षेपण करें।

परिणाम शुद्धि मंत्र

विधि विधातुं यजनोत्सवेऽगेहादिमूर्च्छामपनोद अनन्यचित्ता कृतिमादधामि स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि।

अब सभी लोग अपने-अपने गृहकार्यों को छोड़ दें। जब तक यह विधान चलेगा तब तक के लिए अपने गृह संबंधी सभी कार्यों से निवृत्ति होकर यह विधान करूँगा/करूँगी। मैं मन, वचन, काय से प्रतिज्ञा करता हूँ/करती हूँ।

रक्षा मंत्र

ॐ णमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

यहाँ पर पंडितजी सभी पात्रों पर पीली सरसों को सात बार मंत्रित करें।

शांति मंत्र

ॐ क्षूं हूँ फट किरीटिं किरीटिं घातक-घातक पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षं वः फट् स्वाहा।

पुष्प लेकर इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सभी पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ नमः परम शांताय शांति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय चिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यहाँ पर सभी पात्रों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनावें (शादी-शुदा को दो जनेऊ पहनावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्र शुद्धि मंत्र सर्वांग शुद्धिः भवतु।

यहाँ पर पात्रों पर जल छिड़ककर पात्रों की अंतिम शुद्धि करें।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगी फलादि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा। (कलश में अक्षतादि सामग्री रखें)

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विशद तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान कार्यर्थं। ...श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे,...पक्षे,....तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं इवीं इवीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापन मंत्र

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।
ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापन

स्थापनीयं वरं शास्त्रं, कुन्दकुन्दादि निर्मितं।
जैन तत्त्व प्रवोधाय, स्याद्वादेन विभूषितम्।।

ॐ ह्रीं मण्डलोपरि जिनशास्त्रं स्थापयामि।

सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुता दंसणेय पाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।
मूलोत्तर- पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणातीद संसारा।।
अट्ठ वियकम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।
सिद्धा णट्ठट्ठ मला विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे।।
गमणागमण विमुक्के विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते ते सिद्धा वंदियो णिच्चं।।
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं।।
सम्मत्त - णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।

इच्छामि भंते ! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गोकओ तस्सालोचेऊं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढ-लोयमत्थम्मि पयट्ठियाणं, तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होदु मज्झं।

(कायोत्सर्गं कुरु)

~

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र-मभि-वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद - नायक - मनन्त - चतुष्टयार्हम्।
श्री-मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैक - हेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाभ्य-धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य -संगत-मधुव्रत-झङ्कृतेन, संवर्ण्य-मान-मिव गंध-मनिन्द्य-मादौ।
आरोप-यामि विबु-धेश्वर-वृन्द-वन्द्य-पादारविन्द मभिवन्द्य जिनोत् - तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि-दिह दिव्य कुल प्रसूता, नागाः प्रभूत-बल-दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष-णार्थ-ममृतेन शुभेन तेषां, प्रक्षाल-यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरैर्–यदनेक– वारम्।
अत्युद्ध–मुद्यत–महं जिन–पादपीठं, प्रक्षाल–यामि भव–सम्भव– तापहारि।।5।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री– शारदा–सुमुख–निर्गत बीजवर्णं, श्रीमङ्गलीक– वर–सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य–विघ्नं, श्रीकार–वर्ण–लिखितं जिन–भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार– लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल– शिलागत– मादिदेव–मस्नापयन् सुरवराः सुर– शैल– मूर्ध्नि।
कल्याण–मीप्सु–रह–मक्षत–तोय–पुष्पैः, सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला–पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुख वाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल–वार्चित–मुखान् कलधौत–रौप्य–ताम्रार–कूट–घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गताश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन– वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण– कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी–संलग्न– रत्न– किरणच्छवि– धूस– राङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद– ताप– मल–मुक्तमपि प्रकृष्टैर्–भक्त्या जलै– र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि– वर्धमानपर्यन्तं– चतुर्विंशति–तीर्थंकर– परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...... देशे.. प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008.. जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे.. तिथौ... वासरे... पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका– श्रावक–श्राविकानां सकल–कर्म– क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै–र्मनोरथ–शतैरिव भव्य–पुंसां, पूर्णैः सुवर्ण–कलशै–र्निखिला– वसानैः।
संसार–सागर–विलंघन–हेतु–सेतु–माप्लावये त्रिभुवनैक–पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

अभिषेक मंत्रह ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

द्रव्यै–रनल्प–घनसार–चतुः समाद्यै–रामोद–वासित–समस्त–दिगन्तरालैः।
मिश्री–कृतेन पयसा जिन–पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं .... सुगन्धित जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अभिषेक पाठ भाषा

–आचार्य विशदसागरजी

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन .... महंयजे।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका–श्रावक–श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

उदक चन्दन .... महंयजे।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन .... महंयजे।

इत्याशीर्वादः

अथ वृहद् शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं मम पापं खण्डय खण्डय जहि–जहि दह–दह पच–पच पाचय पाचय। ॐ नमो अर्हन् झं झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः अस्माकं .... श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं अस्माकं ...... कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवित्राय नमो नमः। अस्माकं श्री शान्तिभट्टारक–पादपद्म–प्रसादात् सद्धर्म श्रीबलायुरा–रोग्यैश्वर्याभि–वृद्धिरस्तु सद्धर्म–स्वशिष्य–परशिष्यवर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यंताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञा परममाङ्गल्यनामधेया अस्माकं .... इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु–सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्त चतुष्टयसहिताय समवशरणकेवलज्ञान लक्ष्मीशोभिताय अष्टादश–दोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण संयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलौक्य महिताय, अनंतसंसारचक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शनवीर्यसुखास्पदाय त्रैलोक्य–वशङ्कराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे, उपसर्गविनाशनाय घातिकर्म–क्षयङ्कराय, अजराय, अभवाय, अस्माकं .... व्याधिं ध्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक–पूजन–प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष–रोगशोक–भयपीड़ा–विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष–दोषकल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न–प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्टशान्ति कराय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा। मम कामं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। रतिकामं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। बलिकामं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। क्रोधं पापं बैरं च छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। अग्निवायुभयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वशत्रु विघ्नं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वोपसर्गं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वविघ्नं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वराज्यभयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वचौरदुष्टभयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वसर्प–वृश्चिकसिंहादिभयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वग्रहभयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वपरमंत्रं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वात्मघातं परघातं च छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वनरमारिं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वगजाश्व–गोमहिषं अजमारिं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वसस्य–धान्य वृक्षलता गुल्म–पत्रपुष्प–फलमारिं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वराष्ट्रमारिं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वक्रूरवेताल–शाकिनी डाकिनी भयानि छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्ववेदनीयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्व मोहनीयं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वापस्मारिं छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। अस्माकं .... अशुभकर्मजनित–दुःखानि छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। दुष्टजनकृतान् मंत्रतंत्रमुष्टिछल–छिद्रदोषान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वदुष्ट–देवदानव–वीर–नरनाहर–सिंहयोगनी कृतदोषान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्वअष्टकुलीनाग–जनित विषभयानि छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। सर्व–स्थावर–जंगम–वृश्चिक सर्पादिकृतदोषान् छिन्दि छिन्दि

भिन्दि भिन्दि। सर्वसिंहाष्टा पदादि कृतदोषान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। परशक्षुकृत–मारणोच्चाटन–विद्वेषण–मोहन–वशीकरणादि–दोषान् छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं .... चक्रविक्रम सत्त्वतेजोबल–शौर्यशान्तीः परय पूरय। सर्व–जीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानंदनं गोकुलानंदनं च कुरु कुरु। सर्वराजा–नंदनं कुरु कुरु। सर्वग्रामनगर खेट–कर्वट–मटंवद्रोणमुख–संवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधिव्यसनवर्जितं।
अक्षयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्य–मारोग्यमस्तु। अस्माकं ..... पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र–धनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायु–रारोग्यैश्वर्याभि–वृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्ली विलासं सकलसुखफलै–र्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरूपम मुपनयत्वा तनोत्त्वच्छकीर्तिम्।।
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणि स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कांतिं शांतिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्ति धारा।।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहाः शान्त्यर्थः गन्धोदक धारावर्षणाम्।)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्यराज्ञः करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांती धारा देते हैं।।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं..................

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबम्बों की आज यहाँ पर, होती जय–जयकार है।।

(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।

(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपके आए हैं।।

(3) शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।

(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।

(5) नैया पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।

जिनवर का...!

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि–पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।2।।
अपराजित–मंत्रोऽयं सर्वविघ्न–विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ।।3।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म–वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।5।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी–भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो–गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिन गृहे जिननाम महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन–तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल ज्ञान रवाकुले जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद–नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ–सुदृशां–सुकृतैकहेतु–जैनेन्द्र–यज्ञ–विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति–स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न–ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल–बोध–सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव–परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण–पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल–बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ–प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) (इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्‌शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्मभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।
परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर हम नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्‌भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मन: पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।

दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।
(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति... ।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।।।शक्ति...10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(द्यानतरायजी कृत)

अडिल्ल छंद

प्रथम देव अरिहन्त सुश्रुत सिद्धांत जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर-पंथ जू।।
तीन रतन जग माहिं सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम पद पाइये।।1।।

दोहा - **पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार।**
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(हरिगीतिका एवं दोहा)

सुरपति उरग नरनाथ तिनकरि, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा - **मलिन वस्तु हर लेत सब, जल-स्वभाव मल छीन।**
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग उदर मझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा - **चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।**
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भव-समुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम-पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा - **तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।**
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जे विनयवंत सुभव्य उर, अम्बुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माँहि प्रधान हैं।।
लहि कुंद-कमलादिक पहुप, भव-भव कुवेदन सो बचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा - **विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।**
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सबल मद कंदर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को, सु गरुड़ समान हैं।।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा - **नानाविधि संयुक्त रस, व्यञ्जन सरस नवीन।**
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग-उद्यम नाश किने, मोह-तिमिर महाबली।
तिहिं कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश ज्योति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल, कंचन के सुभाजन में खचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – स्व-पर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्नि, समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधता करि, सकल परिमलता हँसै।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित, भव-ज्वलन माहीं नहीं पचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – अग्नि माँहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार है।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार है।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – जे प्रधान फलफल विषैं, पञ्चकरण रसलीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ।।
इहि भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूँ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा – वसुविधि अर्घ संजोय कै, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न-भिन्न कहूँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।1।।

।। पद्धरि छन्द ।।

चउ कर्म सु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर।।2।।

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीश धार।
देवाधिदेव अरहंत देव, वन्दौं मन-वच-तन कर सुसेव।।3।।

जिनकी धुनि है ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।।4।।

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि-शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।5।।

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछितपैं शिवपद निहार।।6।।

गुण छत्तिस पच्चिस आठ-बीस, भव-तारण-तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपो मन-वचन-काय।।7।।

सोरठा– कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर-अमर पद भोगवै।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्र निहू-तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जान के हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

कृत्माकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा-वासगान्।।
सद्-गन्धाक्षत-पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु-भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लख चौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रितुमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल हो शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै,
मन- वच- तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज- तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत विरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों।।
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

जल गंध अच्छत फूल चरु फल धूप दीपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत तैं जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा पावापुर कैलाश कौं।
पूजों सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. प.पू. आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्य

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांति पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में, अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ हूँ चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
विमल सिंधु के विमल चरण से, करुणा के झरने झरते।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते।।

ॐ हूँ सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाने आये हैं।।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में अपना शीश झुकाया है।।

ॐ हूँ प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश मनोहर अक्षत पुष्प चरू लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर अर्घ्य चढ़ाने हम आये।।
हृदय कमल में राजें गुरुवर सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

समुच्चय महा–अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पश्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नम: प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नम:। दर्शन–विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नम:। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नम:। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रेभ्यो नम:। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नम:। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नम:। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नम:। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नम:। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नम:। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नम:। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नम:, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नम:।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल हो शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांति जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांति करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाति कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा- वर्ण अर्थ पद मात्र में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

(कायोत्सर्ग करें)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य–चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आयें हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब 'विशद' मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंश करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **तीन लोक तिहूँ काल के, नमूँ सर्व अरहंत।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री पंच परमेष्ठी समुच्चय पूजन

स्थापना

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है ।
श्री सिद्ध प्रभु के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है ।।
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पञ्चाचार प्रदान करें ।
गुरु उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान का दान करें ।।
हैं साधू रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्-शत् वंदन ।
हे पञ्च महाप्रभु! विशद हृदय में, करते हैं हम आह्वानन् ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, हम शुद्ध भाव से लाये हैं ।
हो जन्म जरादि नाश प्रभु, तव चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाये हैं ।
हम भव सन्ताप नशाने को प्रभु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाये हैं ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, चरण शरण में आये हैं ।।

अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाये हैं ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाये हैं ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाये हैं ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु हम, धूप दशांगी लाये हैं ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्व निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाये हैं ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाये हैं ।
निज अनर्घ पद पाने हेतु, चरण शरण में आये हैं ।।
अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याते हैं ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त हमें, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार ।
गाते हैं जयमालिका, करके जय–जयकार ।।

(छन्द ताटंक)

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभु को करें नमन ।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदन ।।
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार ।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभु को नमस्कार ।।
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन ।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरु को विशद नमन ।।
जय पच्चिस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार ।
जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कार ।।
जय मुनि संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन ।

जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को सतत नमन् ।।
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो !, श्री जिनवाणी जग में मंगल ।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमल ।।
इनका वंदन हम करें नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन ।
हम भाव सुमन लेकर आये, चरणों में करने को अर्चन ।।
प्रभु भटक रहे हम सदियों से, मिल सकी न हमको चरण शरण ।
अतएव अनादि से भगवन्, पाए हमने कई जनम–मरण ।।
अब जागा मम् सौभाग्य प्रभु, तुमको हमने पहिचान लिया ।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान किया ।।
है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले ।
हम रहें चरण के दास बने, जब तक मेरी यह श्वाँस चले ।।
तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाये हूँ ।
हो भाव समाधि मरण अहा !, यह विनती करने आये हूँ ।।
क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया ।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लिया ।।
अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है ।
उस पद को पाने का केवल, जिनभक्ती एक सहारा है ।।
जिनभक्ती कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ती न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे ।।

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य जिन, उपाध्याय अरु संत ।
इनकी पूजा भक्ति से, होय कर्म का अन्त ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा– परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान ।
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महान् ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्वसाधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैनधर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नवदेव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नवकोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा– **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद को पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने अब लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गती भटकाते हैं।।

अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
वह क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में प्राणी अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समीति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।

मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतू, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करें नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करें अर्चन।।
स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करें भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभु वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।
मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करें नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करें शत्–शत् वंदन।।

विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करें नमन्।।
वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करें हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाएँ हम सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाएँ ज्ञान सघन।
कछुआ चिन्ह मुनीसुव्रत का, वन्दन कर हो जाएँ मगन।।
चरण पखारें नमीनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करें चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करें चरण का अभिनंदन।।
वृषभादि महावीर प्रभु की, करें नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।

दोहा - चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगलपरम।
मंगल करें सदैव, सुख शांति आनन्द हो।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

विद्यमान बीस तीर्थंकर की पूजन

स्थापना

हे लोकपूज्य ! हे महाबली !, हे परम ब्रह्म ! हे तीर्थंकर !
हे ज्ञानदिवाकर धर्मपोत !, हे परमवीर ! हे करुणाकर !
हे महामति ! हे महाप्रज्ञ !, हे महानंद ! हे चतुरानन !
हे विद्यमान तीर्थंकर जिन !, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! दया करके उर में, प्रभु मेरा भी उद्धार करो।
यह भक्त आपके हैं साही, हे दयासिन्धु ! उपकार करो।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज-विद्यमान.. बीस तीर्थंकर पूजा..

जन्मादी के रोगों ने, भव भ्रमण कराया।
कर्म बंध करके हमने, संसार बढ़ाया।।
श्री जिनेन्द्र पद दे रहे, प्रासुक जल की धार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।1।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप में जलते, जग के जीव हैं।
राग-द्वेष कर बाँधे, कर्म अतीव हैं।।
चरणों चर्चित कर रहे, चंदन केसर गार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।2।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के हेतु, नहीं पुरुषार्थ किए हैं।
भव अनेक पाकर यों, हमने गवाँ दिए हैं।।
चढ़ा रहे अक्षत धवल, अक्षय विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।3।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामवासना में फंसकर, प्राणी भरमाया।
कामबली ने वश में कर, जग में भटकाया।।
पुष्प चढ़ाते भाव से, महके अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।4।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग के द्वारा, जग के जीव सताए।
करके सर्वाहार, नहीं वह तृप्ती पाए।।
यह नैवेद्य बनाए हैं, हमने शुभ रसदार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।5।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध के कारण, जग में भटक रहे हैं।
पर पदार्थ पाकर कई, हमने कष्ट सहे हैं।।
दीप जलाकर लाए हैं, मणिमय मंगलकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्षदातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।6।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमको, जग में बहुत सताया।
कष्ट सहे सदियों से, उनका अन्त न आया।।
धूप सुगन्धित अग्नि में, खेते अपरम्पार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।7।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे भटकते फल की, आशा में हम भारी।
अतः नहीं बन सके मोक्ष, के हम अधिकारी।।
चढ़ा रहे हम भाव से, फल यह विविध प्रकार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।8।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, बहु संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।9।।
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शाश्वत रहे विदेह में, जिन तीर्थंकर बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाते शीश।।

पद्धरि छन्द

शाश्वत यह लोकालोक जान, शुभ मध्यलोक जिसमें महान्।
है जम्बूद्वीप मध्य पावन, जिसमें मेरू है मन भावन।

जिसके पूरब पश्चिम विदेह, जिससे प्राणी करते स्नेह।
हैं क्षेत्र पञ्च पावन महान्, शत् एक षष्टि उपक्षेत्र जान।
शाश्वत तीर्थंकर जहाँ बीस, सेवा में तत्पर रहें ईश।
यह शाश्वत होते बीस नाम, जिनके चरणों करते प्रणाम।
जिनवर होते कभी प्रति क्षेत्र, वह पाते केवलज्ञान नेत्र।
संख्या होती शत एक साठ, जो करें नष्ट सब कर्म काठ।
जिन की भक्ति है सौख्यकार, प्राणी हों भव से शीघ्र पार।
जो चरण-शरण पाते महान्, जिन पद में करते भक्तिगान।
उन सब जीवों की बढ़े शान, वह पाते प्रभु से ज्ञानदान।
हम भी पा जाएँ शरण नाथ, विनती करते हैं जोड़ हाथ।
सौभाग्य जगे मेरा जिनेश, हम रहें शरण में ही हमेश।
तव दर्शन कर हों सफल नेत्र, हम रहें कहीं भी किसी क्षेत्र।
मन में प्रभु जागी यही चाह, मुक्ति की हमको मिले राह।
न पड़े मार्ग में कोई रोध, जागे मम् अंतर में सुबोध।
हम चातक बनकर खड़े नाथ, रख के माथे पर दोय हाथ।
बरसो स्वाती की बूँद रूप, जागे अंतर में निज स्वरूप।
बन आओ प्रभु मेरे सुमीत, प्रभु आप निभाओ 'विशद' प्रीत।
तुमसे प्रभु मेरी लगी आश, मेरे जीवन का हो विकास।

छंद-घत्तानंद

बीसों तीर्थंकर, हैं करुणाकर, शुभ विदेह के उपकारी।
महिमा हम गाते, शीश झुकाते, सर्वलोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनवर बीस विदेह के, करते कृपा महान्।
मुक्ती पद के भाव से, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

iap cky;fr ftu iwtk

LFkkiuk

dklqiwT; Jh v#efYy usfe ftu] ik'oZukFk ÁHkq dhj ftus'kA
jktR;kx oSjkX; fy, ÁHkq] /kkjk vki fnxEcj Hks"kAA
ikapksa cky;fr dgyk,] rhFkZadj in ds /kkjhA
pj.kksa 'kh'k >qdkrs Hkfotu] vki jgs eaxydkjhAA
iap ÁHkq dk vkg~okuu~ gS] iape xfr esa tkus dksA
^^fo'kn Hkko ls oUnu djrs] eks{k ije in ikus dksAA**

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUæ! v= vorj&vorj laokS"kV~ vkg~okuu~A v=&fr"B fr"B B% B% LFkkiuaA v= ee~ lfUufgrks Hko Hko o"kV~ lfUuf/kdj.ke~AA

(वीर छन्द)

deksZa ls vkof.kZr vkre] ty ls 'kq) u gksrh gSA
tUe&tUe ls eksg esa Qaldj] viuh 'kDrh [kksrh gSAA
Áklqd fueZy ty Hkj yk,] pj.kksa esa djrs viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa oUnuAA 1AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUæk; tUe e`R;q fouk'kuk; tya fuoZikehfr LokgkA

fpUrk,¡ fprk leku jgha] psru dh 'kDrh [kksrha gSaA
Øks/kkfnd 'kk,¡ bZ";kZ dh] {k.k&{k.k foirk,¡ dksrh gSaAA
ge Hkko vkrki ds uk'k gsrq] ÁHkq fueZy xa/k djsa viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa oUnuAA 2AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUæk; lalkj rki fouk'kuk; pUnua fuoZikehfr LokgkA

geus u'oj in ik;s dbZ] ij 'kk'or in u feyk dghaA
'kk;n v{k; in ikus dk] iq#"kkFkZ dHkh Hkh fd;k ughaAA
ge v{k; in ikus gsrw] pj.kksa v{kr djrs viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA3AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks v{k; in ÁkIrk; v{krku~ fuoZikehfr LokgkA

fo'k;ksa ls fo'k;ksa dh vk'kk] u iw.kZ dHkh gks ikrh gSA
D;k vfXu esa bZa/ku iM+ dj] og 'kkar dHkh gks tkrh gSAA
ee dke okluk u'k tkos] ge iq"i djsa in esa viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA4AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks dkeck.k fo/oa'kuk; iq"ia fuoZikehfr LokgkA

Hkkstu lfn;ksa ls fd;k exj] ;g isV ugha Hkj ikrk gSA
fdruk gh f[kyk;k tk; mls] ij [kkyh ik;k tkrk gSAA
ge {kq/kk osnuk uk'k gsrq] uSos| ljl djrs viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA5AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks {kq/kkjksx fouk'kuk; uSos|a fuoZikehfr LokgkA

lq[k nq[k deksZa dh ek;k gS] ge vc rd tku u ik, gSaA
djus vUrj re uk'k ÁHkq] vc nhi tykus vk, gSaAA
fut Kku nhi dh T;ksfr txs] ;g nhi djsa in esa viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA6AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks egkeksgka/kdkj fouk'kuk; nhia fuoZikehfr LokgkA

~

deksZa dk tky cuk djds] mlesa gh Q¡lrs tkrs gSaA
भवसिन्धु ds xgjs nyny esa] ge my>s xksrs [kkrs gSaAA
ge v'"V deZ ds uk'k gsrq] vfXu esa èkwi djsa viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA7AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks v'"VdeZ nguk; /kwia fuoZikehfr LokgkA

lq[k nq[k gS iq.; ikI dk Qy] ;g rks fu'Qy gks tkrk gSA
tks deZ 'kfDr fu"Qy djrk] og eks{k egkQy ikrk gSAA
ge eks{k egkQy ikus dks] ;g Áklqd Qy djrs viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA8AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks eks{kQy ÁkIrk; Qya fuoZikehfr LokgkA

deksaZ dk ?kksj frfej Nk;k] feF;kRo tky QSyk, gSA
ge Hkwy x;s ln~jkg ÁHkks!] u ikj mls dj ik, gSaAA
ge in vu?kZ ikus gsrw] ;g v?;Z djsa in esa viZ.kA
dklqiwT; v# efYy usfe ftu] ik'oZ dhj in esa dUnuAA9AA

ॐ gzha Jh iap cky;fr dklqiwT;] efYy] usfe] ik'oZ] dhj ftusUnzsH;ks vu?;Z in ÁkIrk; v?;Za fuoZikehfr LokgkA

t;ekyk

rksgk& **iap cky;fr cu x;s] iape xfr ds ukFkA**
iape xfr dk Hkkoys] >qdk pj.k esa ekFkAA

tc izcy iq.; dk ;ksx txs] rc rhFkZadj dk n'kZ feysA
ॐ dkj e;h ok.kh lqudj] J`)k dk mj esa Qwy f[kysAA

rÙoksa dk cks/k txs mj esa 'kqHk] lE;d~ Kku ds nhi tysaA
rc ije ifo= eks{k iFk ij] tx esa jgdj tho pysaAA
pEikiqj esa oklqiwT; ftu] iap dY;k.kd ik, gSaA
rhu yksd ds bUnz lHkh fey] efgek xkus vk, gSaAA
{k.k Hkaxqj ekuk bl tx dks] tx Hkksxksa esa ugha QalsA
Jh oklqiwT; ÁHkq us la;e] /kj vius lkjs deZ u'ksAA
cky czápkjh jgdj Hkh] jRu=; dks ik, ukFk!A
'kr~ bUnzksa us ÁHkq pj.kksa esa] vkdj Lo;a >qdk;k ekFkAA
f}fr; cky czápkjh ÁHkq] efYyukFk th gq, egku~A
eksg eYy ij fot; ÁkIr dh] mudk dkSu djs xq.kxkuAA
tUe fy;k feFkyk uxjh esa] ekr firk dks /kU; fd;kA
fxfj lEesn f'k[kj ds Åij] tkdj ÁHkq fuokZ.k fy;kAA
tUe fy;k Fkk lkSjhiqj esa] usfeukFk th dgyk,A
;nqpa'kh u`i leqnz fot; ds] x`g esa vfr eaxy Nk,AA
jktefr dks C;kgu gsrq] nwYgk cudj pys dqekjA
jkx NksM+dj ou fojkxh] i'kqvksa dh lqu d#.k iqdkjAA
è;ku eXu fxjukj fxfj ij] psru rÙo Ádk'k fd,A
deZ uk'kdj vius lkjs] eks{k egy esa okl fd,AA
mÙkj Áns'k dk'kh uxjh esa] v'olsu u`i ds njckjA
okek nsoh dh dqf{k ls] tUe fy, ÁHkq ik'oZ dqekjAA
ukx ;qxy dks tyrs ns[kk] ea= fn;k mudks uodkjA
in~ekofr /kj.ksUnz gq, og] ÁHkq us yhUgk la;e /kkjAA

è;ku voLFkk esa cSjh us] ÁHkq ij fd;k ?kksj milxZA
vkre jl esa yhu gq, ÁHkq] deZ uk'k ik, vioxZAA
dq.Myiqj esa u`i fl)kjFk ds] x`g tUes ohj dqekjA
ik.Mqdf'kyk ij Ugou djk;k] nsoksa us cksyk t;dkjAA
fpUru dj lalkj n'kk dk] /kkj fy;k oSjkX; egku~A
deZ uk'k dj vius lkjs] ik;k ÁHkq us in fuokZ.kAA
iap cky;fr rhFkZadj ;g] lans'k u;k ysdj vk,A
mudh efgek dks tku dbZ] uo ;kSou esa nh{kk ik,AA
ge cky;fr gaS ckyd gSa] ge ij Hkh d`ik Ánku djksA
gedks eqfDr ds ekjx ij] c<+us dk lkgl nku djksAA
ge NksM+ txr ds oSHko dks] ÁHkq f'koiqj inoh dks ik,¡A
ge ^fo'kn^ Kku dks ÁkIr djsa] v# fl) f'kyk ij je tk,¡AA

nksgk& ik¡pksa rhFkZadj gq,] fl) f'kyk ds ukFkA
fl) dk oj nhft,] pj.k >qdk,W ekFk AA

ॐ àha Jh iap cky;fr oklqiwT; efYy] usfe] ik'oZ] ohj ftusUnzk; t;ekyk iw.kkZ?;Za fuoZikehfr LokgkA

nksgk& oklqiwT; v# efYyftu] useh ik'oZ ohjA
HkfDr djsa lalkj esa] vku c¡/kkvksa /khjAA

AA bR;k'khokZn% iq'ikatfya f{kisr~ AA

श्री बाहुबली पूजा

स्थापना

कर्म घातिया नाशे स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी।
एक वर्ष का ध्यान लगाया, अतिशय केवलज्ञान जगाया।।
बाहुबली बाहूबलधारी, बने विशद क्षण में अविकारी।
उनकी महिमा को हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
सिंहासन निज हृदय बनाया, जिस पर प्रभुजी को पधराया।
हमने निर्मल भाव बनाए, आह्वानन करने हम आए।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ताटंक छंद

काल अनादि से इस जग में, मोहित होकर किया भ्रमण।
जन्म-जरा के नाश हेतु हम, करते हैं यह जल अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय भोगों में रच-पचकर, भवसागर में किया भ्रमण।
भवआताप मिटाने को हम, करते हैं चंदन अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अविरति योग कषायों, से कर्मों का किया सृजन।
अक्षय अविचल पद पाने को, अक्षत यह करते अर्पण।।

एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कषायों ने भव-भव में, कीन्हा है भारी कर्षण।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, सहस्र पुष्प करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग की आकांक्षा से, सर्व जगत् में किया भ्रमण।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादी मोह कषायों से, ना प्रकट हुआ सम्यक्दर्शन।
अब निज परिणति में रमण हेतु, यह दीप ज्योति करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की ज्वाला, हम कभी नहीं कर सके शमन।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप सुगंधित है अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल को फल माना, अरु पुण्य पाप में किया रमण।
अब महामोक्षफल पाने को, यह फल करते पद में अर्पण।।

एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म-मरण।
अब पद अनर्घ हेतु प्रभुवर, यह अर्घ्य श्रेष्ठ करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली का बाहुबल, जग में रहा महान्।
जलधारा देते चरण, पाने पद निर्वाण।।

(शांतये शांतिधारा)

पुष्पांजलि करने चरण, भाव पुष्प ले हाथ।
अर्पित करते भाव से, झुका रहे पद माथ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल।।

(शंभू छन्द)

सुर-असुर-खगाधिप योगीश्वर, मुनि जिन की महिमा गाते हैं।
हे बाहुबली ! तव चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

तुम महाबली हो कर्मदली, चक्री का मान गलाया है।
संसार असार जानकर के, तुमने संयम अपनाया है।।

तुमने तन-चेतन के अंतर, को जान स्वभाव जगाया है।
तन से ममत्व का त्याग किया, यह भेद ज्ञान प्रगटाया है।

तुम मात सुनंदा से जन्मे, प्रभु आदिनाथ के पुत्र कहे।
प्रभु कामदेव थे प्रथम श्रेष्ठ, शुभ चक्रवर्ती के भ्रात रहे।।

सवा पाँच सौ धनुष देह शुभ, हरित वर्ण से शोभामान।
नील कुलाचल सम स्थिर प्रभु, नील गिरि सम आभावान।।

विशद तेज परमाणु जग के, जिनसे रचा शरीर महान्।
अतुल वज्र सम धीरज नीरज, वीरबली अतिशय बलवान।।

बाल्यावस्था में वृद्धि कर, बने श्रेष्ठ गुण के आधार।
बल बुद्धि वैभव के धारी, बने जहाँ में अपरम्पार।।

पोदनपुर के राजा का पद, बाहुबली को दिए जिनेश।
नगर अयोध्या का स्वामी पद, भरतेश्वर को दिया विशेष।।

चक्ररत्न पाये भरतेश्वर, पुण्योदय से अपरंपार।
षट् खंडों पर विजयश्री में, वर्ष बिताए साठ हजार।।

बाहुबली ने हार न मानी, युद्ध हुए तब उनसे तीन।
दृष्टि मल्ल जल युद्ध का निर्णय, कीन्हें मंत्री ज्ञान प्रवीण।।

दृष्टि युद्ध अरु नीर युद्ध में, चक्रवर्ती ने मानी हार।
मल्ल युद्ध करने फिर दोनों, उसी समय हो गये तैयार।।

बाहुबली ने भरतेश्वर को, अधर उठाया अपने हाथ।
शक्तिहीन हुआ भरतेश्वर, जो था छह खण्डों का नाथ।।

चक्रवर्ति ने चक्र चलाया, विफल हुआ उसका भी वार।
बाहुबली ने सोचा तब ही, है अनित्य सारा संसार।।

राज्य सौंपकर भरतेश्वर को, अष्टापद पर गये कुमार।
महाव्रतों को धारण करके, ध्यान किया होकर अविकार।।

खड़ा हुआ मैं जिस धरती पर, भरत का है उस पर अधिकार।
यह विकल्प आता था मन में, बाहुबली को बारंबार।।

वामी बनी चरण में अतिशय, तन पर बेलें चढ़ी महान्।
क्रूर जंतुओं ने अंगों पर, बना लिया अपना स्थान।।

सिर के केश बढ़े थे भारी, उनमें पक्षी बसे अपार।
कानों में भी बना घौंसला, पक्षी करते थे किलकार।।

धन्य-धन्य इस अचल ध्यान का, धन्य हुए मुनिवर अविकार।
वीतराग गुरुओं की महिमा, कही गई है अपरम्पार।।

कर्म नाशकर आदि प्रभु से, पहले कीन्हें मोक्ष प्रयाण।
सिद्धशिला पर बना लिए प्रभु, अपना स्थाई स्थान।।

यही भावना रही हमारी, चरणों रहे हमारा ध्यान।
संयम को पाकर के हम भी, इस भव से पावें निर्वाण।।

चौपाई- श्रवणबेलगोला में जानो, विंध्यगिरि अनुपम पहिचानो।
प्रतिमा सत्तावन फुट भाई, है प्रसिद्ध जग में सुखदाई।।
खड्गासन है अतिशयकारी, दिखती है अतिशय मनहारी।
अर्घ्य चढ़ाकर महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोह- बाहुबली भगवान की, महिमा अपरम्पार।
पूजा अर्चा कर मिले, जग में सौख्य अपार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री रविव्रत पूजा

स्थापना

हे पार्श्वनाथ ! करुणा निधान, तुमने करुणा का दान दिया।
जो दीन दुखी हैं इस जग में, उनको शिव सौख्य प्रदान किया।।
इक श्रेष्ठी रत्न मतीसागर ने, भक्ति का फल पाया है।
रवीवार का व्रत करके शुभ, निज सौभाग्य जगाया है।।
हम भाव सहित प्रभु गुण गाते, अरु पद में करते हैं अर्चन।
निज हृदय कमल में तिष्ठाने, प्रभु करते हैं तव आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

दोहा- जल की धारा दे रहे, चरणों में हे नाथ ! ।
जन्म-जरादि नाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चरणों चर्चने, आए हम हे नाथ !
भव आताप विनाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत के प्रभु, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाने चरण, पूजा करें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर आए साथ।
कामबाण विध्वंश हों, तव चरणों में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
क्षुधा रोग विध्वंश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का अनुपम दीप यह, हाथों लिए प्रजाल।
मोह अंध का नाश हो, चरण झुकाते भाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप यह, खेते अपरम्पार।
अष्ट कर्म का नाश हो, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम भाव से, ताजे फल रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, भवदधि पावैं पार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, लेकर द्रव्य अनेक।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त शुभ, यही भावना एक।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविवार व्रत के दिना, करें पार्श्व गुणगान।
जलधारा देते चरण, पाने सौख्य महान्।। *(शांतये शांतिधारा)*

अर्पित करते चरण में, पुष्पों का यह हार।
गुण गाने से पार्श्व के, मिले मोक्ष उपहार।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

जयमाला

दोहा– अर्चा के शुभ भाव से, वन्दन करें त्रिकाल।
रविव्रत पूजा की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(शंभू छन्द)

उपसर्ग परीषह में तुमने, अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।।
ओले शोले पत्थर पानी, दुष्टों ने तुम पर बरसाए।
तव श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रू पद सिरनाए।।
तुमने तन चेतन का अन्तर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप प्रभु ने पाया।।
यह संयम की शक्ति मानो, उपसर्ग प्रभुजी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिए, हर बाधाओं से खेले हैं।।
सब राग–द्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पाई है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीन–दुःखी द्वारे आते, उनके सारे दुख हरते हो।।
इक सेठ मतीसागर जानो, जो मन से अति दुखयारा था।
जो अशुभ कर्म के कारण से, निज सुत वियोग का मारा था।।
पा पुत्र एक शुभ होनहार, जो परदेशों में भटका था।
सुधि भूल गया था निज गृह की, जो माया–मोह में अटका था।।
तब सेठ ने रविव्रत पूजा कर, शुभ पुण्य सुफल को पाया था।
वह पुत्र प्राप्त करके अपना, अतिशय सौभाग्य जगाया था।।
जो शरण प्रभु की पाते हैं, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
व्रत धारण करके पूजा कर, बहु सौख्य सम्पदा पाते हैं।।
जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं।।
उपसर्ग कमठ ने कीन्हा जब, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।
फण फैलाया था पद्मावति ने, प्रभु को उस पर बैठाया था।।

फण का शुभ छत्र बनाकर के, क्षण में उपसर्ग नशाया था।
भक्तों ने भक्ती वश होकर, अपना कर्त्तव्य निभाया था।।
था अन्जन चोर अधम पापी, उसने जिनवर को ध्याया था।
ऋद्धी उसने पाई अतिशय, फिर स्वर्ग सुपद को पाया था।।
सीता की अग्नि परीक्षा में, अग्नि को कमल बनाया था।
सूली का सेठ सुदर्शन ने, अतिशय सिंहासन पाया था।।
जब नाग-नागिनी दुखी हुए, तब प्रभु ने संकट हारा था।
द्रोपदी के चीरहरण को भी, जिनवर ने शीघ्र सम्हारा था।।
होकर अधीर प्रभु चरणों में, यह पूजा करने आए हैं।
अपने भावों के उपवन से, यह भाव सुमन शुभ लाए हैं।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
जो भवि जीवों के लिए शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है।।

दोहा- रविव्रत को जिन पार्श्व की, पूजा करें विशेष।
सौख्य सम्पदा प्राप्त कर, पावें जिन स्वदेश।।
रविव्रत के दिन पार्श्व को, पूजें जो भी लोग।
सुख शांति आनन्द पा, पावें शिव का योग।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरणी छंद (महावीर स्वामी....)

रविव्रत के दिन को, करें जो पूजा भाव से।
श्री पारस जिन को, सदा ही ध्यावें चाव से।।
बने ज्ञानी ध्यानी, जगे सौख्य तिनके।
बने पारस वह भी, जजैं पद पार्श्व जिनके।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(नोट- रविव्रत उद्यापन के अवसर पर श्री विघ्नहर पारसनाथ विधान अवश्य कीजिए।)

महामंत्र णमोकार पूजा

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
श्रद्धा भक्ति से जो प्राणी, महामंत्र को ध्याते हैं।
सुख-शांती आनन्द प्राप्त कर, शिव पदवी को पाते हैं।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-मोतियादाम)

हमने इस तन को धो-धोकर, सदियों से स्वच्छ बनाया है।
किन्तु क्रोधादि कषायों ने, चेतन में दाग लगाया है।।
अब चित् के निर्मल करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का काल अनादी से, पुद्गल से गहरा नाता है।
कर्मों की अग्नि धधक रही, संताप उसी से आता है।।
अब शीतल चंदन अर्पित कर, संताप नशाने आए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड आतम अनुपम, खण्डित पद में रम जाती है।
स्पर्श गंध रस रूप मिले, उनसे मिलकर भटकाती है।

अब अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, अक्षय पद पाने आये हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन काम वासना से वासित, तन कारागृह में रहता है।
आयु के बन्धन में बंधकर, जो दुःख अनेकों सहता है।।
अब काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन किया मगर, नित प्रति भूखे हो जाते हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, न ज्ञानामृत हम पाते हैं।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की आभा के आगे, दिनकर भी शरमा जाता है।
आवरण पड़ा वसु कर्मों का, स्वरूप नहीं दिख पाता है।।
अब मोह अन्ध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तीव्रोदय जब कर्मों का, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
यह जीव शुभाशुभ कर्मों के, फल से सुख-दुःख बहु पाता है।।
अब अष्ट कर्म का यह ईंधन, शुभ आज बनाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर गति में जन्म हुआ मेरा, यह पूर्व पुण्य की माया है।
इसमें भी पाप कमाया है, न मोक्ष महाफल पाया है।।

अब मोक्ष महाफल पाने को, यह सरस-सरस फल लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आठ कर्म के ठाठ महा, जीवों को दास बनाते हैं।
मोहित करके सारे जग को, वह बारम्बार नचाते हैं।।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मंत्रित कर महामंत्र से, प्रासुक नीर महान्।
शांतिधारा दे रहे, करके हम गुण गान।।
शांतये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पांजलि को पुष्प यह, पुष्पित लिए महान्।
महामंत्र का जाप कर, करने को गुणगान।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल।।

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ।।
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतिस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ।।
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते।।

पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई ! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भाव सहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।

दोहा- महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट- णमोकार मंत्र व्रत के उद्यापन में श्री णमोकार महामण्डल विधान अवश्य कीजिए।)

सहस्त्रनाम पूजन

स्थापना

हे तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकर !, हे सहस्र आठ गुण के धारी।
हे विश्व पूज्य ! हे समदृष्टा !, सर्वज्ञ देव मंगलकारी।।
हे ज्ञानसूर्य ! हे तेज पुञ्ज !, आनन्द कन्द हे त्रिपुरारी ! ।
हे धर्मसुधाकर चिदानन्द !, करुणा निधान हे दुःखहारी !।।
आह्वानन करके आज तुम्हें, उर में अपने बैठाते हैं।
शुभ सहस्रनाम के द्वारा हम, प्रभु गीत आपके गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शुभ जल के कलशा प्रासुक कर, हम पूजन करने आये हैं।
त्रय रोग नशाने हे भगवन् !, त्रयधार कराने लाये हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में घूम रहे हैं हम, पर साता कहीं न पाई है।
यह सुरभित गंध सुगन्धित ले, शुभ पद में आन चढ़ाई है।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निधि को भूल रहे हैं हम, अक्षय पद हमने न पाया।
यह अक्षत लाये आज चरण, उस पद को मम मन ललचाया।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

घातक है जग में प्रबल काम, सबके मन में विकृति लाए।
हो कामवासना पूर्ण नाश, यह पुष्प मनोहर हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म असाता के कारण, सदियों से जग में भटकाए।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान बिना इस भव वन में, दर–दर की ठोकर खाए हैं।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकर्म आत्मा को मलीन, सदियों से करते आए हैं।
निज वैभव पाने हेतु अमल, दश गन्ध जलाने लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग के सारे फल खाए, पर शिवफल प्राप्त न कर पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम श्रीफल चरणों में लाए।।

ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के कारण से, मम अष्ट सुगुण न प्रकट हुए।
अब पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, हम पद में आये अर्घ्य लिए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **प्रासुक लेकर नीर से, देते शांतीधार।**
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिव उपहार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।**
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिवपद नाथ !।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– **जिनवर तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।**
सहस्रनाम की गा रहे, भाव सहित जयमाल।।

चौपाई

जय–जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया।।
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदाई।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया।।
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई।।
गर्भादि कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई।।

जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए।।
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्रनाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी।।
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए।।
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए।।
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे।।
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते।।
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए।।
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।।
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ।।

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट- सहस्रनाम व्रत के उद्यापन में श्री सहस्रनाम विधान अवश्य कीजिए।)

तत्त्वार्थ सूत्र पूजन

स्थापना

ॐकारमय श्री जिनेन्द्र की, वाणी है जग में पावन।
परम्परा से आचार्यों ने, किया तत्त्व का दिग्दर्शन।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र, में मोक्ष मार्ग का है वर्णन।
उमास्वामी आचार्यवर्य ने, सप्त तत्त्व का किया कथन।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, मोक्ष शास्त्र का आह्वानन्।
विशद भाव से अभिनन्दन कर, करते हैं शत् शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

अगणित सागर के जल से भी, तृषा शांत न हो पाई।
अनुपम शीतल जल समता का, उसकी याद नहीं आई।।
हृदय कलश में श्रद्धा का जल, हम भरकर के लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

सागर में लहरों की भाँती, ज्वार कषायों का आया।
पश्चाताप किया हमने पर, मन से छूट नहीं पाया।।
क्रोधादी के नाश हेतु, यह शीतल चंदन लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अनंत हैं गुण मेरे, यह अब तक जान नहीं पाया।
इसलिए कर्म के चक्कर से, चारों गतियों में भटकाया।।
हम अक्षय पद पाने हेतू, यह अक्षय अक्षत लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, उसमें सदियों से भरमाया।
भँवरे की भाँती भ्रमण किया, नहिं आतम ज्ञान जगा पाया।।
हम काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

न अन्त है इच्छा सागर का, इच्छाएँ पूर्ण न हो पातीं।
जितनी इच्छाएँ पूर्ण करूँ, उतनी-उतनी बढ़ती जातीं।।
चेतन की भूख मिटे स्वामी, नैवेद्य चरण में लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

करता है नाश दीप तम का, पर अन्तर तम न मिट पाया।
सदियों से तीनों लोकों में, अज्ञान तिमिर में भटकाया।।
अंतर का तिमिर मिटाने को, यह दीप जलाकर लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

ज्यों तप अग्नी में रहता है, त्यों चेतन में सद्ज्ञान रहे।
कर्मों के घात से लोहे की, अग्नी सम चेतन मार सहे ।।
हम कर्मेन्धन के दहन हेतु, यह धूप सुगन्धित लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी तीव्र चली, पुरुषार्थ सफल न हो पाया।
कर्त्तव्य हुआ निष्फल मेरा, यह रही कर्म की ही माया।।
हम ज्ञान ध्यान का फल पाने, यह श्रीफल लेकर आये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ मिला हमें बाधाओं का, हम लक्ष्य प्राप्त न कर पाए।
जग की झंझट में उलझ गये, भव सागर में गोते खाए।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, हम अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मोक्ष शास्त्र में मोक्ष का, वर्णन रहा विशाल।
पूजा करके भाव से, गाते हम जयमाल।।

(छन्द ताटंक)

तत्त्वार्थ सूत्र में तत्त्वों का, विस्तार पूर्वक कथन किया।
आचार्य उमास्वामी गुरुवर ने, जिनश्रुत का शुभ मथन किया।।
महावीर प्रभु की वाणी को, गौतम गणधर ने झेला था।
उस समय सभा में जिनवर की, भवि जीवों का शुभ मेला था।।
सौधर्म इन्द्र धरणेन्द्र तथा, नर इन्द्र पशु भी आये थे।
तब ऋषी मुनी गणधर चरणों, भक्ति से शीश झुकाए थे।।
जिनवर की दिव्य ध्वनि खिरती, शुभ अर्धमागधी भाषा में।
मागध जाति के देव सभी, समझाते सब परिभाषा में।।
महावीर की दिव्य देशना, तीस वर्ष तक चली महान्।
इन्द्रभूति गौतम ने गणधर, बनकर जिसका किया बखान।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
इन्द्रभूति गौतम स्वामी ने, पाया सायं केवलज्ञान।।
दिव्य देशना भवि जीवों को, बारह वर्ष सुनाई थी।
अष्ट कर्म का नाश किए फिर, प्रभु ने मुक्ति पाई थी।।
श्री सुधर्माचार्य गुरू ने, पाया केवलज्ञान महान्।
बारह वर्ष जगत् जीवों को, कीन्हा प्रभु ने ज्ञान प्रदान।।
उनके मोक्ष प्राप्त करते ही, जम्बू स्वामी पाए ज्ञान।

अड़तिस वर्ष किया स्वामी ने, दिव्य देशना का व्याख्यान।।
श्रुत केवली पंच हुए फिर, पाए द्रव्य भावश्रुत ज्ञान।
सौ वर्षों तक किए देशना, देकर कीन्हा जग कल्याण।।
परम्परा से दिव्य देशना, आचार्यों ने समझाई।
अनुक्रम से वह दिव्य देशना, उमास्वामी ने भी पाई।।
द्वयाक श्रेष्ठी के निमित्त से, ग्रन्थराज यह लिखा गया।
उमास्वामी आचार्यवर्य से, बना एक इतिहास नया।।
दशाध्याय में मोक्षमार्ग का, विशद भाव से किया कथन।
जीवादिक सातों तत्त्वों का, जिसमें है सुन्दर वर्णन।।
प्रथम चार अध्यायों में है, जीव तत्त्व का श्रेष्ठ कथन।
पंचम में कीन्हा अजीव का, भेद सहित पूरा वर्णन।।
षष्टम सप्तम में आस्रव का, कीन्हा है गुरु ने व्याख्यान।
बन्ध तत्त्व का अष्टम में शुभ, किया गया प्यारा गुणगान।।
संवर और निर्जरा का शुभ नवम् खण्ड में किया कथन।
दशम खण्ड में मोक्ष तत्त्व का, कीन्हा है संक्षेप कथन।।
चारों ही अनुयोग समाहित, करके रचना हुई विशाल।
ऐसे गुरुवर और ग्रन्थ को, वंदन करते हैं नत भाल।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र में, तत्त्वों का है सरल कथन।
उसको पाने हेतु करते, विशद भाव से शत् वंदन।।

दोहा– उमास्वामि कृत ग्रन्थ यह, मोक्ष शास्त्र है नाम।
जयमाला गाकर यहाँ, करते 'विशद' प्रमाण

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष शास्त्र में दिया है, जैनागम का सार।
मोक्षमार्ग को प्राप्त कर, पाऊँ भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट– तत्त्वार्थसूत्र व्रत के उद्यापन में श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान अवश्य कीजिए।)

भक्तामर पूजा

स्थापना

भक्तामर स्तोत्र का, करते हम गुणगान।
आह्वानन् करते हृदय, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्र आराध्य आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरण्।

(मोतियादाम छंद)

भराया झारी में शुचि नीर, मिटाने को लाए भव तीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

घिसाया चंदन यह गोसीर, मिले अब मुझको भव का पीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशी सम तन्दुल लाए जीर, मिले अक्षय पद की तासीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित पुष्पित लाए फूल, काम का रोग होय निर्मूल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाये ताजे यह पकवान, मुझे हो समता का रसपान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया दीपक से यहाँ प्रकाश, मोहतम का हो पूर्ण विनाश।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाते धूप अग्नि में आज, नशे कर्मों का सकल समाज।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल भगवान्, मोक्ष फल हमको मिले महान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाकर अर्घ्य भराया थाल, चढ़ाते भक्ती से नत माल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतिधारा दे रहे, हो शांती भगवान।**
पूजा का फल पाएँ हम, हो आतम कल्याण।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, सुरभित लेकर फूल।**
सुख शांती सौभाग्य हो, कर्म होंय निर्मूल।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– **भक्तामर स्तोत्र की, महिमा अगम अपार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव का द्वार।।

(चौपाई)

भक्तामर स्तोत्र निराला, सुख शांती शुभ देने वाला।
पार नहीं महिमा का भाई, तीन लोक में है सुखदायी।।

मानतुंग मुनिवर जी गाए, आदिनाथ को मन से ध्याए।
संकट दूर हुआ तव भाई, यह स्तोत्र की महिमा गाई।।

भाव सहित जो भी जन ध्याते, उनके सब संकट कट जाते।
पूजा कोई करे शुभकारी, कोई पाठ पढ़े मनहारी।।

जो भी श्रद्धा भाव से ध्याए, मन में उत्तम शांती पाए।
भक्त की भक्ति जाए ना खाली, जो सौभाग्य बढ़ाने वाली।।

अक्षर एक–एक मंत्र बताया, कोई जान सके न माया।
वृहस्पती भी यदि गुण गाए, तो भी पूरा न कह पाए।।

महिमा सुनकर हम भी आए, श्रद्धा सुमन साथ में लाए।
हम हैं प्रभु अज्ञानी प्राणी, प्रभु आप हो केवलज्ञानी।।

तुमने रत्नत्रय को पाया, पावन मोक्ष मार्ग अपनाया।
कर्म नाशकर ज्ञान जगाया, अनन्त चतुष्टय शुभ प्रगटाया।।

दिव्य देशना आप सुनाए, भव्यों को शिव मार्ग दिखाए।
बने आप जग के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
पड़ी भँवर में मेरी नैया, उसके स्वामी आप खिवैया।।

'विशद' भाव से तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
जग के सारे कष्ट मिटाओ, शिवपद हम को शीघ्र दिलाओ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दास खड़े हैं चरण में, सुन लो नाथ पुकार।**
जैसा प्रभु निज का किया, करो मेरा उद्धार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सर्वग्रहारिष्ट निवारक जिन पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादि से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है।।
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतू।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(गीता छंद)

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादि धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।
अक्षय निधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।

नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हम क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाए हैं।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ !**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।। शांतये शांतिधारा

दोहा– **जगत पूज्य तुम हो प्रभो ! जगती पति जगदीश।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरगुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्राग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाय, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाय।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्व जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु–कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।**
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।
नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से।।
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमि सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव।।2।।
गुरु ग्रह की शांति हेतु हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज।।
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते।।3।।
राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें।।
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांति कारक, सर्व जगत मंगलकारी।।4।।
जन्म लग्न राशि के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते।।
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्र बाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज।।5।।

दोहा– चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा– चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जिनवाणी पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र के मुख से खिरती, दिव्य ध्वनि अतिशय पावन।
द्वादश कोठों में सब के हित, ॐकारमय मन भावना।।
द्वादशांग में जिसकी रचना, गणधर करते श्रेष्ठ महान्।
जिनवाणी का विशद हृदय में, करते आज यहाँ आह्वान्।।
हे जिनवाणी माँ ! भव्यों के तुम, अन्तर का अज्ञान हरो।
शरणागत बन आए शरण में, मात शीघ्र कल्याण करो।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

प्रभु भाव रहे मेरे कलुषित, वह शुद्ध नहीं हो पाए हैं।
जल सम निर्मलता पाने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या के कारण से हर क्षण, संतापित होते आए हैं।
चंदन समशीतलता पाने, यह चंदन घिसकर लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अखण्ड है सत्य एक, उसको हम जान न पाए हैं।
अब पद अखण्ड अक्षय पाने, यह अक्षत लेकर आए हैं।।

जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों के सुख पाने को, हम मोह में फँसते आए हैं।
अब मुक्ति पाने भोगों से, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के रस को चखने से, तृष्णा ही बढ़ाते आए हैं।
तन-मन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके हैं मोह-तिमिर में हम, अन्तर में झाँक न पाए हैं।
निज ज्ञान दीप जगमग करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप में सदियों से, परवश हो जलते आए हैं।
अब छाया पाने चेतन की, यह धूप जलाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं रत्नत्रय के फल अनुपम, वह फल हमने न पाए हैं।
अब सम्यक् दर्शन के प्रतिफल, पाने फल लेकर आए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ महाशक्ति की पुंज द्रव्य, उससे यह अर्घ्य बनाए हैं।
पाने अनर्घ पद अविनाशी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक निर्मल नीर से, देते हैं त्रय धार।
जीवन सुखमय शांत हो, होवे धर्म प्रचार।।

(शांतये शांतिधारा)

परम सुगंधित पुष्प यह, लेकर अपरम्पार।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल ।।

(चाल-टप्पा)

तीर्थंकर की दिव्य देशना, जग में सुखदाई।
लोका-लोक प्रकाशित होता, जिसकी प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

सम्यक् ज्ञान प्रदायक अनुपम जिनवाणी भाई।
सभी मिल पूजो हो भाई...

सप्त शतक लघु, महाभाषाएँ अष्टादश भाई।
अक्षर और अनक्षर अनुपम दोय रूप पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

ॐकारमय खिरे देशना, तीन काल भाई।
गणधर झेला करते जिसके, हिरदय हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

सप्त तत्त्व छह द्रव्य, प्रकाशक अतिशय दाई।
द्वादशांग में वर्णित पावन, शुभ मंगलदायी।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टि, भेद रूप गाई।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद की, महिमा दिखलाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

आचारांग में पद अष्टादश, सहस्र रहे भाई।
छत्तिस सहस पद, सूत्र कृतांग में, जानो सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

स्थानांग में सहस्र छियालिस, पद संख्या गाई।
समवायांग में लाख सु चौसठ, पद जानो भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

दोय लाख अट्ठाइस सहस्र, व्याख्या प्रज्ञप्ति।
पाँच लाख छप्पन हजार का, ज्ञातृ कथांग भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

ग्यारह लाख सत्तर हजार का, उपासकांग भाई।
तेईस लाख अट्ठाइस सहस्र का, अन्तर कृत भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

लक्ष बानवे सहस्र चवालिस, अनुत्तरांग भाई।
सोलह सहस्र लाख तेरानव, प्रश्न व्याकरणांग भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

एक करोड़ लाख चौरासी, विपाकसूत्र गाई।
चार करोड़ लक्ष पन्द्रह दो, सहस्र हुए भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

दृष्टिवाद के पंच भेद हैं, अतिशय सुखदाई।
द्रव्य भाई श्रुत दोय रूप में, कहा गया भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

एक सौ बारह कोटि तिरासी, लक्ष अधिक भाई।
सहसाट्ठावन पञ्च सर्व पद, जिनवाणी गाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

भक्ति भाव से भक्त सब, करते यही पुकार।
माँ जिनवाणी की कृपा, बरसे सदाबहार।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– माँ जिनवाणी सरस्वती, आदि हैं कई नाम।
वन्दन करते भाव से, करके विशद प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

समुच्चय मानस्तम्भ पूजा

(स्थापना)

धूलिसाल के मध्य सुमणिमय, चउदिश सुन्दर वीथी जान।
वीथी मध्य सुमानस्तम्भ है, समवशरण में आभावान।।
मानस्तम्भों के दर्शन से, मान गलित क्षण में हो जाय।
मानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्चना, किए कर्म शत्रु नश जाय।।

दोहा– **पूज रहे हम भाव से, अनुपम मानस्तम्भ।**
सम्यक् श्रद्धा प्राप्त हो, नशे मान छल दम्भ।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

मोह में फँसकर प्रभो ! नित, किया कितना पाप है।
कर्म का बंधन पड़ा यह, पाप का अभिशाप है।।
जन्म–मृत्यु अरु जरा का, रोग हरने आये हैं।
स्वर्ण झारी में मनोहर, नीर निर्मल लाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप के संताप से बहु, कर्म का अर्जन किया।
देव पूजा और भक्ती, नहीं जिन अर्चन किया।।
विभव का संताप हरने, शरण में हम आये हैं।
मलयगिरि का श्रेष्ठ चन्दन, सरस घिसकर लाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके पद अनेकों, कर्म से बँधते रहे।
उन पदों को प्राप्त करने, में अनेकों दुख सहे।।
सुपद अक्षय प्राप्त करने, हम शरण में आये हैं।
धवल अक्षत थाल में धर, हम चढ़ाने लाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम की ही कामना हम, नित्य प्रति करते रहे।
विषय भोगों में रमे अरु, व्यर्थ भव धरते रहे।।
काम बाधा नाश करने, हम शरण में आये हैं।
पुष्प ले पुष्पित मनोहर, हम चढ़ाने लाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा बाधायें हमेशा, जीव को व्याकुल करें।
व्यथित मन को नित करें जो, सर्व सुख–शांती हरें।।
क्षुधा रोग विनाश करने, हम शरण में आये हैं।
नैवेद्य यह चरणों चढ़ाने, थाल में भर लाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान की शुभ रोशनी से, मोहतम का नाश हो।
कर्म का आस्रव कराए, चतुर्गति में वास हो।।
मोहतम का नाश करने, हम शरण में आये हैं।
दीप यह अनुपम जलाकर, हम चढ़ाने लाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्मों ने हमेशा, घात चेतन का किया।
आत्मा की शक्ति का न, भान होने ही दिया।।
अष्ट कर्मों को नशाने, हम शरण में आये हैं।
धूप अग्नि में जलाने, हेतु हम यह लाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनेकों खाये निष्फल, हो गये हैं वह सभी।
मोक्ष फल की भावना, हमने नहीं भाई कभी।।
प्राप्त करने मोक्षफल शुभ, हम शरण में आये हैं।
फल अनेकों थाल में भर, हम चढ़ाने लाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद कोई शाश्वत रहे न, प्राप्त हमने जो किये।
इन पदों को प्राप्त करके, लोक में हम भी जिये।।
पद रहा शाश्वत जहाँ में, प्राप्त करने आये हैं।
अष्ट द्रव्यों का मनोहर, अर्घ्य देने लाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ चतुर्दिक स्थित जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- समवशरण में चतुर्दिश, बने मानस्तम्भ।
गाते हम जयमालिका, उनमें जो जिनबिम्ब।।

(चौपाई)

जय-जय समवशरण मनहारी, शोभा जिसकी अतिशयकारी।
मानस्तम्भ हैं विस्मयकारी, चतुर्दिशा में मंगलकारी।।
दर्शन चतुर्दिशा में होवें, सबके मन का कालुष खोवें।
प्रतिमाएँ अतिशय शुभकारी, वीतरागमय हैं अविकारी।।
गलित मान मानी का होवे, अज्ञानी की जड़ता खोवे।
जिनवर की है जो ऊँचाई, बारहगुणी हैं उसमें भाई।।
बारह योजन से दिख जाते, बीस योजन प्रकाश फैलाते।
तिय कोटों से घिरे हैं भाई, गोपुर चार बने सुखदाई।।
अभ्यन्तर बावड़ियाँ जानो, उपवन देव सहित पहिचानो।
वरुण कुबेर सोम यह भाई, लोकपाल चऊदिक् सुखदाई।।
कटनी तीन बीच में जानो, वैडूर्य स्वर्ण रत्नमय मानो।
द्वय कटनी पर द्रव्य सजाते, मंगल द्रव्य ध्वजादी पाते।।
मानस्तम्भ तीजी पर जानो, मूल भाग वज्रमय मानो।
मूल भाग चौकोर कहाया, ऊपर गोलाकार बताया।।
पहलू दो हजार कहलाए, मनहर चमकदार बतलाए।
छत्र चँवर घंटा किंकणियाँ, रत्नहार शोभित हैं मणियाँ।।
प्रातिहार्य सोहें वसु भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।

चतुर्दिशा में दर्शन मिलते, हृदय कमल भव्यों के खिलते।।
क्षीरोदधि से जल भर लाते, बिम्बों का अभिषेक कराते।
सुर-नर अष्ट द्रव्य ले आवें, पूजा करके नाचें-गावें।।
बावड़िया पूरब में जानो, नन्दीमति नन्दोत्तर मानो।
नंदी नन्दीघोषा भाई, कमल कुमुदमय हैं सुखदाई।।
दक्षिण मानस्तम्भ में जानो, विजय और वैजयन्त भी मानो।
जय अरु अपराजित भी सोहें, जो भव्यों के मन को मोहें।।
पश्चिम में बावड़ियाँ भाई, सुप्रबुद्ध कुमुदा कहलाई।
अरु पुण्डरीक अशोका जानो, निर्मल नीर कुमुदयुत मानो।।
प्रभंकरा उत्तर में जानो, सुप्रतिबद्धा भी पहिचानो।
वापी है महानन्दा भाई, हृदया-नन्दी भी सुखदाई।।
मणिमय सीढ़ी इनमें जानो, द्वय बाजू द्वय कुण्ड बखानो।
सुर-नर-पशु कुण्डों में जावें, पग धूली धो शुद्धि पावें।।
बावड़िया सोलह ये जानो, महिमा अतिशय इनकी मानो।
सारस हंस बतख कई भाई, कलरव करते हैं सुखदाई।।
फूल खिले हैं अतिशयकारी, श्रेष्ठ रहे हैं जो मनहारी।
धन्य घड़ी दिवस है न्यारा, जागा है सौभाग्य हमारा।।
मिले प्रभु का दर्शन प्यारा, चरण-शरण का मिले सहारा।

दोहा- समवशरण जिनदेव के, आगे मानस्तम्भ।
दर्शन करके नाश हों, 'विशद' मान छल दम्भ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिकसम्बन्धि मानस्तम्भ स्थित जिन प्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जीव जो भक्ति भाव से, समवशरण पूजा करते।
पुण्य योग से भव-भव के वह, अपने सारे दुख हरते।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, कल्याणक पाँचों पाते।
'विशद' ज्ञान को पाने वाले, अनुक्रम से शिवपुर जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान, महिमा महान् मंगलकारी।
शिव भर्तारी सुख भंडारी, सर्वज्ञ सुखारी त्रिपुरारी।।
तुम धर्मसेत करुणानिकेत, आनन्द हेत अतिशय धारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कन्द, दुख–द्वन्द फन्द संकटहारी ।।
आवाह्न करके आज तुम्हें, अपने मन में पधराऊँगा।
अपने उर के सिंहासन पर, गद–गद हो तुम्हें बिठाऊँगा।
मेरा निर्मल मन टेर रहा, हे नाथ ! हृदय में आ जाओ।
मेरे सूने मन मन्दिर में, पारस भगवान समा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

भव वन में भटक रहा हूँ मैं, भर सकी न तृष्णा की खाई।
भव सागर के अथाह दुख में, सुख की जल बिन्दु नहीं पाई।।
जिस भांति आपने तृष्णा पर, जय पाकर तृषा बुझाई है।
अपनी अतृप्ति पर अब, तुमसे जय पाने की सुधि आई है।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित हो क्रूर कमठ ने जब, नभ से ज्वाला बरसाई थी।
उस आत्मध्यान की मुद्रा में, आकुलता तनिक न आई थी।।
विघ्नों पर बैर–विरोधों पर, मैं साम्यभाव धर जय पाऊँ।
मन की आकुलता मिट जाये, ऐसी शीतलता पा जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने कर्मों पर जय पाकर, मोती सा जीवन पाया है।
यह निर्मलता मैं भी पाऊँ, मेरे मन यही समाया है।।

यह मेरा अस्तव्यस्त जीवन, इसमें सुख कहीं न पाता हूँ।
मैं भी अक्षय पद पाने को, शुभ अक्षत तुम्हें चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्मवाद के पुष्पों से, जीवन फुलवारी महकाई।
जितना जितना उपसर्ग सहा, उतनी उतनी दृढ़ता आई।।
मैं इन पुष्पों से वञ्चित हूँ, अब इनको पाने आया हूँ।
चरणों पर अर्पित करने को, कुछ पुष्प संजोकर लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, अन्तर की क्षुधा मिटा डाली।
अपरिग्रह की आलोक शक्ति, अपने अन्दर ही प्रगटा ली।।
भटकाती फिरती क्षुधा मुझे, मैं तृप्त नहीं हो पाया हूँ।
इच्छाओं पर जय पाने को, मैं शरण तुम्हारी आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने अज्ञान अंधेरे में वह, कमठ फिरा मारा मारा।
व्यन्तर विमानधारी था पर, तप के उजियारे से हारा।।
मैं अंधकार में भटक रहा, उजियारा पाने आया हूँ।
जो ज्योति आप में दर्शित है, वह ज्योति जगाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने तपके दावानल में, कर्मों की धूप जलाई है।
जो सिद्ध शिला तक आ पहुंची, वह निर्मल गंध उड़ाई है।।
मैं कर्म बन्धनों में जकड़ा, भव बन्धन से घबराया हूँ।
वसु–कर्म दहन के लिये, तुम्हें मैं धूप चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम महा तपस्वी शान्ति मूर्ति, उपसर्ग तुम्हें न डिगा पाये।
तप के फल ने पद्मावति के, इन्द्रों के आसन कम्पाये।।

ऐसे उत्तम फल की आशा मैं, मन में उमड़ी पाता हूँ।
ऐसा शिव सुख फल पाने को, फल की शुभ भेंट चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संघर्षों में उपसर्गों में, तुमने समता का भाव धरा।
आदर्श तुम्हारा अमृत-बन, भक्तों के जीवन में बिखरा।।
मैं अष्ट द्रव्य से पूजा का, शुभ थाल सजा कर लाया हूँ।
जो पदवी तुमने पाई है, मैं भी उस पर ललचाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

वैशाख कृष्ण दुतिया के दिन तुम, वामा के उर में आये।
श्री अश्वसेन नृप के घर में, आनन्द भेरे मंगल छाये।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पौष कृष्ण एकादशि को, धरती पर नया प्रसून खिला।
भूले भटके भ्रमते जग को, आत्मोन्नति का आलोक मिला।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादशी दिने जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशि पौष कृष्ण के दिन, तुमने संसार अथिर पाया।
दीक्षा लेकर आध्यात्मिक पथ, तुमने तप द्वारा अपनाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादशी दिने तपोमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिच्छत्र धरा पर जी भर कर, की क्रूर कमठ ने मनमानी।
तब कृष्णा चैत्र चतुर्थी को, पद प्राप्त किया केवलज्ञानी।।

यह वन्दनीय हो गई धरा, दश भव का बैरी पछताया।
देवों ने जय जयकारों से, सारा भूमण्डल गुञ्जाया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिवसे श्रीअहिच्छत्रतीर्थे ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्रावण शुक्ला सप्तमि के दिन, सम्मेदशिखर ने यश पाया।
'सुवरणगिर' भद्रकूट से जब, शिव मुक्तिरमा को परिणाया।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां सम्मेदशिखरस्य सुर्वणभद्रकूटाद् मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(शम्भू छन्द)

सुरनर किन्नर गणधर फणधर, योगीजन ध्यान लगाते हैं।
भगवान तुम्हारी महिमा का, यशगान मुनीवर गाते हैं।।
जो ध्यान तुम्हारा ध्याते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो शरण तुम्हारी रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुम कर्मदली तुम महाबली, इन्द्रियसुख पर जय पाई है।
मैं भी तुम जैसा बन जाऊँ, मन में यह आज समाई है।।
तुमने शरीर औ आत्मा के, अंतर स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह तजा, निश्चय स्वरूप पहिचाना है।।
तुम द्रव्य मोह, औ भाव मोह, इन दोनों से न्यारे न्यारे।
जो पुद्गल के निमित्त कारण, वे रागद्वेष तुमसे हारे।।
तुम पर निर्जन वन में बरसे, ओले-शोले पत्थर पानी।
आलोक तपस्या के आगे, चल सकी न शठ की मनमानी।।
यह सहन शक्तियों का बल है, जो तप के द्वारा आया था।
जिसने स्वर्गों में देवों के, सिंहासन को कम्पाया था।।
'अहि' का स्वरूप धरकर तत्क्षण, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।
ध्यानस्थ आप के ऊपर प्रभु, फण-मण्डप बनकर छाया था।।

उपसर्ग कमठ का नष्ट किया, मस्तक पर फणमण्डप रचकर।
पद्मादेवी ने उठा लिया, तुमको सिर के सिंहासन पर।।
तप के प्रभाव से देवों ने, व्यंतर की माया विनशाई।
पर प्रभो आपकी मुद्रा में, तिलमात्र न आकुलता आई।।
उपसर्गों का आतंक तुम्हें, हे प्रभु ! तिलभर न डिगा पाया।
अपनी विडम्बना पर बैरी, असफल हो मन में पछताया।।
शठ कमठ बैर के वशीभूत, भौतिक बल पर बौराया था।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, यह मूरख समझ न पाया था।
दश भव तक जिसने बैर किया, पीड़ायें देकर मनमानी।
फिर हार मानकर चरणों में, झुक गया स्वयं वह अभिमानी।।
यह बैर महा दुखदायी है, यह बैर न बैर मिटाता है।
यह बैर निरन्तर प्राणी को, भवसागर में भटकाता है।।
जिनको भव सुख की चाह नहीं, दुख से न जरा भय खाते हैं।
वे सर्व–सिद्धियों को पाकर, भव सागर से तिर जाते हैं।।
जिसने भी शुद्ध मनोबल से, ये कठिन परीषह झेली हैं।
सब ऋद्धि–सिद्धियाँ नत होकर, उनके चरणों पर खेली हैं।।
जो निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप तुमने पाया।
ऐसा पवित्र पद पाने को, मेरा अन्तर मन ललचाया।।
कार्माण वर्गणायें मिलकर, भव वन में भ्रमण कराती हैं।
जो शरण तुम्हारी आते हैं, ये उनके पास न आती हैं।।
तुमने सब बैर विरोधों पर, समदर्शी बन जय पाई है।
मैं भी ऐसी समता पाऊँ, यह मेरी हृदय समाई है।।
अपने समान ही तुम सबका, जीवन विशाल कर देते हो।
तुम हो तिखाल वाले बाबा, जग को निहाल कर देते हो।।
तुम हो त्रिकालदर्शी तुमने, तीर्थंकर का पद पाया है।
तुम हो महान अतिशयधारी, तुम में आनन्द समाया है।।

चिन्मूरति आप अनंतगुणी, रागादि न तुमको छू पाये।
इस पर भी हर शरणागत पर, मनमाने सुख साधन आये।।
तुम रागद्वेष से दूर दूर, इनसे न तुम्हारा नाता है।
स्वयमेव वृक्ष के नीचे जग, शीतल छाया पा जाता है।।
अपनी सुगन्ध क्या फूल कहीं, घर घर आकर बिखराते हैं।
सूरज की किरणों को छूकर, सुमन स्वयम् खिल जाते हैं।।
भौतिक पारसमणि तो केवल, लोहे को स्वर्ण बनाती है।
हे पार्श्व ! प्रभो तुमको छूकर, आत्मा कुन्दन बन जाती है।।
तुम सर्व शक्ति धारी हो प्रभु, ऐसा बल मैं भी पाऊँगा।
यदि यह बल मुझको भी दे दो, फिर कुछ न मांगने आऊँगा।।
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे दया सिन्धु ! स्वीकारो तुम।
जैसे तुम जग से पार हुये, मुझको भी पार उतारो तुम।।
जिसने भी शरण तुम्हारी ली, वह खाली हाथ न आया है।
अपनी अपनी आशाओं का, सबने वांछित फल पाया है।।
बहुमूल्य सम्पदायें सारी, ध्याने वालों ने पाई हैं।
पारस के भक्तों पर निधियाँ, स्वयमेव सिमट कर आई हैं।।
जो मन से पूजा करते हैं, पूजा उनको फल देती है।
प्रभु–पूजा भक्त पुजारी के, सारे संकट हर लेती है।।
जो पथ तुमने अपनाया है, वह सीधा शिव को जाता है।
जो इस पथ का अनुयायी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।

ॐ ह्रीं श्रीअहिच्छत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवान को, जो पूजे धर ध्यान।
उसे लोक परलोक के, मिलें सकल वरदान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन

स्थापना

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरि अरु, महावीर पावापुर ग्राम।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश।।
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।
विशद भाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग की माया में फंसकर, कई जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं।।
जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।
चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं।।
संसार ताप मिट जाए आज, हम चंदन चरण चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।
हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं।।

अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।
उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है।।
हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।
प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है।।
मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरुवर सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।
हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए।।
अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।
आठों अंगों को बांध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं।।
हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नि में धूप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए पूर्व में कर्म कई, वह सभी उदय में आते हैं।
फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामिति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।

तर्ज – श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय–जय तीर्थ परम पद दाय।।
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।।
महासुखदाय ...।।

यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय।। महासुखदाय.।।

आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीष झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय।। महासुखदाय.।।

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय।। महासुखदाय.।।

वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आय, भक्ति करके हर्ष मनाय।। महासुखदाय.।।

चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो ! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय।। महासुखदाय.।।

ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय।। महासुखदाय.।।

शम्भू आदिक अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय।। महासुखदाय.।।

पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय।। महासुखदाय.।।

महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारंबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ती को पाय।। महासुखदाय.।।

पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय।। महासुखदाय.।।

बोल रहे हम जय–जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय।। महासुखदाय.।।

दोहा – पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहंत पूजा

स्थापना

हे परमेष्ठी! हे परमातम ! सर्वज्ञ प्रभु केवल ज्ञानी।
हे तीन लोक के अधिनायक ! हे धर्म सुधामृत के दानी।।
हे परम शांत जिन वीतराग ! प्रभु सर्व चराचर उपकारी।
हे चिदानन्द आनन्द कन्द ! अरहन्त प्रभु संकट हारी।।
हे कृपा सिन्धु करुणा निधान ! बश इतना सा उपकार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो ! अब मेरा भी उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(वीर छन्द)

भव-भव में जल पीते-पीते, हम तृषा शान्त न कर पाए ।
अब जिन पद की गंगा का जल, पाने प्रभु आज चरण आए ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग के वैभव की चाह दाह, जग में ही भ्रमण कराती है ।
प्रभु पद की राह शीघ्रता से, क्षण में भव भ्रमण नशाती है ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के कृत कर्म निजातम को, इस भव वन में भटकाते हैं ।
अक्षत ले पूजन करने से, अक्षय पद में पहुँचाते हैं ।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ! आपकी पूजा शुभ, मन को नित निर्मल करती है ।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, भव काम वासना हरती है ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्यंजन तज अनशन करके प्रभु, निज आतमबल प्रगटाए हैं ।
नैवेद्य करूँ अर्पित पद में, प्रभु क्षुधा नशाने आए हैं ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीप शिखा जगमग करती, होता बाहर में उजियारा ।
अब अन्तर ज्ञान का दीप जले, नश जाए मोह का अंधियारा ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों अंगों में अष्टकर्म, प्रभु मेरे बन्धन डाले हैं ।
हम कर्म नशाने हेतु प्रभु, शुभ गंध जलाने वाले हैं ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि पाने हेतु प्रभु, हम शरण आपकी आए हैं ।
भव भ्रमण नाश मुक्ति पाएँ, इस हेतु विविध फल लाए हैं ।।

श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विविध कर्म के पुञ्ज प्रभु, सदियों से सताते आए हैं ।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु, वसु द्रव्य सजाकर लाए हैं ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम, कर्म घातिया नाश किए ।
जिन चरणों शीश झुकाते हैं, जो केवल ज्ञान प्रकाश किए ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– कर्म घातिया नाशकर, पावें पद अरहंत ।
शीश झुकाते चरण में, सुर नर मुनि सब संत ।।

तुम जग जीवन के युग दृष्टा, सद्ज्ञान प्रदाता अर्हन्त देव ।
हे धर्म ! तीर्थ के उन्नायक, पुरूषार्थ साध्य साधन सुदेव ।।
हे तीर्थंकर ! तव वाणी का, सर्वत्र गूँजता जयकारा ।
हे रत्नत्रय! के सूत्र धार, तुमने जग से जग को तारा ।।
हे अरिनाशक अरिहंत प्रभु !, कई होते चरणों चमत्कार ।
सद् भक्त आपके द्वारे पर, वन्दन करते हैं बार–बार ।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, सर्वज्ञ देव जिन वीतराग ।
हे मानवता के मुक्ति दूत!, न तुमको जग से रहा राग ।।
हित मित प्रिय वचनों को जिनेश, यह नियति सदा दोहराएगी ।
हे परम पिता ! हे जगत ईश !, प्रकृति भी तव गुण गाएगी ।।
तव दर्शन करने से जग के, सारे संकट कट जाते हैं ।
जो चरण शरण में आते है, वह मन वांछित फल पाते हैं ।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं ।
वह भी अर्हत् बन जाते हैं, जो अर्हन्तों को ध्याते हैं ।।

जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, अरु सम्यक् तप को पाते हैं ।
वह पञ्च महाव्रत समिति पञ्च, अरु इन्द्रिय जय भी पाते हैं ।।
मन को स्थिर कर गुप्ती से, षट्आवश्यक पालन करते ।
निज हाथों करते केश लुंच, शुभ वीतरागता को धरते ।।
करते हैं अतिशय भव्य कई, चरणों में शीश झुकाते हैं ।
तब देवलोक से देव कई, जिन भक्ती करने आते हैं ।।
प्रभु दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य, सुख अनन्त चतुष्टय पाते हैं ।
फिर केवल ज्ञान प्रगट होता, वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हैं ।।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ नत होकर, जिनके चरणों में आश्री हैं ।
जो शरणागत बनकर पद में, नत होकर के झुक जाती हैं ।।
ऐसा निर्मल पावन पवित्र, जो पद प्रभु तुमने पाया है ।
उस पद को पाने हेतु प्रभु, मन मेरा भी ललचाया है ।।
जो चलें प्रभु के कदमों पर, वह भी अर्हत् हो जाएगा ।
वह कर्म नाशकर अपने सारे, मुक्ति वधु को पाएगा ।।
हे धर्म ! ध्वजा के अधिनायक! हे 'विशद' ज्ञान ज्योति ललाम!।
हे कृपा! सिन्धु करुणा निधान! चरणों में हो शत्–शत् प्रणाम ।।

(छन्द घत्तानंद)

श्री जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, कोटि नमामि जगगाता।
हे जगत् उपाशक, पाप विनाशक, अर्हत् प्रभु जग के ज्ञाता।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कवित्त रूपक)

संयम रतन विभूषण भूषित, नाशक दूषण श्री जिनराज।
सुमति रमा रंजन भव भंजन, तीन लोक के प्रभु सरताज।।
अमल अखण्डित सकल सुमंगल, भव तारक अघ हरन जहाज।
तारण तरण श्री जिन चरणों, आए भाव सुमन ले आज।।

।। इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

श्री सिद्ध पूजा

स्थापना

अधिपति हैं प्रभू धवल वन के, स्वर्णिम सौन्दर्य विमल पावन ।
अक्षय हैं अनुपम अविनाशी, प्रभु शौर्य आपका मन भावन ।।
हे सिद्ध शिला के अधिनायक ! शुभ ज्ञान मूर्ति चैतन्य धाम ।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, हे चिर ज्योति! अमृत ललाम ।।
ये भक्त खड़े हैं चरणों में, इनकी विनती स्वीकार करो ।
तुम अहो पतित पावन प्रभुवर, अब मेरा भी उद्धार करो ।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

हे प्रभु! हमारे मन के सब, कलुषित भावों को निर्मल कर दो ।
हम आये निर्मल नीर लिए, प्रभु सरल भावना से भर दो ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक रहे हैं सदियों से, संसार ताप का नाश करो ।
यह सुरभित चंदन लाये प्रभु, मम् हृदय में ज्ञान सुवास भरो ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तंदुल कर में लाये, अक्षय विश्वास लिए उर में ।
हम भाव सहित गुणगान करें, भक्ति के गीत भरो स्वर में ।।

हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की ज्वाला हे भगवन् ! हम आये आज नशाने को ।
श्रद्धा के सुन्दर सुमन लिए, अब आये नाथ चढ़ाने को ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित व्यंजन खाए लेकिन, मिट सकी न मन की अभिलाषा ।
नैवेद्य चरण में लाये हैं, मिट जाए भोजन की आशा ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर में मोह तिमिर छाया, इसने जग में भरमाया है ।
अब मोह अंध के नाश हेतु, भावों का दीप जलाया है ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फँसकर के जग मिथ्यामति में, सारे जग को अपनाये हैं ।
अब धूप दहन करके भगवन्, भव कर्म जलाने आए हैं ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों में मानस रमता है, पर तृप्त कभी न हो पाए ।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह भाव सहित फल ले आए ।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्ध चक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

होगा अनन्त सुख प्राप्त हमें, यह भाव बनाकर लाये हैं।
हम अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्यं बनाकर आये हैं।।
हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **सिद्ध अनन्तानन्त पद, वन्दन करें त्रिकाल ।**
अष्ट मूलगुण प्राप्त जिन, की गाते जयमाल ।।

पद्धडि छंद

जय–जय अखण्ड चैतन्य रूप, तुम ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप ।
रागादि विकारी भाव हीन, तुम हो चित् चेतन ज्ञान लीन ।।
निर्द्वन्द निराकुल निर्विकार, निर्मम निर्मल हो निराधार ।
कर राग द्वेष नो कर्म नाश, स्वभाविक गुण में किए वास ।।
जय शिव वनिता के हृदय हार, प्रभु नित्य निरंजन निराकार ।
कर निज परिणति का सत्य भान, सद्धर्म रूप शुभ तत्त्व ज्ञान ।।
प्रभु अशरीरी चैतन्यराज, अविरूद्ध शुद्ध शिव सुख समाज ।
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान ।।

अवगाह वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर हैं अगाध ।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना चित् चेतन उपादेय ।।
रागादि रहित निर्मल निरोग, स्वाश्रित शाश्वत् शुभ सुखद भोग ।
कुल गोत्र रहित निश्कुल निश्छल, मायादि रहित निश्चल अविकल ।।
चैतन्य पिण्ड निष्कर्म साध्य, तुम हो प्रभु भविजन के आराध्य ।
मनसिज ज्ञायक प्रतिभाष रूप, हे स्वयं सिद्ध! चैतन्य भूप ।।
चैतन्य विलासी द्रव प्रमाण, नाशे प्रभु सारे कर्म बाण ।
प्रभु जान के हम तुम्हें आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज ।।
प्रगट्यो मम् उर में भेद ज्ञान, न तुम सम है कोई महान ।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, हम जोड़ प्रार्थना करें हाथ ।।
तुम ज्ञाता सबके एक साथ, तव चरणों में झुक गया माथ ।
ये भक्त खड़े हैं विनयवन्त, प्रभु करो शीघ्र भव का सुअन्त ।।
अब हमने भी यह लिया जान, तुम करते सबको निज समान ।
जय वीतराग चैतन्य वान, जय–जय अनन्त गुण के निधान ।।
तुममें पर का कुछ नहीं लेश, तुम हो जग के ज्ञायक जिनेश ।
जो करें आपका 'विशद' ध्यान, वह पाते हैं कैवल्य ज्ञान ।।
फिर करें कर्म का पूर्ण अन्त, हो जाएँ क्षण में श्री संत ।
तब सिद्ध सिला पर हो विश्राम, निज पद ही हो आनन्द धाम ।।
मेरे मन आवें यही देव, बन जाएँ हम भी विशद एव ।
मिट जाए आवागमन नाथ, वह पद पाने पद झुका माथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री सिद्ध अनन्ता, शिव तिय कन्ता, वीतराग विज्ञान परं ।
जय जग उद्धारं शिव दातारं, सर्व मनोहर सौंख्य करं ।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक अनन्तानन्त श्री सिद्ध परिमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – **चिदानन्द चिद् ब्रह्म में, चिर निमग्न चैतन्य ।**
चित् चिन्तन चिद्रूप हो, चिन्मय चेतन जन्य ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

हे विश्व वंद्य! हे करुणानिधि! वात्सल्य मूर्ति हे रत्नाकर !
हे युग प्रधान! हे वर्धमान! हे सौम्यमूर्ति ! हे करुणाकर ।।
त्रैलोक्य पूज्य हे समदृष्टा! हे पुण्य-पुंज ! ऋषिवर प्रधान ।
हे ज्ञान सूर्य! आचार्य प्रवर, तव 'विशद' हृदय में आह्वानन् ।।
हे गुरुवर ! गुरु गुण के धारी, हमको सद् राह दिखा दीजे ।
हे मोक्ष मार्ग के अधिनायक !, हमको गुरु चरण-शरण लीजे ।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कर्म कलंक पंक मल धोने, निर्मल जल भर लाये हैं ।
जन्म जरा मृतु रोग नशाने, गुरु चरणों में आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।1।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमक-दमक मय महक मनोहर, मंगल चंदन लाये हैं ।
पाप शाप संताप मिटाने, गुरु गुण गाने आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।2।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय अक्षत अनुपम सुन्दर, अंजलि भरकर लाये हैं ।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें गुरु, चरण शरण में आये हैं ।।

भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।3।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से रंजित अक्षत हम, फूल मानकर लाये हैं ।
काम वासना नाश करो गुरु, पद में सुमन चढ़ाये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।4।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नैवेद्य श्रीफल द्वारा, श्रेष्ठ बनाकर लाये हैं ।
क्षुधा वेदना शान्त करो गुरु, तव चरणों को ध्याये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।5।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित शुभ दीप सुमंगल, आरती करने लाये हैं ।
निशा नाश हो मोह तिमिर की, तुम सा बनने आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।6।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महकें दशों दिशायें जिससे, धूप दशांगी लाये हैं ।
अष्ट कर्म का दमन करो गुरु, कर्म शमन को आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।7।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला आम सुपाड़ी, लोंग श्रीफल लाये हैं ।
मोक्ष महाफल पाने को शुभ, भाव बनाकर आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।8।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य सु सुंदर, थाल संजोकर लाये हैं ।
पद अनर्घ पाने को गुरुवर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं ।।
भाव सहित हम विशद योग से, चरणों शीश झुकाये हैं ।
भव सागर से पार करो गुरु, तव चरणों में आये हैं ।।9।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– भरा हुआ जिनके हृदय, जीवों से अनुराग ।
मुक्ति के राही परम, नहीं किसी से राग ।।
भरत भूमि को धन्य कर, लिया आप अवतार ।
मात पिता जननी सभी, मान रहे उपकार ।।

तर्ज – भक्तामर की (वीर छंद)

सम्यक् श्रद्धा की गुण मणियाँ, मोह तिमिर की हैं नाशक ।
चित् स्वरूप चेतन के गुण की, दिनकर सम हैं जो भासक ।।
सम्यक् श्रद्धा हम पा जायें, गुरुवर दो हमको आशीष ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।
लोकालोक प्रकाशित करता, भव्य जनों को सम्यक् ज्ञान ।
चेतन और अचेतन का तब, स्वयं आप हो जाता भान ।।
सम्यक् ज्ञान निधि देने को, गुरुवर बन जाओ आदीष ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।

कर्म कालिमा का नाशक है, पृथ्वी तल पर सदाचरण ।
सत् संयम पालन करने को, संतों की है श्रेष्ठ शरण ।।
सम्यक् चारित पाने हेतु, चरणों में झुकते आधीष ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।
शीतल आभा से विकसित है, जैसे नभ से चन्द्र किरण ।
चेतन को कुंदन करता है, जग में सम्यक् तपश्चरण ।।
सम्यक् तप की अभिलाषा है, चरण शरण दो हमें मुनीश ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।
निज शक्ती को नहीं छिपाकर, पालन करते वीर्याचार ।
शुभ भावों से स्वयं शुद्ध हो, हो जाते हैं भव से पार ।।
वीर्याचार करूँ मैं पालन, गुरुवर ऐसा दो आशीष ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तिय, षट् आवश्यक पाल रहे ।
पंचेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, पंचाचार संभाल रहे ।।
वाणी से वचनामृत देते, भव्यजनों को हे वागीश !
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, पालन करते जो निर्दोष ।
द्वादश अनुप्रेक्षा के चिंतक, गुरुवर रत्नत्रय के कोष ।।
रत्नत्रय का दान हमें दो, 'विशद' योग से हे योगीश! ।
श्री आचार्य प्रवर के चरणों, झुका रहे हम अपना शीश ।।

दोहा – छत्तिस गुण धारी परम, करते तुम्हें प्रणाम ।
चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम ।।

ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरण शरण के दास की, लगी है मन में आश।
ज्ञान ध्यान तप शील का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी जो ज्ञाता विद्वान ।
रत्नत्रय का पालन करते, उपाध्याय हैं सर्व महान् ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, निर्विकार अविकारी हैं ।
मोक्षमार्ग के अधिनायक गुरु, जग में मंगलकारी हैं ।।
करते ज्ञानाभ्यास निरन्तर, संतों को करवाते हैं ।
उपाध्याय का आह्वानन् कर, अपने हृदय बसाते हैं ।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय धारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सहज सुनिर्मल जल के अनुपम, कलश भरें मंगलकारी ।
त्रिविधि रोग का नाश होय मम्, पद पाएँ हम अविकारी ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलें हमेशा, पाएँ हम पद निर्वाण ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व.स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान का शीतल चंदन, भव आतप का करता नाश ।
मोह महातम हरता है जो, करता ज्ञान स्वरूप प्रकाश ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलें हमेशा, पाएँ हम पद निर्वाण ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

पावन सहज भाव के अक्षत, अक्षय पद प्रगटाते हैं ।
पुण्य पाप आस्रव के कारण, उनका नाश कराते है ।।

उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के पुष्पों की शुभ, गंध परम सुखदायी है ।
काम बाण की नाशक है जो, महाशील शिवदायी है ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा अग्नि से बहुत दुखी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं ।
परम तृप्ति दायक समभावी, चरुवर परम चढ़ाते हैं ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम विशद ज्ञान के दीपक, मोह महातम नाशक हैं ।
मिथ्यातम के पूर्ण विनाशक, लोकालोक प्रकाशक हैं ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान की धूप मनोहर, अष्ट कर्म की नाशक है ।
नित्य निरन्जन शिव सुखदायी, आतम ध्यान विकाशक है ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज स्वभावी आत्म ध्यान के, रसमय फल सुखदायक हैं ।
रत्नत्रय के पावन फल ही, मोक्ष मार्ग दर्शायक हैं ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।8।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अष्ट द्रव्य का पावन, अर्घ्य परम आनन्द मयी ।
पद अनर्घ अपवर्ग रूप है, मंगलमय त्रैलोक्य जयी ।।
उपाध्याय की चरण वन्दना, करके पाएँ सम्यक् ज्ञान ।
मोक्ष मार्ग पर चलूँ हमेशा, पा जाएँ हम पद निर्वाण ।।9।।

ॐ ह्रौं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – उपाध्याय की वन्दना, करते रहें त्रिकाल ।
विशद भाव से गा रहे, तिन गुण की जयमाल ।।

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान ।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार ।।
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीश ईश ।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन ।।
जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञान गत गुण प्रवीण ।
जय आतापन आदि योग धार, जो करते हैं निज में विहार ।।
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित्र उर वसाय ।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश ।।

जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीश ।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दे सद् ज्ञान दान ।।
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश ।
जाय काम कषाएँ किए क्षीण, जय तत्त्व देशना में प्रवीण ।।
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरव लिए जान ।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ ।।
जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग–पग विचार ।
जय सौम्य मूर्ति हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत ।।
जय–जय गुण गरिमा जग प्रधान, जय भव्य कमल विज्ञान वान ।
जय–जय परमेष्ठी हुए आप, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप ।।
जय–जय करुणाकर कृपावन्त, तब हुए जगत् में सकल संत ।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान ।।
तुम पाए गुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार ।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी, विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाएँ ।
भव ताप निवारी, बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याएँ ।।

ॐ ह्रौं पंचविंशतिगुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा – उपाध्याय को पूजकर, पाते ज्ञान निधान।
सुख शांति को प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद ।। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सर्व साधु पूजन

स्थापना

जो पंच भरत ऐरावत में, रहते हैं बीस विदेहों में ।
कम तीन कोटि नव संत विशद, फँसते न गेह सनेहों में ।।
जिन संतों के सद्गुण पाने, हम उनके गुण को गाते हैं ।
हम भाव सहित पूजा करते, चरणों में शीश झुकाते हैं ।।
जो रत्नत्रय के धारी हैं, हम करते उनका आह्वानन् ।
चरणों में सर्व साधुओं के, शत् शत् वन्दन शत्–शत् वन्दन ।।

ॐ ह्रः अष्टविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

तजें मिथ्या मोह मद को, भाव समकित से भरें ।
ज्ञान का निर्मल सलिल ले, चरण में अर्पित करें ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।1।।

ॐ ह्रः श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भूलकर निज को हमारा, बढ़ रहा संसार है ।
चरण चन्दन में चढ़ाएँ, पाना भव से पार है ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।2।।

ॐ ह्रः श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भ्रमण का नाश हो मम्, विषय भावों को ततें ।
धवल अक्षत हम चढ़ाएँ, साम्यभावों से सजें ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।3।।

ॐ ह्रः श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चित्त विचलित कर रहा यह, प्रबल कारी काम है ।
पुष्प अर्पित करें पद में, कई जिनके नाम हैं ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।4।।

ॐ ह्रः श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा की पीड़ा सताती, पूर्ण न होवे कभी ।
सरस व्यंजन हम चढ़ाएँ, करें अर्पित हम सभी ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।5।।

ॐ ह्रः श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम घना मिथ्यात्व का है, नाश उसका हम करें।
ज्ञान के दीपक जलाकर, तिमिर को भी परि हरें।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन्।।6।।

ॐ ह्रः श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण करते फिर रहे हैं, हम अनादि से विभो !
अष्ट कर्मों को जलाएँ, धूप अग्नि में प्रभो !

विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।7।।

ॐ ह्: श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनेकों पाए लेकिन, हुए सारे ही विफल ।
हम विविध फल चरण लाये, प्राप्त हो अब मोक्षफल ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।8।।

ॐ ह्: श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य लेकर, करें हम अर्पित चरण ।
महाव्रतादि प्राप्त करके, पाएँ हम पण्डित मरण ।।
विषय आशा को तजें हम, करें शिवसुख का यतन ।
लोकवर्ती साधुओं के, चरण में शत्–शत् नमन् ।।9।।

ॐ ह्: श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विषयाशा का त्याग कर, पालें गुण अठबीस ।
तिन गुण की जयमाल कर, 'विशद' झुकाएँ शीश ।।

जय वीतरागधारी मुनीश, तव पद में वन्दन करें ईश ।
जय पंच महाव्रत लिए धार, जो समिति पालते कर विचार ।।
जय–मन इन्द्रिय को वश करेय, फिर षट् आवश्यक चित्त देय ।
मुनि क्षिति शयन गुण रहे पाल, निज हाथों नोचे स्वयं बाल ।।
जय वस्त्राभूषण किए त्याग, जिनको तन से न रहा राग ।
जय स्थित होकर लें आहार, जो लघु भोजन लें एक बार ।।
जय न्हवन आदि छोड़ें मुनीश, तिनके चरणों मम् झुका शीश ।
जय दातुन मंजन दिए छोड़, भोगों से नाता लिए तोड़ ।।

सब जीवों के रक्षक मुनीश, जय सत्य महाव्रत धार ईश ।
जय व्रत के धारी हैं अचौर्य, जय ब्रह्मचर्य का लेय शौर्य ।।
जय परिग्रह चौबीस त्यागहीन, जो वीतराग मय ध्यान लीन ।
जय चार हाथ भूमि विहार, शुभ देखभाल करते निहार ।।
जय वचन बोलते कर विचार, अरु भूमि शोध करते निहार ।
जय देख शोध लेवें अहार, जो वस्तु रख लेवें विचार ।।
व्युत्सर्ग समिति में प्रवीण, वीतराग मय ध्यान लीन ।
जय स्पर्शन को लिए जीत, जो रसना के न हुए मीत ।।
जय गंध दोय जीते मुनीश, चक्षु इन्द्रिय के बने ईश ।
जय कर्णेन्द्रिय के विषय जीत, सब त्याग किए हैं बाद्य गीत ।।
मुनि अट्ठाईस गुण रहे पाल, वह त्याग किए सब जगत् जाल ।
हम करते वन्दन जोड़ हाथ, उनके चरणों यह झुका माथ ।।
हम लेकर आए द्रव्य साथ, अब करो कर्म का गुरु घात ।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, अब दीजे हमको मुक्तिवास ।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनि अविकारी, संयम धारी, रत्नत्रय के कोष महान् ।
मंगलकारी, ज्ञान पुजारी, वीतरागता के विज्ञान ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय को पालते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ ।
उनके गुण हम पा सकें, होय कर्म का अन्त ।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अमृत यंत्राभिषेक *(स्थापना)*

प्रासुक निर्मल नीर गंध से, श्रेष्ठ कलश भर लाए हैं।
करने यंत्राभिषेक यहाँ पर, निर्मल भाव बनाए हैं।।
तीन लोक के स्वामी जिनवर, जिनवाणी का करें प्रकाश।
बीज मंत्र युत यंत्र जीव के, करता है विघ्नों का नाश।।

अभिषेक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इ्वीं इ्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन यंत्रमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

श्री सिद्ध यंत्र (विनायक यंत्र) पूजा

स्थापना

दोहा– **परमेष्ठी जिन पाँच है, मंगल आदी तीन।**
अत्र तिष्ठ मम् हृदय में, करो विघ्न सब क्षीण।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्रावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरण भूत ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

स्वच्छ जल यह तीर्थ का हम, अर्चना को लाए हैं।
जन्म, मृत्यु अरु जरा को, नाश करने आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन यह सुगन्धित, परम शीतल लाए हैं।
नाश हो भव ताप निर्मल, चित्त से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत मोतियों सम, स्वच्छ धोकर लाए हैं।
मिले अक्षय पद हमें अब, कर्म से घबड़ाए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विविध वर्णों के सरस शुभ, फूल जो महकाए हैं।
नाश हो मम् काम बाधा, हम चढ़ाने लाए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शर्करा घृत का मनोहर, शुद्ध चरुवर लाए हैं।
क्षुधा बाधा नाश हेतु, हम चढ़ाने आए है।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण रत्नों से सुसज्जित, दीप मनहर लाए हैं।
मोह का तम नाश करके, ज्ञान पाने आए हैं।।

पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में जलाने, यह दशांगी लाए हैं।
कर्म आठों नाश करने, हम शरण में आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध अनुपम सरस फल यह, हम चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष पद हो प्राप्त हमको, भाव से हम आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों से बनाकर, अर्घ्य हम यह लाए हैं।
पद हमें हो प्राप्त अनुपम, वन्दना को आए हैं।।
पञ्च परमेष्ठी जगत् में, चार मंगल हैं महा।
चार उत्तम लोक में शुभ, शरण पाऊँ मैं अहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली *(शम्भू छन्द)*

हे जिनेन्द्र! तुमने अनादि की, भव सन्तति का नाश किया।
अर्हत् पदवी को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।

चरण कमल में प्रभो! आपके, भाव सहित करते अर्चन।
मोक्षमार्ग के परम प्रकाशक, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय समवशरण लक्ष्मी विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, भाव कर्म का किए विनाश।
चित् चैतन्य स्वरूप निरत हो, निज स्वभाव में कीन्हे वास।।
जिन त्रैकालिक सिद्ध प्रभु को, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म काष्ठगणं भस्मीकुर्वर्त सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार परायण हैं जो, शिक्षा–दीक्षा के दाता।
सप्त तत्त्व छह द्रव्य धर्म अरु, नय प्रमाण के हैं ज्ञाता।।
जैनाचार्य लोक में पूजित, का हम करते हैं अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचार परायणाचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अर्थ श्रुत तत्त्व बोध के, ज्ञाता मुनिवर लोक महान्।
अध्ययन अध्यापन में रत जो, उपाध्याय सद्गुण की खान।।
द्वादशांग श्रुत को करते हैं, भाव सहित हम भी अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपठन पाठनोद्यतायोपाध्याय परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप पर्वत के भेत्ता, द्वय प्रकार तप के धारी।
शैय्याशन जिनकी विविक्त है, निर्विकार हैं अविकारी।।
रत्नत्रय रत सर्व साधु का, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश प्रकार चारित्राराधक साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

सुरनर विद्याधर से पूजित, अर्हत् मंगल गाये।
जल फल आदिक अष्ट द्रव्य ले, हम पूजा को आये।।

मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हन्मंगलार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पाद विनाश रूप जो, अखिल वस्तु को जाने।
परम सिद्ध परमेष्ठी को, हम मंगलमय पहिचाने।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

सद्दर्शन कृत वैभव पाए, सर्व साधु अविकारी।
रोग उपद्रव मृग मृगेन्द्र सम, दूर भागते भारी।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी द्वारा भव शत, जैन धर्म को जानो।
सर्व लोक में मंगलमय सु, मंगलकारी मानो।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलिप्रज्ञप्त धर्मायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

लोकोत्तम जिनराज पदाम्बुज, की सेवा है सुखकारी।
ऋद्धी सिद्धि प्रदायक उत्तम, दोषों की नाशनहारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हल्लोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से च्युत होकर के, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।
सिद्ध लोक में उत्तम हैं जो, करते लोकालोक प्रकाश।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रादि से, अर्चित संयम तपधारी।
सर्वसाधु लोकोत्तम जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष आदि पिशाच का, जिससे होता है मर्दन।
परम केवली कथित धर्म की, भाव सहित करते पूजन।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्तधर्मायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों की शरण लोक में, अर्चनीय जिन श्रेष्ठ कही।
भव भयहारी अष्ट कर्म की, नाशन हारी पूर्ण रही।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हत शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध आदि गुणधारी, चिदानन्द हैं अमृत रूप।
शरण प्राप्त हो सिद्ध प्रभु की, जो पा जाते आत्म स्वरूप।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्ध शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सर्व प्रयोजन तजकर, सर्व साधु की मिले शरण।
सर्व चराचर द्रव्य छोड़कर, वीतरागता करूँ वरण।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधु शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम केवली के मुखोद्गत, धर्म जीव का हितकारी।
जैन धर्म की शरण प्राप्त हो, सर्व जगत् मंगलकारी।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्त धर्म शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संसार दुःखों के नाशी, कहे अनादि और अनन्त।
परमेष्ठी मंगल लोगोत्तम शरण, चार कहते भगवन्त।।
भक्तिभाव से पूजा करते, भक्ती के यह हैं आधार।।
सुख शान्ति के हेतु विनय से, करते वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।**
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।

अनाद्यानन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम् विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुन लीजे।।

मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीष इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।

शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी है अति मानी।।

भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।

यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ति शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारे, वह सब दोषों को परिहारे।।

नाम आपका जो भी ध्यावे, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावे।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।

जय–जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
सुर–गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कह पावें।।
'विशद' अल्प बुद्धि के धारी, अर्चा हम करते मनहारी।

सोरठा– **तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।**
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।**
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सम्मेदशिखर पूजन

स्थापना

हे तीर्थराज ! हे सिद्ध भूमि !, हे मंगलकारी ! मोक्षधाम।
हे भव बाधा हर पुण्य तीर्थ !, हे प्राची के दिनकर ललाम ! ।।
त्रैलोक्य पूज्य त्रैकालिक शुभ, भवि जीवों के पावन आधार।
श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर की, बोलो भाई जय-जयकार।।
आह्वानन् करके अंतर में, जो जिन सिद्धों को ध्याते हैं।
वे सिद्ध क्षेत्र की पूजा कर, यह जीवन सफल बनाते हैं।।

ॐ ह्रीं शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

क्षीर सागर सा समुज्ज्वल, धवल जल लेकर अमल।
शत् इन्द्र करते वंदना शुभ, गीत भी गाते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
जो जन्म मृत्यु के दुःखों से, मुक्त करता है अहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

अगुरु पंकज तुल्य सुरभित, सरस चंदन हाथ ले।
परम उज्ज्वल श्रेष्ठ केसर, अर्चना को साथ ले।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
भव ताप नाशक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पूर्णिमा की चांदनी सम, पूर्ण अक्षत ले अमल।
रमणीयता वरती उन्हें जो, अर्चना करते विमल।।

भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
शाश्वत सुपद दायक परम है, मुक्त जो करता अहा।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विश्व के कल्याण की, मंगलमयी आराधना।
चित्त को आनंददायी, हो परम पुष्पार्चना।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
काम दाहक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल प्रदात्री, सर्वदा हितकारिणी।
आराधना चउ सरस युत शुभ, भव्य मनसिज हारिणी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
क्षुधा की बाधा विनाशक, मुक्त जो करता अहा।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है अलौकिक दिव्य मनहर, दीप की अनुपम प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोहतम हो नाश क्षण में, मुक्त जो करता अहा।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर चंदन आदि उत्तम, परम आनन्द कारणी।
वाचस्पति सम धूप पावन, विशद प्रतिभा दायिनी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
कर्म को करके तिरोहित, मुक्त जो करता अहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पद्रुप सम फल मनोहर, हैं समर्पित भाव से।
कर रहे आराधना हम, आनंद अतिशय चाव से।।

भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोक्षपद से हो विभूषित, मुक्त जो करता अहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों की विनाशक, द्रव्य आठों ले परम।
विश्व में कल्याणकारी, कल्पद्रुप सम है शुभम्।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
सर्वार्थ सिद्धि का प्रदायक, मुक्त जो करता अहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **सब तीर्थों में श्रेष्ठ है, पावन तीरथ राज।**
गाते हैं जयमालिका, मिलकर सकल समाज।।

(तर्ज – जाने वाले एक संदेशा ...)

गिरि सम्मेद शिखर का वंदन, करने को जो भी जाते।
अक्षय पुण्य कमाने वाले, अक्षय पदवी को पाते।।
शाश्वत तीर्थराज है अनुपम, कण–कण जिसका है पावन।
हरे भरे वृक्षों के ऊपर, पुष्प खिले हैं मन भावन।।
दूर–दूर से आशा लेकर, श्रावक वंदन को आते।
अक्षय पुण्य ... ।।1।।

तीर्थ वंदना करने वाले, किस्मत वाले होते हैं।
भाव सहित वंदन करके शुभ, बीज पुण्य के बोते हैं।।
श्रावक आकर भक्तिभाव से, गीत भक्ति के शुभ गाते ।
अक्षय पुण्य ... ।।2।।

पूर्व भवों के पुण्योदय से, अंतर में श्रद्धा जागे।
वीतराग जिनधर्म सुकुल जिन, भक्ति में भी मन लागे।।

भव्य भक्त भक्ति करने को, भाव पुष्प कर में लाते।
अक्षय पुण्य ... ।।3।।

तीर्थ नाम पर हम सदियों से, धोखे खाते आए हैं।
चतुर्गति में भटके लेकिन, फिर भी समझ न पाए हैं।
पहले समझ न पाते प्राणी, अन्त समय में पछताते ।।
अक्षय पुण्य ... ।।4।।

मन में यह विश्वास हमारा, हम वंदन को जाएँगे।
तीर्थ वंदना करके हम भी, तीर्थ रूप हो जाएँगे।।
सिद्धों के गुण पाने की हम, विशद भावना शुभ भाते।
अक्षय पुण्य ... ।।5।।

(छंद – घत्तानंद)

जय महिमाधारी, जग हितकारी, सर्व जगत् मंगलकारी।
कण–कण है पावन, अतिमन भावन, भवि जीवों को सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – **पूजा करें महान्, शाश्वत तीरथराज की।**
होय जगत् कल्याण, सर्व सौख्य मुक्ति मिले।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ

तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, श्रेष्ठ ऋद्धि सिद्धी धारी।
पूजनीय गणनायक उनके, हुए जहाँ में अविकारी।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न–भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन–वचन–काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथजी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
निज गुण पाकर के हे स्वामी !, किया आपने शिवपुर वास।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथजी की टोंक (मित्रधर कूट)

गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।
निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथजी की टोंक (नाटक कूट)

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे स्वामी ! अब, और सहा न जाता है।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास) श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथजी की टोंक (संबल कूट)

श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।
गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि छियानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक (संकुल कूट)

सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।
स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (संकुल नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास) श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंतजी की टोंक (सुप्रभ कूट)

पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पदमप्रभुजी की टोंक (मोहन कूट)

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभ, पाकर पाये केवल ज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तासीलाख तियालीस हजार सात सौ, सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक (निर्जर कूट)

मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।
कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (निर्जर नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी नो करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभजी की टोंक (ललित कूट)

चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।
ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथजी की टोंक

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।
स्वयं बुद्ध हे नाथ ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथजी की टोंक (विद्युतवर कूट)

जल चन्दन से भी अति शीतल, शीतल नाथ कहाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा-कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख, बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथजी की टोंक (स्वयंप्रभ कूट)

गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।
गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथजी की टोंक (धवल कूट)

हे सम्भव ! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा
जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का मम् लक्ष्य रहा।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास) श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।
जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथजी की टोंक (आनन्द कूट)

हे अभिनन्दन ! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (आनन्द कूट के दर्शन का फल लाख उपवास) श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ !, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा-कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथजी की टोंक (अविचल कूट)

हे सुमतिनाथ ! तुमने जग को, शुभ मति दे शिवपद दान किया।
भक्तों को तुमने करुणाकर, होकर सौभाग्य प्रदान किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख, इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक (कुन्दप्रभ कूट)

हे शांतिनाथ ! शांती दाता, जन-जन को शांती प्रदान करो।
भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी की टोंक

तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्गद् होकर हर्षाया है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक (प्रभास कूट)

जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।
प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथजी की टोंक (सुवीर कूट)

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मस पूर्ण हरें।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा-कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथजी की टोंक (सिद्धवर कूट)

प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।
पाकर के केवलज्ञान प्रभु, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास) श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथजी की टोंक

हे नेमिनाथ ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)

उपसर्गों में संघर्षों में, तुमने समता को धारा है।
कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व ! आपके हारा हैं।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास) श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेजपुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, बहु संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करते हैं प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।

हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु करें जयमाल।।

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।
जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।

राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाएँ हम शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट- आदिनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री आदिनाथ विधान'' करें।)

श्री अजितनाथ पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतु हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।

अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अत एव चढ़ाने फल लाए।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ वदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।

हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर–नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत्र पश्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।।
प्रभु हैं जग में सर्व महान्, करें हम भाव सहित गुणगान।
सुगर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।।

करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान्।
ऐरावत लावे इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरु गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।।
गिरी कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।।
करें उपदेश प्रभु जी महान्, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करें प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।।

(छन्द घत्तानंद)

जय–जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– अजितनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री विघ्नविनाशक अजितनाथ विधान'' करें।)

श्री संभवनाथ पूजन

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिनपद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ कृपाकर भक्तों पर, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यू भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गति में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्‌रस यह नैवेद्य बनाए, बार–बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ती होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव–भव में कई दुःख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने अब आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग–जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हवन और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर–नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ति पाए, हम चरणों शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभभावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।**
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उचारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।
ॐकार रूप दिव्य देशना प्रकाशते।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को बखानते।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर–दूर आपसे।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से।।

आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो।
ध्यान करे आपका, उन सबके तुम साथ हो।।
इन्द्र और नरेन्द्र और गणेन्द्र आपको भजैं।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं।।
आपके चरणारविन्द में, करूँ ये प्रार्थना।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना।।
हे जिनेन्द्र ! ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म है अशेष।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी,त्रिभुवन पति हे जगनामी !।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, साधक जो अनुकूल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधु के स्वामी।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन।
भाव सहित हम करते वन्दन, करते हैं उर में आह्वानन।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
क्षीर नीर के कलश मनोहर, भरकर के हम लाए हैं।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है।
जिसकी परम सुगन्धि द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है।
भव आताप नशाने वाली अर्चा है, भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

कर्म बन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दुःख पाते हैं।
जन्म जरा मृत्यु को पाकर, भव सागर भटकाते हैं।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ति पाने आए हैं।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं।
नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
मोह तिमिर में फँसकर हमने, जीवन कई बिताए हैं।
मोह महातम नाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं।
मम अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योति सम्यक् ज्ञान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...

इन्द्रिय के विषयों में फंसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया।
आत्मध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया।
अष्ट कर्म की नाशक होती, अर्चा जिन भगवान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
लोकालोक अनादि शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा।
सप्त तत्त्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।वन्दे...
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(शम्भू छन्द)*

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ल षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ शुक्ल चौदश को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान।।

अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीष झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे।
ले चले पालकी में नर–सुर, वह सब बोले जय–जयकारे।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थंकर भाई।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर–नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो।
अभिनंदन जिन मुक्ति पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए।।
हम भी मुक्ति वधु को पाऐं, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय–जय हो मंगलकारी।
तुम जग के संकटहारी, जय–जय जिनेश अविकारी।।

प्रभु अष्टकर्म विनशाए, अष्टम वसुधा को पाए।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ।।
हमने भव–भव दुख पाए, अब उनसे हम घबड़ाए।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है।
भव–भव में शरणा पाई, पर आप शरण न भाई।।
यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारणहारे।
मन में मेरे न भाए, अतएव जगत भरमाए।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे।
तव श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ।
तव चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ति पाएँ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन ! के अधिकारी।
वश यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।।
भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे।
हम सेवक बन कर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए।।
कई जीव प्रभु तुम तारे, भव सागर पार उतारे।
हे त्रिभुवन ! के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता।।
हे मोक्ष महल के स्वामी ! त्रिभुवन के अन्तर्यामी।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया।।

(छन्द घत्तानन्द)

हे जिन ! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आये।
मेटो भव क्रन्दन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **भाव सहित वन्दन करूँ, अभिनन्दन जिन देव।**
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पूजों तुम्हें सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट– अभिनंदन भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री अभिनन्दननाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री सुमतिनाथ पूजा

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ पद माथ झुकाकर, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।
प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनी गणधर विद्याधर, का जो करते आराधन।
मुक्ति पाने हेतू करते, मूलगुणों का जो पालन।
ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिसने, अथक काम के बाण सहे।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।
भूत प्रेत नर पशु शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदि, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादि से कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुर्गति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।
श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथाय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मति सुमति करके प्रभु, हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ति पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।
प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन-जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।
है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।
शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।
वह प्रतिहार्य प्रगटाते, भक्ति कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।

सुनते जिनवर की वाणी, जो जन–जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।

तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण–शरण में आते, आशीष आपका पाते।।

जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।

हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।

बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बने प्रभु अनगारी, है विशद भावना भारी।।

प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।

प्रभु अनन्त चतुष्ट पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें, अरू मुक्ति वधु को पावें ।।

हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी, सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभु, चरण झुकाऊँ शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– सुमतिनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री सुमतिनाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री पदमप्रभु पूजा

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादि के दुःख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्त्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।

रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतु मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा, हम करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक वदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।

हम भाव सहित वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।**
कल्मश होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।
तीन योग से प्रभु पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़–जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।

भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत् इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ! ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– पद्मप्रभु भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री पद्मप्रभ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम् प्यास शांत न हो पाई, अत एव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर-फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो, अत एव शरण हमने पाई।।
हो भव आताप का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अव एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गंवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गंवाएँ हैं।।
हो काम बाण विध्वंश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ति उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।
हो मोह अंध का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, हम फल यह विविध चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर–दर, पर पद अनर्घ न पाया है।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।

जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्त्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धि कर्त्ता।।
भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म, लिए जिन भाग्य विधाता।।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।
अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्मे श्री जिन देवा।
करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।।

स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जिनवर संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके, प्रभु वस्त्र उतारे।।
छठी कृष्ण फाल्गुन को, घाती कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी, प्रभु ज्ञान जगाए।।
सातें कृष्ण फाल्गुन को, प्रभु जी मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ति पाए।।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में, हम शीश झुकाते।
विशद मोक्ष हो प्राप्त हमें, हम तव गुण गाते।।

दोहा – पार्श्वमणि सम हैं प्रभु, जिन सुपार्श्व है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए,
भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना,
तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजा

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुःख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटके फिरे, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आये, हम चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतु, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दु:ख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ मिटी न, चरु अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश हेतु, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भरमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योती उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात को, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को, सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्चमुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल, सिद्धशिला पर किया विहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हैं नत भाल।
गुणमणि माला हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(शंभू छन्द)

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादि से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।

सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित्त चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने 'विशद', चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री पुष्पदन्त पूजा

(स्थापना)

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कर्मोदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरादि नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।
अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुःख सहते।।

पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फंसकर के, जीवन व्यर्थ गंवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों को हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए।।
मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, रमा मात के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चौपाई)

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(गीता छन्द)

अष्टमी शुभ आश्विन शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाएँ जयमाल कर, पाएँ मोक्ष निधान।।

(पद्धडि छन्द)

जय-जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।
जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हें प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रातःकाल।।

जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।

जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।

जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ति कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय-जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।

प्रभु दीजे जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।।

जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।
जय-जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।।

जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।।

निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्कल प्रभु निराकार।
श्री जिन के गुण का नहीं पार, भक्तों के हो प्रभु कर्ण धार।।

दोहा – आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेश हर लीजिए।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शीतलनाथ पूजा

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करतें प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, वश इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – सोलहकारण की)

चरण चढ़ाएँ निर्मल नीर, त्रयधारा देकर गंभीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
जन्मादि का रोग नशाय, कर्म नाश मुक्ति पद पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसकर के चन्दन गोशीर, मैटे जो भव-भव की पीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
प्राणी का भव ताप नशाय, अतिशयकारी सौख्य दिलाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अमल अखण्ड़ महान्, पद पाएँ हम हे भगवान!
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

सुरभित अक्षत धोकर लाय, प्रभु चरणों में दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित ले मनहार, रंग बिरंगे विविध प्रकार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
काम बाण का रोग नशाय, चेतन की शक्ति खिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ताजे ले पकवान, चढ़ा रहे करके गुणगान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
क्षुधा रोग मेरा नश जाय, तव चरणों की भक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर का होय विनाश, पाएँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
रत्नमयी शुभ दीप जलाय, प्रभु के चरणों दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युत धूप महान्, करने अष्ट कर्म की हान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय, सिद्ध शिला हमको मिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला आम अनार, भांति-भांति के ले मनहार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

श्री जिनेन्द्र के चरण चढ़ाय, मोक्ष सुफल पाने को भाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाए अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, जिन श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीन लोक में पूज्य हैं, शीतल नाथ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय शीतलनाथ सुधीर धीर, जय ज्ञान सुधामृत धरणधीर।
जय धर्म शिरोमणि परम वीर, जय भव सागर के श्रेष्ठ तीर।।
जय भद्दलपुर में जन्म लीन, जय दृढ़रथ नृप शुभ राज कीन।
जय मात सुनन्दा गर्भ पाय, सपने सोलह देखे सुखाय।।
जय चैत कृष्ण आठे जिनेश, जिन गर्भ प्राप्त कीन्हें विशेष।
जय माघ वदी बारस सुजान, प्रभु जन्म लिए जग में महान्।।
खुशियाँ छाई जग में अपार, वन्दन कीन्हें सुर बार–बार।
सौधर्म इन्द्र तव चरण आय, ऐरावत अपने साथ लाय।।

आई थी उसके शची साथ, लीन्हा बालक को स्वयं हाथ।
पाण्डुक वन को चल दिया इन्द्र, थे साथ वहाँ पर कई सुरेन्द्र।।
फिर न्हवन किए प्रभु का अपार, महिमा का जिसकी नहीं पार।
तव कल्पवृक्ष लक्षण सुजान, भक्ति कीन्हीं प्रभु की महान्।।
चरणों में सब कीन्हें प्रणाम, प्रभु का शीतल जिन दिए नाम।
फिर माघ वदी बारस सुजान, प्रभु तप धारे जग में महान।।
कीन्हें जिन आतम का सुध्यान, फिर पाए केवल ज्ञान भान।
तिथि पौष वदी चौदस जिनेश, शत् इन्द्र किए भक्ति विशेष।।
तव समवशरण रचना महान्, सुरगण मिलकर कीन्हें प्रधान।
फिर दिव्य देशना दिए नाथ, गणधर झेले तब झुका माथ।।
तब भव्य जीव पाए सुज्ञान, संयम धारे कई जीव आन।
फिर अश्विन सुदि आठे जिनेश, जिन कर्म नाश कीन्हें अशेष।।
सम्मेद शिखर से मुक्ति पाय, फिर सिद्ध शिला पहुँचे जिनाय।
शिवपुर का कीन्हे प्रभु राज, जिन पर हम करते सभी नाज।।

दोहा – शीतल नाथ जिनेन्द्र के, चरण झुकाएँ माथ।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हम सबका प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करें, चरणों में हे ईश !
विशद भाव से पाद में, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(नोट– शीतलनाथ भगवान के 'पंचकल्याणक और सुगंध दशमी व्रत' के उद्यापन में श्री शीतलनाथ विधान कीजिए।)

श्री श्रेयांसनाथ पूजा

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में।
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभु बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयतान् पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुखदाई।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधु योगी भोगी।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन को दिया हवाला, कर्मों ने घेरा डाला।
हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन।
गर्भकल्याण प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव से।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, रत्नत्रय की नाव से।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयासंनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभु आप कहाए।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए।।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है।
विमला श्री माता को, प्रभु धन्य किया है।।
राजा विमल प्रभु के, प्रभु लाल कहाए।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए।।
फाल्गुन वदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं।
सौधर्म आदि इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं।।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया।।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया।
आके शची ने प्रभु का, श्रृंगार शुभ किया।।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है।
युवराज सुपद पाया, प्रभु ने विशाल है।।

अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
आयु चौरासी लाख वर्ष की गिनाए हैं।।
श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
फाल्गुन वदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।।
जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।।
शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम् रहा।
कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।।
रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।।
ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभु अहा।
जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।।
धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में।।
करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।।
श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नशाए।
फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।।
शाश्वत अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम् रहा।।

दोहा– श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– जो पद पाया आपने, शाश्वत रहा महान।
वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट– श्रेयांसनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री श्रेयांसनाथ विधान'' अवश्य कीजिए।)

श्री वासुपूज्य पूजा

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।

अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।**
वसु द्रव्यों से पूजकर, करें विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।
ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद–बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।

रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभु निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि अनंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
मिले हमको शिवपुर की राह, 'विशद' जीवन में ये ही चाह।।

(छंद घत्तानंद)

जय–जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित, शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।**
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विमलनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

विमलनाथ के चरण कमल में, सादर हम करते वन्दन।
पुष्पाञ्जलि करके चरणों में, करते हैं हम अभिनन्दन।।
विमल गुणों के धारी जिन प्रभु, भाव सहित करते अर्चन।
हृदय कमल के सिंहासन पर, करते हम प्रभु आह्वानन।
चरण कमल में आए हम, प्रभु तुमसे है कुछ अपनापन।
प्रभु तीन योग से तीन काल में, करते हम शत् बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – चौबीसी पूजन की)

होवे जन्मादि विनाश, निर्मल जल लाए।
चरणों में तव हे नाथ ! चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव आताप विनाश, चन्दन घिस लाए।
तव पद अर्चन को नाथ, चरणों में आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने हेतु, प्रभु चरणों आए।
यह उत्तम अक्षत नाथ ! चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हो काम वासना नाश, भावना हम भाए।
यह पुष्प सुगन्धित नाथ, चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, चरणों सिर नाए।
लेकर ताजे नैवेद्य, चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोह तिमिर का नाश, चरणों हम आए।
यह घृत के पावन दीप, जलाकर हम लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वसु कर्मों का नाश, शरण में हम आए।
यह अष्ट गंध शुभ साथ, जलाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महल में वास, चढ़ाने फल लाए।
राखो प्रभु मेरी लाज, भक्त चरणों आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए।।

हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभु, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

सुदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।
पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चामर छन्द)

आषाढ़ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्ण षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विमल गुणों के कोष हैं, विमल नाथ भगवान।
गाते हैं जयमालिका, करने निज कल्याण।।

(काव्य छन्द)

विमल नाथ जी विमल गुणों के धारी रे।
तीर्थंकर पदवी के जो अधिकारी रे।।
महिमा जिनकी इस जग से है न्यारी रे।
सर्व जगत में जिनवर मंगलकारी रे।।
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य के धारी रे।
सुख अनन्त के होते जिन अधिकारी रे।।
तीर्थंकर जिन होते हैं अविकारी रे।
महिमा जिनकी होती विस्मयकारी रे।।
समवशरण होता है महिमाशाली रे।
भवि जीवों को देता है खुशहाली रे।।
अष्ट भूमियाँ जिसमें सुन्दरआली रे।
गंधकुटी है तीन पीठिका वाली रे।।
तीन गति के जीव सभा में भाई रे।
पूजा का सौभाग्य जगाते भाई रे।।
मुनि आर्यिका देव देवियां भाई रे।
नर पशु के सब इन्द्र मिले सुखदायी रे।।

देव कई अतिशय दिखलाते भाई रे।
करते है गुणगान हृदय हर्षाई रे।।
प्रातिहार्य वसु प्रगटित होते भाई रे।
तरू अशोक है शोक निवारी भाई रे।।
भामण्डल सिंहासन अनुपम भाई रे।
देव दुन्दुभि बजती है सुखदायी रे।।
चौसठ चँवर ढौरते सुरपति भाई रे।
गंधोदक की वृष्टि हो सुखदायी रे।।
छत्र त्रय की शोभा कही न जाई रे।
दिव्य देशना खिरती जग सुखदायी रे।।
कमलाशन पर अधर विराजे भाई रे।
जग में अनुपम है प्रभु की प्रभुताई रे।।
सर्व कर्म का नाश किए जिनराई रे।
सिद्ध शिला पर वास किए तब भाई रे।।
जिनकी महिमा जिनवाणी में गाई रे।
सौख्य अनन्तानन्त प्रभु उपजाई रे।।
हमने भी यह शुभम् भावना भाई रे।
मुक्ति वधु को हम भी पाएँ भाई रे।।
मोक्ष मार्ग की विधि श्रेष्ठ अपनाई रे।
आज परम यह श्रेष्ठ घड़ी शुभ आई रे।।

दोहा– विमल नाथ के चरण में, पूरी होगी आस।
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तव चरणों में आए हम, विमल गुणों के नाथ।
विमल नाथ तव चरण में, 'विशद' झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री अनन्तनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

प्रभु अनन्त गुण पाने वाले, जिन अनन्त कहलाए हैं।
ध्यान योग के द्वारा प्रभु जी, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।
हे अनन्त ! भगवन्त आपके, चरणों हम करते अर्चन।
मोक्ष महल का पंथ दिखाओ, करते उर में आह्वानन्।
मिला और न कोइ हमको, शुभ मोक्ष मार्ग का राही नाथ।
आकर हमको मार्ग दिखाओ, नाथ निभाओ मेरा साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल नन्दीश्वर)

यह प्रासुक निर्मल नीर, कलशा पूर्ण भरें।
पाऊँ भवदधि का तीर, धारा तीन करें।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन ले केसर गार, कंचन पात्र भरें।
चरणों में चर्चूं नाथ !, भव संताप हरें।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, अनुपम थाल भरें।
पाऊँ अक्षय पद नाथ !, चरणों पुञ्ज धरें।।

जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह परम सुगन्धित पुष्प, चढ़ाकर हर्षाए।
करने भव ताप विनाश, चरणों हम आए।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ ! भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे घृत के नैवेद्य, थाली भर लाए।
हो क्षुधा रोग का नाश, चढ़ाने को आए।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, अग्नि में जारी।
हो मोह ताप का नाश, मिथ्या तमहारी।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेऊँ धूप, सुरभित मनहारी।
करके कर्मों का नाश, होऊँ अविकारी।।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, थाली भर लाए।
पाने मुक्ति फल सार, चढ़ाने को आए।।

जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदि मिलाय, अर्घ्य बनाते हैं।
पद पाने हेतु अनर्घ, श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
जय–जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जयश्यामा उर आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

बारस वदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द चामर)

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चिन्मय चिंतामणि प्रभु, गुण अनन्त की खान।
गाते हम जय मालिका, हे अनन्त ! भगवान।।

(छन्द चामर)

दर्श करके आपका, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।।
धन्य यह घड़ी हुई, व धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये, प्रभु धन्य शीश हो गया।।
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।
धन्य आत्म तत्त्व का भी, ज्ञान प्राप्त हो गया।
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया ।।
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमान है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमान है।।

दर्शज्ञान वीर्य शुभ, अनन्त सौख्यवान है।
निर्विकार चेतना स्वरूप की निधान है।।
आत्मज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।।
आत्म ज्ञान हीन जीव, लोक में भ्रमाएगा।
साम्यभाव हीन कभी, मोक्ष नहीं पाएगा।।
मोक्ष धाम दे यही, कोइ अन्य से न पाएगा।
स्वात्म ज्ञान ध्यान हीन, ठोकरें ही खाएगा।।
सौख्य दुःख जन्म मृत्यु, शत्रु कोई मित्र हो।
लाभ या अलाभ में भी, साम्यता पवित्र हो।।
साम्य भाव प्राप्त हो, न राग न विकार हो।
कोई भी उपसर्ग हो, शत्रु का प्रहार हो।।
नाथ आप पादमूल, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो बस, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से हम, नाथ यही प्रार्थना।
अष्ट द्रव्य साथ ले प्रभु, कर रहे हम अर्चना।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु अब, होय कभी बन्ध ना।।

दोहा – ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, नारायण तुम राम।
तुम ही शिव जिनवर-तुम्हीं, चरणों 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन अनन्त भगवान आपका नाम है।
चरणों प्रभु अनन्तानन्त प्रणाम है।।
तव गुण पाने आए हैं हम भाव से।
पूजा अर्चा वन्दन करते चाव से।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ जिन पूजा

स्थापना *(वीर छन्द)*

हे धर्मनाथ ! हे धर्मतीर्थ !, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ती पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादी रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।

जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
प्रभु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ती मिल जाये।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाए, अग्नि से धूम उड़ाएँ।
प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी।।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **पूजा कर जिन राज की, जीवन हुआ निहाल।**
धर्मनाथ भगवान की, गाते अब जयमाल।।

(तर्ज – भक्ति बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय करके, रत्नपुरी में आये जी।
मात सुव्रता भानू नृप के, गृह में मंगल छाये जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी।
दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
चौथ कृष्ण की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी।
तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी।
पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया।
धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया।।
धर्मनाथ भगवान ...
अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी।
युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
उभय परिग्रह त्याग प्रभु ने, आतम ध्यान लगाया जी।
धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी।
रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
गंध कुटी में कमलासन पर, प्रभु ने आसन पाया जी।
दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

दोहा – धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार।
'विशद' भावना बस यही, पावें भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजा

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांती हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।

हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।3।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।4।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।5।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।6।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।7।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।9।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।1।।
ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।2।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।3।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

(तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...)

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते।।
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।

तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।
शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांतिनाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

आर्या छन्द

शांतीनाथ अनाथों के हैं, 'विशद' जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाले, होते जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांती मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुख दारिद्र सब दूर हों।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री कुन्थुनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं।
हे नाथ ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर हृदय में, आज मेरे आईये।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

छान के निर्मल जल भर लाए, उसको गरम कराते हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, जिन पद श्रेष्ठ चढ़ाते है।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का पावन चंदन, केसर संग घिसा लाए।
भव आताप मिटाने हेतू, चरण चढ़ाने हम आए।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को भगवन्, चरण शरण में आए हैं।।

कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन से शुभ पुष्प सुगन्धित, चुनकर के हम लाए हैं।
काम बाण की महावेदना, शीघ्र नशाने आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश हेतू प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप मनोहर, अतिशय यहाँ जलाते हैं।
मोह महातम नाश हेतू हम, जिनवर के गुण गाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध मय धूप जलाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतू हम, चरण शरण को पाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे-ताजे श्रेष्ठ सरस फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, भाव सहित गुण गाए हैं।

कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादि, चरुवर दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात श्रीमती से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – गुण गाते जिनदेव के, गुण पाने मनहार।
जयमाला गाते यहाँ, प्रभु की बारम्बार।।

(वेसरी छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, केवल ज्ञानी अंतर्यामी।
उनकी हम जयमाला गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, नगर हस्तिनापुर उपजाए।
माता श्रीमती को जानो, सूर्यसेन नृप पितु पहिचानो।।
प्रभु ने अतिशय पुण्य कमाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।
कामदेव की पदवी पाई, चक्रवर्ति पद पाए भाई।।
तप्त स्वर्ण सम तन था प्यारा, मोहित जो करता था न्यारा।
चक्ररत्न प्रभु ने प्रगटाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।।
होकर नव निधियों के स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।

चौदह रत्न आपने पाए, त्याग सभी संयम अपनाए।।
तृण की भांति सब कुछ छोड़ा, सारे जग से नाता तोड़ा।
भोगों में जो नहीं लुभाए, परिजन उन्हें रोक न पाए।।
केश लौंचकर दीक्षाधारी, संयम धार बने अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, संवर और निर्जरा पाए।।
कर्म घातिया प्रभु ने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण तब देव बनाए, भक्ति करके वह हर्षाए।।
पाँच हजार धनुष ऊँचाई, समवशरण की जानो भाई।
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, अष्ट भूमि या अतिशय मानो।।
कमलासन पर जिन को जानो, अधर विराजें ऐसा मानो।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जन-जन के मन तब हर्षाए।।
प्रातिहार्य तब प्रगटे भाई, यह है जिन प्रभु की प्रभुताई।
कोई सद्श्रद्धान जगाते, कोई संयम को पा जाते।।
लगें सभाएँ बारह भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।
मुनि आर्यिका गणधर आवें, देव देवियाँ भाग्य जगावें।।
मानव और पशु भी आते, भाव सहित प्रभु के गुण गाते।
योग निरोध प्रभु जी कीन्हें, कर्म नाश शिव पदवी लीन्हें।।

दोहा - भाते हैं यह भावना, शिव नगरी के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - चक्री काम कुमार जी, तीर्थंकर जिनदेव।
यही भावना है 'विशद', अर्चा करें सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द - भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाये हैं कलशा भराके।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केशर घिसा के हम लाए।
भवताप के नाश हेतु हम आए।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए।
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।

प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए।
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश हेतु चढ़ाए।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! दीप घृत के मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश करने को आए।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! धूप हमने दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए।
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।

प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।
प्रभू आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाएँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्म्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करें प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!**
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(चाल टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, कुन्थुनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी।। जिनेश्वर ... ।

मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।। जिनेश्वर ... ।

कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।
समवशरण में कमलासन पर, अधर हुए स्वामी।। जिनेश्वर ... ।

चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी।। जिनेश्वर ... ।

गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।। जिनेश्वर ... ।

जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी।। जिनेश्वर ... ।

संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।। जिनेश्वर ... ।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।**
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री मल्लिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश।।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, करते हम आह्वान।।
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भव आताप से मुक्ती पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोको में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतु यह, अक्षय अक्षत हम लाए।।

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गंवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ सताए हैं।
अब नाश हेतु इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हैं कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं।।

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रभावति माँ कुंम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।
ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – आतम के हित में प्रभु, छोड़ दिए जग जाल।
मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय-जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय-जय शिव पदवी के धारी।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी।।
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए।
नृप कुम्भराज माँ प्रभावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए।।
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन।
प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन।।
नव माह गर्भ में रहे प्रभु, शचियाँ कई सेवा को आईं।
हर्षित होकर प्रभु भक्ति में, कई दिव्य सामग्री भी लाईं।।
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया।।
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया।
शचि ने बालक को लेकर के, माया मयी बालक पधराया।।
फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया।
अभिषेक कराया भाव सहित, तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया।।

अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए।
विद्युत की चंचलता को लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए।।
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को, पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो।
प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो।।
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम, निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया।।
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हें।
तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हें।।
शुभ फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए।।
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है।।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाता है।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है।।
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं।।
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर ! तव चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा।
त्रिभुवन के स्वामी विशद नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीष।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करें नमन् ।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन ।।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु करते हैं हम आह्वानन् ।।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो ।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।।

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करें।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का हम, रत्नत्रय से नाश करें।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करें।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप की शक्ती पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करें।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करें।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप आस्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करें ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करें।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करें।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करें।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करें।।

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(चौपाई)*

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
श्यामा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।। तीन लोक...

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरें, त्याग करें जगजाल ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, गाते हैं जयमाल ।।

(पद्धरि छंद)

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर।।

जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुख अपार।।
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय श्यामादेवी के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय।।
जय राजगृही में जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्।।
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण।।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान।।
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग।।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग।।
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है बस यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार।।
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय।।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भयहारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - मुनिसुव्रत के चरण के, बने रहें हम दास।
भाव सहित वन्दन करें, होवे मोक्ष निवास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, हे नमीनाथ जिनवर स्वामी।
यह भक्त पुकारें भाव सहित, हे त्रिभुवन पति ! अन्तर्यामी।।
आह्वानन् करते हैं उर में, बनने तव आये अनुगामी।
सन्निकट होव मेरे भगवन्, तव बन जाएँ हम पथगामी।।
हम भक्त शरण में आए हैं, हे भगवन् ! यह अरदास लिए।
हमको शुभ मार्ग दिखाओगे, हम आये यह विश्वास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

कर्मों की ज्वाला धधक रही, हे नाथ ! बुझाने आये हैं।
हो जन्म जरादि रोग नाश, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, हम ताप नशाने आये हैं।
हो भव आताप विनाश प्रभो ! हम गंध चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न लोकालोक का अन्त कहीं, हम चतुर्गति भटकाए हैं।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, अक्षत अर्पण को लाए हैं।।

हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना दुखदायी, उसमें सदियों से भरमाए।
वह काम बाण विध्वंश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने हम लाए।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग से व्याकुल हो, सब द्रव्य चराचर खाए हैं।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह पास में फँसे हुए, पर वस्तु में अटकाए हैं।
अब मोह कर्म के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के बन्धन से, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम इच्छा करके निज फल की, निष्फल फल पाते आए हैं।
अब मोक्ष महाफल हेतु प्रभो !, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम अवगुण को ही नाथ सदा, निज के गुण कहते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

आश्विन वदी द्वितिया तिथि, नमीनाथ जिनदेव।
माँ विपुला उर अवतरे, पूजें उन्हें सदैव।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमीनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अषाढ़ वदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमी जिनाय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरि छन्द गीता)

मगसिर शुक्ला तिथि ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल एकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(टप्पा छन्द)

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमिनाथ स्वामी।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **तीर्थंकर बनकर सभी, नाशे कर्म कराल।**
नमिनाथ की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

श्री जिनवर ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
तीर्थंकर पदवी प्रगटाए, यह प्रभुता पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

पूर्वभवों में त्याग तपस्या, प्रभु ने अपनाई।
तीर्थंकर की प्रकृति बांधी, अतिशय सुखदाई।। जिने...

विजयसेन गृह अपराजित से, मिथिलापुर भाई।
चयकर आये मात वप्रिला, के उर जिनराई।। जिने...

दर्शें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जन्म लिए भाई।
क्षीर नीर से मेरू गिरि पर, न्हवन हुआ भाई ।। जिने...

श्वेत कमल शुभ लक्षण देखा, इन्द्र ने सुखदाई।
नमिराज तव नाम पुकारा, जय ध्वनि गुंजाई।। जिने...

दर्शें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जाति स्मृति पाई।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, संत बने भाई।। जिने...

निज आतम का ध्यान लगाकर, शक्ति प्रगटाई।
कर्म घातिया नशते केवल, ज्ञान जगा भाई।। जिने...

समवशरण में दिव्य ध्वनि तब, प्रभु ने गुंजाई।
सम्यक् दृष्टि संयमधारी, बने जीव भाई।। जिने...

मगसिर शुक्ला एकादशि को, शिव पदवी पाई।
मोक्ष महल के स्वामी हो गये, नमिनाथ भाई।। जिने...

अनुक्रम से हम मोक्ष मार्ग, पर बढ़े शीघ्र भाई।
वह पदवी हम भी पा जाएँ, जो प्रभु ने पाई।। जिने...

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, धर्म ध्वजा के अधिकारी।
जय शिवपुर वासी, ज्ञान प्रकाशी, तीन लोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – **जिनवर तीनों लोक में, जिन शासन सुखकार।**
मंगलमय मंगल कहा, नमूँ अनन्तों बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा मिलने पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट खाकर सब पदार्थ, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हम, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करें, यह दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान् अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन–जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।

तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाईसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब 'विशद' मोक्ष महापद पाने को, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम आपका लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(त्रिभंगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।2 ।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी ।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।4 ।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।5 ।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1 ।।

(छंद)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2 ।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3 ।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4 ।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5 ।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करूणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6 ।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते ।।7 ।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते ।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8 ।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9 ।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ ।।10 ।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।**
मुक्ति पाने के लिए, करते 'विशद' प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री महावीर स्वामी जिन पूजा

(स्थापना)

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए ।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए ।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए ।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है ।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान बिसराती है ।।
हम प्रासुक जल लेकर आये, प्रभु जन्म मरण का नाश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है ।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है ।

हम अक्षय अक्षत लाये हैं, अब मेरा न उपहास करो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है ।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है ।।
हम पुष्प मनोहर लाये हैं, मम् उर में धर्म सुवास भरो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है ।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है ।।
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सोच रहे सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है ।
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है ।।
हम दीप जलाकर लाये हैं, मम् अन्तर में विश्वास भरो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन् , कर्मों की धूप सताती है ।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया भी मिल पाती है ।।
यह धूप चढ़ाते चरणों में, मम् हृदय प्रभु जी वास करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है ।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है ।।
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है ।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है ।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

अषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई ।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई ।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तब वैराग्य समाया ।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं मंगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई ।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हें बस ।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्या मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ को, वन्दन करें त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाते हैं जयमाल ।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

(छंद ताटंक)

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य किया।।
शत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया।।
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया।।
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर।।
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश।।
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाई।।
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया।।

हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार–मार चकचूर किया।
अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया।।
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पञ्च मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए।।
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया।।
कामदेव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे मैं भी हारा।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके,भक्ति करने को आए।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।
श्रावण वदी तिथि एकम् को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, 'विशद' धर्म का फूल खिला।
कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा – महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा – कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करते चरण प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सोलहकारण भावना पूजा

स्थापना

सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाते सौख्य अतीव।।
कर्म घातिया नाशकर, पावें केवलज्ञान।
सोलह कारण भावना, का करते आह्वान।।
है अन्तिम यह भावना, हृदय जगे श्रद्धान।
सर्व कर्म का नाश हो, मिले सुपद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल–छन्द)

हमने संसार बढ़ाया, न रत्नत्रय को पाया।
हम नीर सु निर्मल लाए, जन्मादि नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत् सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु–समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति षोडश कारणेभ्योः नमः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने हमें सताया, भारी संताप बढ़ाया।
हम चन्दन घिसकर लाए, भव ताप नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डित पद हमने पाए, जग में रह भ्रमण कराए।
हम अक्षय अक्षत लाए, शाश्वत पद पाने आए।।

है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पददायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों ने हमें लुभाया, जग कीच के बीच फँसाया।
यह पुष्प चढ़ाने लाए, हम काम नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई सरस बनाते, निशदिन हम नये-नये खाते।
नैवेद्य दवा बन जावे, भव क्षुधा रोग नश जावे।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म मतवाला, चेतन को कीन्हा काला।
हम दीप जलाकर लाए, हम मोह नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिल आठों कर्म सताए, जिससे हम चेत न पाए।
यह धूप जलाने लाए, हम कर्म नशाने आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर फल जग के सारे, न कोई रहे हमारे।
फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ति पद पाने आए।।

है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पद अनर्घ न पाए, आठों पृथ्वी भटकाए।
यह अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टी सम्यक् नहीं बने।
दरश विशुद्धि हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवे।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह सुसंवेग भाव पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित संवेगभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ति को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ति को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धि हेतु, सुतप शक्तिशः वह पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्तपभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधि सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोई बाधा आवे।
दूर करे अनुराग भाव से, वैयावृत्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत् पद पावें।
दोष रहित उनकी भक्ति शुभ, अर्हत् भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार का पालन करते, दीक्षा देते शिवदायी।
उनकी भक्ति करना भाई, आचार्य भक्ति कहलाई।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुतधारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ति करना, बहुश्रुत भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्त्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ति ही, प्रवचन भक्ति कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल रहे।।

तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह–तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वात्सल्यभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनके गुण को गाते हैं।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा – अष्ट द्रव्य का अर्घ्य शुभ, दीपक लिया प्रजाल।
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

काल अनादिनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया।।

जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादि छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो।।
चतुर्गति में जीव भ्रमाते, कर्मोंदय से सुख–दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो।।
उससे प्राणी मुक्ति पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
प्राणी तीर्थंकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते।।
सोलह कारण इसको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
दर्श विशुद्धि जो कहलावे, सम्यक् दृष्टि प्राणी पावे।।
तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावे।
विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
शक्तितः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया।।
साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैयावृत्त्य भावना मानी।
अर्हद् भक्ति श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई।।
आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
काल अनादि से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी।।
हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
विशद भावना हम ये भावें, फिर तीर्थंकर पदवीं पावें।।
अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
मुक्ति पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें।।

दोहा– सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।
भाव सहित हम वन्दना, करते विशद त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शाश्वत पद के हेतु हम, शाश्वत सोलह भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

त्रिलोक अकृत्रिम जिनालय पूजा

स्थापना

शास्वत जिनगृह तीन लोक में, आठ कोटि शुभ जानो।
छप्पन लाख हजार सत्तानवे, चार सौ इक्यानवे मानो।।
प्रति जिनालय में मणिमय शुभ, प्रतिमा एक सौ आठ रहीं।
वीतराग अविकारी मुद्रा, जिनकी अनुपम श्रेष्ठ कही।।
हृदय कमल में आह्वानन हम, विनय भाव से आज करें।
चरण वन्दना करके प्रभु की, मन का कल्मस पूर्ण हरें।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

अन्तरतम कर्मों से मेला, उसको धोने हम आये हैं।
हम माया मोह में पढ़कर हे प्रभु !, विषयों में भरमाए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि रोग व्याधियों से, संतापित होते आये हैं।
शीतल चंदन चर्चित करके, संताप नशाने आये हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं खण्ड-खण्ड इन्द्रियों के सुख, न तृप्त कभी हो पाए हैं।
अक्षत के पुंज चढ़ाकर हम, अक्षय पद पाने आए हैं।।

हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उदभ्रान्त काम ने किया हमें, निज पद से हम भटकाए हैं।
अब सुरभित सुमन प्राप्त करके, हम काम नशाने आये हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशमन करने उदराग्नी के, हेतू कई इक अपनाए हैं।
नहिं तृप्ति मिली अतएव प्रभु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया अज्ञान तिमिर निज में, न ज्ञान प्रकट कर पाए हैं।
दीपक की जगमग ज्योती से, अज्ञान नशाने आए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म जाल में फँसे रहे, न ज्ञान सुरभि को पाए हैं।
अब अष्ट कर्म के शमन हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधि फल की आशा ले, कई देव पूजते आये हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने फल, जिनदेव चरण में लाए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदि में पुष्प चरु, अक्षत फल श्रेष्ठ मिलाए हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाकर नाथ आज, रत्नत्रय पाने आए हैं।।
हे मोक्ष महल के अभिनेता !, हम भी उसके अधिकारी हैं।
तव पूजा करने के भगवन्, अनुपम सौभाग्य सजाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **स्वर्ण पात्र में स्वच्छ जल, से देते जलधार।**
क्लेश आदि सब नाशकर, पाने शांति अपार।।

शान्तये शान्तिधारा..

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर सुरभित फूल।
सुख–शांती आनन्द हो, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **तीन लोक के जिन भवन, जिन प्रतिमा जिनदेव।**
भाव सहित गुणगान अब, करते यहाँ सुदेव।।

(चौपाई)

अधोलोक में जिनगृह जानो, साठ करोड़ बहत्तर मानो।
मध्यलोक में जिनगृह गाए, चार सौ अट्ठावन बतलाए।।

व्यन्तर ज्योतिष के शुभकारी, संख्यातीत कहे मनहारी।
ऊर्ध्व के लाख चौरासी गाए, सहस्र सतानवे तेइस बताए।।
कोटि आठ लख छप्पन जानो, सहस्र सत्तानवे चार सौ मानो।
इक्यासी जिनधाम बताए, कल्पवृक्ष सम सुखकर गाए।।
सौ योजन लम्बे बतलाए, जिनगृह तुंग पचहत्तर गाए।
पंचाशत योजन विस्तारा, उत्कृष्ट प्रमाण कहा यह सारा।।
मध्यम इससे आधे जानो, सर्व कथन आधा पहिचानो।
जघन्य इससे भी आधे जानो, सर्व कथन आधा पहिचानो।।
जघन्य इससे भी आधे गाये, सर्व कथन आगम में पाए।
नन्दन वन मेरू में जानो, भद्रशाल नन्दीश्वर मानो।।
यह उत्कृष्ट जिनालय गाये, जिनवाणी ऐसा बतलाए।
कुण्डल गिरी कुलाचल भाई, रुचकगिरी सुमनश सुखदायी।।
मानुषोत्तर वक्षार बखाने, इश्वाकार अचल पहिचाने।
यह मध्यम प्रमाण के गाये, जिनगृह पूज्य सभी कहलाए।।
पाण्डुक वन के जिनगृह भाई, हैं जघन्य सुन्दर सुखदायी।
जम्बू शाल्मलि तरु के जानो, रजताचल के जिनगृह मानो।।
एक कोष के जिनगृह भाई, हैं जघन्य सुन्दर सुखदायी।
जम्बू शाल्मलि तरु के जानो, रजताचल के जिनगृह मानो।।
एक कोष के लम्बे गाए, चौड़े आधा कोष बताए।
ऊँचे पौन कोष के जानो, यह प्रमाण जिनगृह का मानो।।
तीन कोट जिनगृह को घेरे, चहुँ दिश गोपुर द्वार घनेरे।
प्रति वीथी मानस्तम्भ सोहे, नव–नव स्तूप मन को मोहे।।
मणिमय कोट अन्तर में जानो, उपवन भूमि लताएँ मानो।
द्वितिय परकोटे के माही, दशविधि ध्वज फहराएँ साही।।
तृतिय परकोटे से भाई, चैत्य भूमि सोहे सुखदाई।
तरु सिद्धार्थ चैत्य तरु जानो, जिनबिम्बों से युत पहिचानो।।

एक सौ आठ गर्भ गृह गाए, प्रति मंदिर में शोभा पाए।
सिंहासन पर जिनवर सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।
धनुष पाँच सौ ऊँचे जानो, पद्मासन में मणिमय मानो।
बत्तिस युगल यक्ष शुभकारी, चँवर ढुरावे मंगलकारी।।
श्रीदेवी श्रुतदेवी भाई, पास में मूर्ति है सुखदायी।
सर्वाह्ण यक्ष की मूर्ति जानो, सनत्कुमार नाम शुभ मानो।।
मंगल द्रव्य पास में भाई, प्रति जिनबिम्ब के पास बताई।
श्रीमण्डप के आगे जानो, स्वर्ण कलश आभामय मानो।।
धूप घड़े सोहें शुभकारी, मणिमालाएँ मंगलकारी।
मुख-प्रेक्षा मण्डप भी जानो, वंदन न्हवन मण्डप पहिचानो।।
नर्तन क्रीड़ा गुणगृह भाई, चित्र भवन संगीत सुहाई।
जिनगृह की रचना शुभकारी, बहुविधि कही विशद मनहारी।।
गणधर भी कहते थक जावें, और कोई कैसे कह पावें।
जिनगृह जिन प्रतिमा शुभकारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।
वन्दन हम परोक्ष ही करते, विशद चरण में माथा धरते।
भव-भव में हम तुमको ध्यायें, अपना नरभव सफल बनाएँ।।

दोहा- जिन मंदिर जिन मूर्तियाँ, जग में पूज्य महान।
भाव सहित हम गा रहे, उनका ही गुणगान।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अष्टकोटि षट् पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनालय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूज रहे हम भाव से, श्री जिन चैत्य त्रिकाल।
'विशद' भाव से चरण में, झुका रहे हम भाल।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचमेरु पूजा

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द : अवतार)

हम प्रासुक निर्मल नीर, पावन भर लाए।
अब जन्म-जरा की पीर, मेरी नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की अनुपम गंध, चउ दिश महकाए।
पाएँ अतिशय आनन्द, भव तम नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत मनहार, चरणों हम लाए।
पाएँ अक्षय उपहार, महिमा हम गाए।।

हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित यह पुष्प महान्, मेरे मन भाए।
हम करते हैं गुणगान, वासना नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, भावना यह भाए।
हो आतम ज्ञान प्रकाश, चरण में चरु लाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार का नाश, हमको करना है।
कर दीपक ज्योति प्रकाश, भव दुःख हरना है।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला नाश, मेरी हो जाए।
हो आतम ज्ञान प्रकाश, धूप खेने लाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महाफल प्राप्त, तुमको ध्याते हैं।
यह श्रेष्ठ सरस फल नाथ, चरण चढ़ाते हैं।।

हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्रेष्ठ सुगन्धित नीर से, देते हैं जलधार।
जीवन सुखमय शांत हो, मिले मोक्ष का द्वार।। *शांतये शांतिधारा*

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
जिन गुण पाने के लिए, झुका चरण में माथ।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– ढाई द्वीप के मध्य हैं, मेरु पंच महान्।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु कहाया, भद्रशाल वन में बतलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन पञ्च शतक पे जानो, ऊपर नन्दन वन पहिचानो।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
साढ़े बासठ सहस्र बताया, ऊर्ध्व सौमनस वन कहलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन छत्तिस सहस्र ऊँचाई, पाण्डुक वन सोहे तँह भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।

चारों मेरु समान बताए, भू पर भद्रशाल कहलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन पञ्च शतक पर जानो, नन्दन वन चारों दिश मानो।
चारों दिश चैत्यालय गाए, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
साढ़े पचपन सहस्र ऊँचाई, सौमनस वन की जानो भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
सहस्र अट्ठाइस योजन गाये, पाण्डुक वन ऊँचे बतलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा को शुभ भाव बनाए।।
सुर नर विद्याधर मिल आवे, जिन वंदन करके सुख पावे।
चैत्यालय अस्सी शुभ गाए, वन्दन करने को हम आए।।
मेरु सुदर्शन की ऊँचाई, एक लाख योजन बतलाई।
विजयादि चारों की भाई, लख–चौरासी योजन गाई।।
एक महायोजन शुभ जानो, दो हजार कोष का मानो।
इससे मेरू मापा जाए, बीस करोड़ कोष हो जाए।।
दक्षिण पाण्डुक वन में भाई, पाण्डुक शिला बनी सुखदाई।
रत्न कम्बला शिला बताई, उत्तर वन में सोहे भाई।।
रत्नशिला पूरब में जानो, रत्नमयी इसको पहिचानो।
पाण्डु कम्बला है मनहारी, पश्चिम वन में मंगलकारी।।
श्रेष्ठ इन्द्र उस वन में जाते, तीर्थंकर का न्हवन कराते।
यहाँ बैठकर भाव बनाते, जिनपद में हम शीश झुकाते।।

दोहा– चैत्यालय अस्सी रहे, पञ्च मेरु के धाम।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– पञ्च मेरु हम पूजते, 'विशद' भाव के साथ।
अर्घ्य चढ़ा अर्चा करें, झुका रहे हैं माथ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजन

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(श्रृंगार छन्द)

नीर यह प्रासुक लिया महान्, श्रेष्ठ निर्मल है क्षीर समान।
शीघ्र हो जन्म जरा का नाश, करें हम शिव नगरी में वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह चन्दन लिया अनूप, प्राप्त करने शुद्धात्म स्वरूप।
चरण में आये लेकर आश, शीघ्र हो भव आताप विनाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल यह अक्षत हैं मनहार, चढ़ाते हम ये मंगलकार।
मिले अक्षय पद मुझे प्रधान, भावना पूर्ण करो भगवान।।

द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाये विविध प्रकार, चढ़ाते चरणों बारम्बार।
शीघ्र हो कामबाण विध्वंश, रहे न जिसका कोई अंश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस व्यंजन भर लाए थाल, चढ़ाते हम होके नत भाल।
हमारी होवे क्षुधा विनाश, शरण में आये बनकर दास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर लाए घृत का दीप, चढ़ाते प्रभु के चरण समीप।
हमारे मोह तिमिर का नाश, करो प्रभु सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई अष्ट गंध युक्त धूप, प्राप्त करने निज का स्वरूप।
हमारे हो कर्मों का नाश, मिले हमको शिवपुर का वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ अनेक, चढ़ाते चरणों माथा टेक।
मोक्ष फल हमको करो प्रदान, प्रार्थना है मेरी भगवान।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण ।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **धारा देते हम यहाँ, विशद भाव के साथ।**
मोक्ष महल का पथ मिले, चरण झुकाते माथ।। *शांतये शांतिधारा*
वन्दन करते भाव से, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।
शिवपथ पाने के लिए, हे प्रभु ! देना साथ।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– **नन्दीश्वर शुभ द्वीप है, मंगलमयी महान्।**
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटी, लाख चौरासी आभावान।।
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादी, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।1 ।।
चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार।।

दधिमुख के द्वय बाह्य कोण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।2।।
योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार।।
कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।3।।
चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर।।
एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।4।।
एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर।।
कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।5।।
हैं प्रत्येक जिनालय में जिन, बिम्ब एक सौ आठ महान्।
नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान।।
श्याम रंग में भौंह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।6।।
कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन।।
मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।7।।

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते 'विशद' प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

दशलक्षण पूजा

स्थापना

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम धारी।
तपस्त्याग आकिंचन धारे, ब्रह्मचर्य धर अनगारी।।
दश धर्मों को धारण करते, कर्म निर्जरा करें मुनीश।
विशद भाव से वन्दन करके, झुका रहे हैं अपना शीश।।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, धर्म लोक में रहा महान्।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

ध्यानमयी उत्तम जल लेकर, धारा तीन कराए हैं।
जन्मादिक का रोग नशाकर, निजगुण पाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादर्श का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
भव संताप विनाश हेतु हम, आज यहाँ पर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध भाव के अक्षय अक्षत, जल से धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानन्द मय पुष्प मनोहर, चुन-चुनकर के लाए हैं।
काल अनादी काम वासना, यहाँ नशाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण के, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत करने को अपनी, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव का दीप बनाकर, ज्ञान की ज्योति जलाए हैं।
मोह अंध के नाश हेतु हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, स्वाहा करने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण ही फल हैं अनुपम, वह प्रगटाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, ताजे फल यह लाए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।

निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य *(चाल छन्द)*

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे ! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे ! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किचिंत् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
वे आकिञ्चन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री तीर्थंकर जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **विशद धर्म के भाव से, कटे कर्म का जाल।**
क्षमा आदि दश धर्म की, गाते हैं जयमाल।।

(वेसरी छन्द)

धर्म कहा दशलक्षण भाई, भवि जीवों को है सुखदाई।
मोक्ष मार्ग में नौका जानो, मुक्ति का शुभ कारण मानो।।
धारण करें धर्म जो कोई, कर्म नाश उसके भी होई।
मोक्ष मार्ग का साधन जानो, जग जन का हितकारी मानो।।
धर्म कहा है रक्षक भाई, धारण करो हृदय हर्षाई।
कहा मान का नाशकारी, पग-पग पर होता हितकारी।।
मायाचारी को भी नाशे, आर्जव धर्म हृदय परकाशे।
लोभ हृदय में न रह पावे, शौच धर्म उर में प्रगटावे।।
मुख से सत्य वचन उच्चारे, सत्य धर्म जो उर में धारे।
मन को वश में करते भाई, इन्द्रिय दमन करें हर्षाई।।
बनते हैं संयम के धारी, हो जाते हैं जो अविकारी।
मूलधर्म का सुतप बताया, मोक्ष मार्ग का कारण गाया।।
करे निर्जरा तप से प्राणी, तीर्थंकर की है ये वाणी।
त्याग धर्म सब पाप नशावे, जो निज के गुण भी प्रगटावे।।
धर्माकिंचन सम न कोई, परम ब्रह्म प्रगटावे सोई।
ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, सारे जग में विस्मयकारी।।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।
सारे जग में रहा निराला, शिव पद में पहुँचाने वाला।।

दोहा– **विधि सहित जो व्रत करें, पूजन करें विधान।**
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावे पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दशलक्षण जिन धर्म का, रहे हृदय में वास।**
सम्यक् दर्शन ज्ञान का, नित प्रति होय विकास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

रत्नत्रय पूजा

(स्थापना)

चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का है आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल–नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम् जन्म–जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है न्यारा।। रत्नत्रय रहा... ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए ।। रत्नत्रय रहा... ।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति–भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।। रत्नत्रय रहा... ।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।। रत्नत्रय रहा... ।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।। रत्नत्रय रहा... ।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।। रत्नत्रय रहा... ।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।। रत्नत्रय रहा... ।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।। रत्नत्रय रहा... ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।**
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।

श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।
कर्मों का संवर हो जिससे, आस्रव का हो पूर्ण विनाश।।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।

दोहा

तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

सम्यक् दर्शन पूजा

(स्थापना)

शंकादि वसु दोष हैं, अरु रही मूढ़ता तीन।
छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान।
ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।
सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।
विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।
यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।
हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जग में रहे अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।
अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।
अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।
हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नि में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।

अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।1।।

जिन बच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव–शास्त्र–गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।

देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।3।।

श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।

धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।

छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चिसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।

दोहा– दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदि भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

सम्यक् ज्ञान पूजा

(स्थापना)

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – सोलह कारण पूजा)

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धिवान, करता है जो शांति प्रदान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।

अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि लिए महान, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।।1।।
शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए।।2।।
कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।।3।।
नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन–जन की कल्याणी मानो।।4।।
ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।5।।
लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।
वृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।
बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई।।7।।

दोहा– पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनःपर्यय कैवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्–ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

सम्यक् चारित्र पूजा

(स्थापना)

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र गाया।
सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।
संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।
सम्यक्चारित्र का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – नंदीश्वर)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जन्म–जरा–मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।
भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।
आठों कर्म नाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तेरह विध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(चाल–छन्द)

शुभ सम्यक्चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।

हो पञ्च समीति धारी, त्रय गुप्ति का अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।

मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।

सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि जिससे मानो।।4।।

परिहार विशुद्धि भाई, जिसकी अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावें, अठ वर्ष ज्ञान उपजावें।।5।।

मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
वादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।
उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।

हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।

दोहा– सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक्चारित्र प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सद्दर्शन ज्ञानाचरण, सम्यक् तप के साथ।
जयमाला गाते यहाँ, झुका भाव से माथ।।

(पद्धड़ी छन्द)

शुभ सम्यक् दर्शन ज्ञान सार, चारित्र सुतप का नहीं पार।
जो रत्नात्रय धारे ऋशीष, वह तीन लोक के बने ईश।।

वह पाते हैं शिवपथ प्रधान, जो रत्न धारते यह महान्।
जो रत्नत्रय से हीन जीव, वह पाते जग के दुःख अतीव।।

वह चतुर्गति का भ्रमण जाल, निर्मित करते हैं तीन काल।
जो तीनों लोको के मझार, जनते मरते हैं बार–बार।।

है कर्म बन्ध का यही मूल, ये ही प्राणी की रही भूल।
अन्तर में जागा नहीं बोध, चेतन का कीन्हा नहीं शोध।।

अब जिन गुरुओं का किया दर्श, मन में जगाए हैं बड़ा हर्ष।
आगम से पाया विशद ज्ञान, अब निज आतम का हुआ भान।।

है रत्नत्रय जग में प्रधान, जो धारे तीर्थंकर महान्।
गणधर भी पाते रत्न तीन, फिर हो जाते हैं निजाधीन।।

पद चक्रवर्ती का छोड़ भूप, वा रत्नत्रय हो स्वयं रूप।
शुभ रत्नत्रय है तीर्थ धाम, जिसको करता है जग प्रणाम।।

जो मुक्ति वधू का हृदय हार, अतएव सतत् वह लिए धार।
नर तन जो पाया है विशेष, वह सफल होय व्रत कर विशेष।।

है आर्ष विधि व्रत की प्रदान, जिसका अब करते हैं बखान।
कर एकाशन उपसान तीन, फिर एक भुक्त हो ज्ञान लीन।।

उत्कृष्टातीत यह है प्रधान, अब मध्यम का करते बखान।
आदि में करके दो उपवास फिर, एकाशन करके विकास।।

या आदि अन्त करके उपास, मध्येकासन में करें वास।
अब अन्त विधि जानो विशेष, जिसका वर्णन कीन्हें जिनेश।।

कर आदि अन्त में एक भुक्त, मध्ये अनशन हो राग मुक्त।
अनशन की शक्ति नहीं होय, तो एक भुक्त हो अल्प सोय।।

यह तेरह वर्षों तक प्रधान, या नो त्रय वर्षों कर महान।
फिर उद्यापन करके विधान, या व्रत दूने करना महान।।

फिर अपनी शक्ति को विचार, शुभ करना अनुपम दान चार।
व्रत आराधना के कहे चार, यह व्रत करना शक्ति विचार।

जो चतुर्गति से करे पार, है नर जीवन का यही सार।
मेरी है अन्तिम यही चाह, शिवपद की मुझ को मिले राह।।

दोहा– रत्नत्रय आराधना, करने जोड़े हाथ।
वंदन करते भाव से, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन–ज्ञान–चारित–तपाराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विशद भाव से भावना, भाते योग सम्हार।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए भव से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

क्षमावाणी पूजन

स्थापना

जैन धर्म का मूल बताया, क्षमा धर्म अतिशय शुभकार।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्न कहे हैं मंगलकार।।
मिथ्या मल को तजकर पाना, रत्नत्रय शुभ महति महान्।
ऐसे पावन जैन धर्म का, हृदय में करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र स्वरूप रत्नत्रय जिनधर्माय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(कुसुमलता छंद)

गंगा जल सम उज्ज्वल जल ले, भक्ति का लेकर आधार।
जन्म जरादी दुःख नाश हो, चरणाम्बुज में देते धार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं 1. निशंकितांगाय नमः, 2. निकांक्षितांगाय नमः, 3. निर्विचिकित्सांगाय नमः, 4. निर्मूढ़तागाय नमः, 5. उपगूहनांगाय नमः, 6. स्थितिकरणांगाय नमः, 7. वात्सल्यांगाय नमः, 8. प्रभावनांगाय नमः, 9. व्यंजन व्यंजिताय, 10. अर्थ समग्राय, 11. तदुभय समग्राय, 12. कालाध्ययनाय, 13. उपध्यानोपन्हिताय, 14. विनयलब्धिसहिताय, 15. गुरुवादापन्हवाय, 16. बहु मानोन्मानाय, 17. अहिंसाव्रताय, 18. सत्यव्रताय, 19. अचौर्यव्रताय, 20. ब्रह्मचर्यव्रताय, 21. अपरिग्रहव्रताय, 22. मनोगुप्तये, 23. वचन गुप्तये, 24. कायगुप्तये, 25. ईर्यासमितये, 26. भाषा समितये, 27. एषणा समितये, 28. आदान निक्षेपण समितये, 29. प्रतिष्ठापना समितये नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन में कुंकुम अरु, लिया श्रेष्ठ कर्पूर घिसाय।
भव संताप विनाशन हेतू, दिया चरण में यहाँ चढ़ाय।।

उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ मनोहर शशि सम उज्ज्वल, अक्षत लाए यह शुभकार।
अक्षय निधि परमेश्वर के पद, चढ़ा रहे यह मंगलकार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के यह पुष्प मनोहर, भर कर लाए अनुपम आज।
काम दाह दाहक हे जिनवर, पूजा करता सकल समाज।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन मन भावन शुभ व्यञ्जन, ताजे शुद्ध बनाए नाथ।
क्षुधा रोग अपहरण हेतु यह, चढ़ा रहे हम अपने हाथ।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिवंत अनुपम रत्नों के, दीपक श्रेष्ठ जलाए हैं।
मोह महातम नाशक जिन के, चरणों विशद चढ़ाए हैं।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशाविधि धूप सुगन्धित अनुपम, हर्षित होकर चढ़ा रहे।
कर्मदहन हो नाथ हमारा, भव-भव में दुखकार कहे।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस सुगन्धित फल यह उत्तम, अर्पित करते पद में नाथ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, झुका रहे हम चरणों माथ।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य बनाया यह मनहार।
हो अनर्घ पद प्राप्त नाथ अब, पा जाएँ जीवन का सार।।
उत्तम क्षमा धर्म को पाने, अर्चा करते अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भक्ति भाव से बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शिवपुर वासी हम बनें, पाएँ सुख भरपूर।**
शांतिधारा दे रहे, नाश कर्म हों क्रूर।।

शांतये शांतिधारा

जब तक रवि शशि लोक में, स्थिर है गिरिराज।
तब तक इस संसार में, धर्म रहे जिनराज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- **देव ऋषी सुरपति सभी, इस जगती के ईश।**
जयमाला गाते 'विशद', सदा झुकाएँ शीश।।

(शम्भू छंद)

धर्म वस्तु स्वभाव बताया, क्षमा आदि को धर्म कहा।
परम अहिंसा धर्म श्रेष्ठ शुभ, रत्नत्रय से युक्त रहा।।
जैन धर्म में शंका विरहित, निशंकित गुण रहा विशेष।
भोगों की वाञ्छा के त्यागी, निष्कांक्षित गुण कहे जिनेश।।1।।
साधर्मी से ग्लानी तजना, तृतिय अंग रहा मनहार।
तजना पूर्ण कुदेव मान्यता, है अमूढ़ता मंगलकार।।
धर्मी की गल्ती को ढ़कना, उपगूहन गुण रहा महान्।
जैन धर्म में स्थित करना, स्थितिकरण अंग शुभ जान।।2।।
साधर्मी से प्रीति बढ़ाना, वात्सल्य शुभ अंग कहा।
जैन धर्म करना उद्योतित, यह प्रभावना अंग रहा।।
अष्ट अंग जो पालें भाई, सम्यक् दृष्टि वह गाये।
सम्यक् ज्ञान के भी आगम में, अष्ट अंग शुभ बतलाए।।3।।
शुद्धोच्चारण करके पढ़ना, शब्दाचार कहा भाई।
शुद्ध अर्थ का ग्रहण श्रेष्ठ शुभ, अर्थाचार है सुखदाई।।
शब्द अर्थ युत उभय अंग शुभ, आगम में बतलाया है।
योग्य काल में वाचन करना, कालाचार कहाया है।।4।।
विनय शास्त्र ज्ञानी की करना, कहलाता है विनयाचार।
स्वाध्याय पर्यन्त त्याग का, नियम कहा उपधानाचार।।
नाम लोप न करें गुरु का, अंग अनिह्नवाचार कहा।
शिक्षा पा सौभाग्य मानना, यह बहुमानाचार रहा।।5।।
पंच महाव्रत पंच समीति, तीन गुप्तियाँ कहीं विशेष।
अंग श्रेष्ठ तेरह चारित के, जैनागम में कहे जिनेश।।

छहों काय जीवों की रक्षा, परम अहिंसा व्रत गाया।
हित–मित–प्रिय शुभ वचन बोलना, सत्य महाव्रत कहलाया।।6।।
मन वच तन से चोरी तजना, व्रत अचौर्य जानो भाई।
मैथुन करना त्याग पूर्णतः, ब्रह्मचर्य व्रत सुखदायी।।
मूर्छा भाव त्यागने वाले, कहे अपरिग्रह के धारी।
पंच महाव्रत जैनागम में, यह बतलाए शुभकारी।।7।।
चार हाथ भूमि लख करके, चलना ईर्या समिति कही।
बोल तौलकर कहना भाई, भाषा समीति श्रेष्ठ रही।।
छियालिस दोष टालकर भोजन, कही ऐषणा समिति महान।
लेना–देना देख शोधकर, वस्तु आदान निक्षेपण जान।।8।।
मल अरु मूत्र एकांत में क्षेपण, समिति कही उत्सर्ग विशेष।
पंच समीति का आगम में, दिया गया है शुभ उपदेश।।
मन की चेष्टा पूर्ण रोकना, मन गुप्ति यह कही महान।
वचन प्रक्रिया का निरोध शुभ, वचन गुप्ति कहलाए प्रधान।।9।।
तन की स्थिरता को भाई, काय गुप्ति शुभ कहा गया।
गुप्ती धारी साधु पाते, जीवन में उत्कर्ष नया।
क्षमावाणी या क्षमा धर्म के, उन्तिस अंग कहे जिनराज।
शिवपुर की हो चाह भव्य तो, क्षमा धार लो सकल समाज।।10।।

दोहा– रत्नत्रय को पूर्ण कर, क्षमा–क्षमा उर धार।
चैत, माघ, भादव सुदी, वर्ष में तीनों बार।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– क्षमावाणी है औषधि, आतम की हितकार।
'विशद' क्षमाधारी हुए, भव सिन्धु से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

रक्षाबन्धन पर्व पूजा

स्थापना

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनि अनगारी।
यज्ञ किए मंत्री बलि आदिक, जो उपसर्ग किए भारी।।
भक्ती से प्रेरित होकर हम, निज उर में करते आह्वान।
विष्णु कुमार मुनिवर के द्वारा, किया गया उपसर्ग निदान।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन, हुआ जगत में मंगलकार।
वात्सल्य का पर्व कहाया, धर्म सुरक्षा का त्यौहार।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शम्भू छंद

हमने अनादि से कर्मों के, बन्धन करके बहु दुःख सहे।
हम राग द्वेष की परिणति से, तीनों लोको में भटक रहे।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव भोगों की रही कामना, जिससे जग में भ्रमण किया।
भव संताप मिटाने का न, हमने अब तक यतन किया।।
नाश होय संसार ताप मम्, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्व.स्वाहा।

विषय कषायों में रत रहकर, निज पद को न पाया है।
क्षण भंगुर, जीवन पाकर के, तीनों लोक भ्रमाया है।।
अक्षय पद पाने को अभिनव, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

मोह महामद को पीकर के, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
काम बाण से बिद्ध हुऐ हम, अब तक चेत न पाए हैं।।
काम वासना नाश हेतु यह, पुष्पित पुष्प चढ़ातें हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि काम-बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हम विषय भोग की ज्वाला में, सदियों से जलते आए हैं।
आशाएँ पूर्ण न हो पाती, हमने कई जन्म गवाएँ हैं।।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, अतिशय नैवेद्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्या जग में, जिसमें जग जीव भ्रमाए हैं।
अतिशय प्रकाश का पुञ्ज जीव, अब तक समझ न पाए हैं।।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह मनहर दीप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोहान्धकार विना. दीपं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानावरणादि कर्मों ने, इस जग में जाल बिछाया है।
हम फँसे अनादि से उसमें, छुटकारा न मिल पाया है।।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नि में धूप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पुण्य पाप का फल पाकर, हम उसमें रमते आए हैं।
हम भटक रहे है निज पद से, न अक्षय फल को पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, चरणों फल सरस चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शाश्वत है जीव अनादि से, हम अब तक जान न पाए हैं।
तन में चेतन का भाव जगा, उसको अपनाते आए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतु, अतिशय यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– जलधारा देते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
झुका रहे हम भाव से, चरण कमल में माथ।। *शान्तये शांतिधारा.....*

करते हैं पुष्पाञ्जलि, लेकर पुष्पित फूल।
गुरु भक्ती की भावना, बनी रहे अनुकूल।। *इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार।।

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्।।
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष।।
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान।।
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार।।
वाद-विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हें खड्ग प्रहार।।

कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश।।
तभी मंत्रियों को मुंह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।
कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।।
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।।
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।।
पुष्पदन्त क्षुल्लक को भेजा, विष्णु कुमार मुनि के पास।
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास।।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने मांगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।
वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर !, हमसे गलती हुई महान्।।

विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय-जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।
नशते ही उपसर्ग सभी ने, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।
रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।
साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।
श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।
मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहें हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर।।
रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णुकुमार मुनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

दीपावली पूजा

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि–पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(नोट– समय हो तो जिनवाणी से पूरी पूजा विधि पढ़ें।)

देव–शास्त्र–गुरु अर्घ्य

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवता पूजन का अर्घ्य

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्र निहू–तैं, थुति पूरी न करी है।।
श्रावक सेवक जान के हो, जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भवतारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

जल–फल वसु सजि हिम–थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नोट– भगवान महावीर की पूजन पेज.... से करना चाहें तो करें।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम लागत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर की वाणी शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्यं समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजन

(स्थापना)

श्री है पूज्य लोक में भाई, अन्तरंग बहिरंग महान्।
केवलज्ञान लक्ष्मी अनुपम, करे जगत का जो कल्याण।।
लोकालोक दिखाई देता, जिसमें भाई अणु समान।
साधुगण भी जिनको ध्याते, हम करते उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

मन का मैल मिटा न मेरा, नश्वर तन यह धोया है।
निज वैभव पाने की आशा, में जीवन यह खोया है।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन मन शीतल किया मगर, चेतन शीतल न हो पाया।
संसार ताप के नाश हेतु, जग मृग तृष्णा में भटकाया।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम लाख-चौरासी योनि में, यूँ बार-बार भटकाए हैं।
कर्मों के बन्धन पड़े विकट, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काया की माया में उलझे, हम सारे जग में भटकाए।
भोगों की आशा को मन से, हम आज मिटाने को आए।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर काया की पुष्टि को, हमने कई व्यंजन खाए हैं।
जीवन पर जीवन बिता दिए, संतुष्ट नहीं हो पाए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर का तिमिर मिटाने को, सब नश्वर द्वीप जलाते हैं।
अन्तर का तिमिर मिटाने को, नर धर्म शरण में जाते हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते रहे मगर, यह कर्म नहीं जल पाए हैं।
चेतन की याद भुलाकर के, हम बार-बार पछताए हैं।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाये हमने कई मगर, चेतन फल का न रस पाया।
अब शक्ति पाने चेतन की, फल यह चरणों में ले आया।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति के कारण, ना पद अनर्घ हमने पाया।
शुभ अर्घ्य बनाकर चरणों में, यह दास चढ़ाने को लाया।।
यह जीवन सफल बनाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
अब मुक्ति पथ पाने प्रभुवर !, हम चरणों में सिर नाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा केवलज्ञानलक्ष्मी ! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **ज्ञान लक्ष्मी पूजते, पाने केवलज्ञान।**
शांति धारा दे रहे, होय जगत कल्याण।। शान्त्ये शांतिधारा

सुर तरु के वर पुष्प ले, पूज रहे हम आज।
ज्ञान महालक्ष्मी विशद, देय धर्म साम्राज्य।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मंत्र – ॐ श्रीं ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यैः नमः।

इसके बाद बहियों पर सांथिया बनायें जैसा नीचे बना है और श्री को पर्वताकार लिखें।

5

24 **2**

3

नई बही के पहले पेज पर सबसे ऊपर लिखें :–

श्री ऋषभाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतमगणधराय नमः श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै नमः, श्री लक्ष्म्यै नमः, श्री वर्द्धताम लिखें फिर नीचे श्री का पर्वताकार

लेखन करें। बहियों के ऊपर मीठा, पान, हल्दी आदि सामान रख दें। पश्चात्– श्री वर्धमानाय नमः मम सर्व सिद्धिर्भवतु, काम मंगल्योत्सवाः सन्तु पुण्य वर्धताम् धनं वर्धताम् पढ़कर बही खातों पर अर्घ्यं चढ़ायें। इसके बाद मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें

श्री लीलायतनं माहीकुल गृहं कीर्ति प्रमोदास्पदं,
वाग्देवी रति केतनं जय रमा क्रीडा निधानं महत।
सः स्यात्सर्वमहोत्सवैक भवनं यः प्रार्थितार्थ प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्प पाद प दलच्छाया जिनाङ्घ्रि द्वयम्।।

श्लोक पढ़कर सांथियाँ बनावें। पश्चात् लक्ष्मी पूजन करें और लक्ष्मीस्तोत्र पुण्य शांति विसर्जन करें।

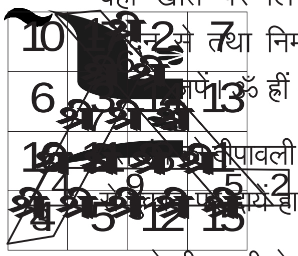

इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बही खाते पर लिखें, हल्दी, केशर या [illegible] से तथा निम्न मंत्र की एक माला [illegible] जपें। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

9	16	2	7
6	3	13	12
15	10	8	1
4	5	11	14

[illegible] दीपावली के दिन केशर या सिन्दूर [illegible] हाथ पर बही पर लिखें।

इसको दीपावली के दिन दुकान के अन्दर दीवार पर सामने लिखें, मंगल स्थापना के दाहिने ओर।

दोनों यंत्रों की अष्ट द्रव्यों से पूजा करें।

जयमाला

दोहा– **ज्ञान महालक्ष्मी कही, जग में पूज्य त्रिकाल।**
शिव सुख पाने के लिए, गाते हम जयमाल।।